पर्यावरण अध्ययन

देखें, करें और सीखें

कक्षा 3 के लिए पाठ्यपुस्तक

दलजीत गुप्ता
मंजु जैन
स्वर्णा गुप्ता

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
फरवरी 2002
माघ 1923

ISBN 81-7450-010-3

PD 20T+150T DRH

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्लू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110 016	बैंगलूर 560 085	अहमदाबाद 380 014	24 परगना 743 179

प्रकाशन सहयोग

संपादन : दयाराम हरितश
उत्पादन : विनोद देवीकर
मुकेश कुमार गौड़
सज्जा : डी.के. शेन्डे
आवरण : सीमा जबीं हुसैन

रु. 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित ।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसैट 132, मुहम्मदपुर, भीकाजी कामा पलेस, नई दिल्ली 110066 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसामग्री का निर्माण एक सतत् प्रक्रिया है। समय-समय पर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विकास एवं बदलती आवश्यकताओं के कारण विषयवस्तु में परिवर्तन आता रहता है। अतः पाठ्यक्रम में नवीनीकरण आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के क्रियान्वयन के पश्चात् प्राप्त अनुभवों के आधार पर उल्लिखित आकांक्षाओं की अधिक सार्थक पूर्ति की दिशा में एक प्रयास है।

प्राथमिक स्तर के बच्चों के विकासात्मक विशेषताओं का विश्लेषण स्पष्ट करता है कि इस आयु-वर्ग के बच्चे अपने परिवेश को समग्र रूप से देखते हैं, भागों में नहीं। पिछले दशक में किए गए शोध अध्ययनों में प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम का बोझ इस अवस्था के बच्चों की मानसिक आयु से ज्यादा पाया गया। विभिन्न तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक स्तर के परिवेश अध्ययन के पाठ्यक्रम में भी बदलाव की सिफारिशें की गई हैं। इन सिफारिशों में कक्षा 1 और 2 में हिंदी, गणित विषयों के साथ पर्यावरण संबंधी क्रियाकलापों के समेकीकरण की संस्तुति की गई। कक्षा तीन से पाँच में पर्यावरण अध्ययन को एक स्वतंत्र विषय के रूप में रखा गया है। इस क्रम में पर्यावरण अध्ययन विषय के पाठ्यक्रम को समेकित अथवा संगठित रूप में तैयार किया गया है जिसमें सामाजिक अध्ययन (सामाजिक परिवेश) और विज्ञान (प्राकृतिक परिवेश) विषयों को समग्र रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन सिफारिशों पर आधारित पर्यावरण अध्ययन विषय के अंतर्गत कक्षा 3 के लिए तैयार की गई यह पाठ्यपुस्तक-एवं-पाठ्यक्रिया पुस्तक **देखें, करें और सीखें** इस शृंखला की पहली कड़ी है।

बच्चों का परिवेश एक-सा नहीं होता। भिन्न-भिन्न जगहों पर रहने के कारण सामाजिक, भौतिक एवं प्राकृतिक भिन्नताएँ उनके परिवेश में स्वाभाविक हैं। इसीलिए किसी भी पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु सभी बच्चों के लिए पूर्णतः उपयुक्त नहीं हो सकती। इन सीमाओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पाठ्यसामग्री में पाठ्यवस्तु को साधन के रूप में प्रयुक्त किया है। साथ ही पाठ्यवस्तु का केंद्र-बिंदु प्रक्रिया एवं क्रियाकलाप है, अतः प्रयुक्त पाठ्यवस्तु मात्र उदाहरण है, अंत नहीं है। प्राथमिक स्तर के बच्चे विविधता चाहते है और बच्चों में रुचि उत्पन्न करने तथा उसे बनाए रखने के लिए प्रस्तुत विषयवस्तु का प्रस्तुतिकरण भिन्न-भिन्न तरीकों से किया गया है, जैसे – कहीं संवाद, कहीं अध्यापक से बातचीत करके, कहीं कक्षा-कक्ष के बाहर ले जाकर आदि। बच्चों में अवलोकन और स्वतंत्र चिंतन कौशलों को विकसित करने के लिए कहीं-कहीं विषयवस्तु को चित्रों के माध्यम से भी आगे बढ़ाया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक केवल मात्र पाठ्यपुस्तक नहीं है। विषयवस्तु को अनुभव आधारित तथा मानसिक प्रक्रियाओं के विकास के लिए पुस्तक को पाठ्यपुस्तक-एवं-क्रियाकलाप पुस्तक के रूप में विकसित किया है। विषयवस्तु के साथ-साथ प्रत्येक पाठ के अंत में **हमने क्या सीखा** दिया गया है जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं जो कि बच्चे को क्रियाशील बनाए रखने के साथ-साथ सजृनात्मक विकास में भी सहायक होंगे। अध्यापक को पढ़ने-पढ़ाने की स्वतंत्रता देने के साथ-साथ कुछ शिक्षण-संकेत भी प्रत्येक इकाई के प्रारंभ में दिए गए हैं। आशा है वह उनके लिए उपयोगी होंगे।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रारूप प्रारंभिक शिक्षा विभाग द्वारा तैयार किया गया है। इस पुस्तक को इस रूप में लाने के लिए देश के विभिन्न भागों से आए अध्यापकों, विषय विशेषज्ञों, शिक्षण विशेषज्ञों, भाषा विशेषज्ञों ने समय-समय पर आयोजित कार्यशालाओं, संगोष्ठियों में भाग लिया और उनके द्वारा दिए गए सुझावों से पुस्तक को और अधिक परिमार्जित एवं परिष्कृत किया गया। मैं इस पुस्तक के प्रणयन में योगदान देने वाले प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सदस्यों और अन्य आमंत्रित विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आशा है कि यह पाठ्यसामग्री बच्चों के लिए रुचिकर एवं लाभदायक सिद्ध होगी। इस पुस्तक के लिए सभी प्रकार की समालोचनाओं एवं सुझावों का स्वागत है। पुस्तक के पुनः संपादन के समय परिषद् प्राप्त सुझावों पर विशेष ध्यान देगी।

जगमोहन सिंह राजपूत
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

फरवरी 2002
नई दिल्ली

दो शब्द अध्यापक बंधुओं से

पर्यावरण अध्ययन विषय के अंतर्गत कक्षा तीन के लिए तैयार की गई नई पाठ्यपुस्तक **देखें, करें और सीखें** इस श्रृंखला की पहली पुस्तक है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास से जुड़े हुए कुछ प्रमुख बिंदुओं का उल्लेख नीचे किया गया है।

यह पाठ्यपुस्तक क्यों लिखी गई?

प्राथमिक स्तर के बच्चों की विकासात्मक विशेषताओं का विश्लेषण स्पष्ट करता है कि इस आयु-वर्ग के बच्चे अपने परिवेश को समग्र रूप में देखते है, भागों में नहीं। पिछले दशक में किए गए शोध अध्ययनों में इस स्तर के पाठ्यक्रम का बोझ भी ज्यादा पाया गया। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम पर पुनः विचार किया गया और अब इस विषय के पाठ्यक्रम को संगठित रूप में तैयार किया गया है। पहली और दूसरी कक्षाओं में इसके मुख्य बिंदुओं को भाषा, गणित तथा स्वस्थ एवं उत्पादक जीवन की कला-विषयों में समेकित किया गया है और कक्षा 3 से कक्षा 5 तक पर्यावरण अध्ययन एक अलग विषय के रूप में रखा गया है। इन कक्षाओं के लिए नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण अब इस विषय की पुनः कथित परिभाषा को आधार बनाकर किया जा रहा है। **देखें, करें और सीखें** इस श्रृंखला की पहली पाठ्यपुस्तक है।

पुरानी पाठ्यपुस्तक से कैसे भिन्न?

- हम सभी जानते हैं कि हमारे आस-पास का परिवेश सभी जगह एक-सा नहीं है। प्राकृतिक भिन्नताओं के कारण अलग-अलग भागों का मौसम, वहाँ की उपज, लोगों का रहन-सहन, खान-पान आदि भी भिन्न-भिन्न है। इसलिए किसी भी पाठ्यपुस्तक की पाठ्यवस्तु अलग-अलग जगह रहने वाले बच्चों के लिए बहुत ज्यादा उपयुक्त नहीं हो सकती। वातावरण में भिन्नताओं के कारण इस पाठ्यपुस्तक में प्रक्रियाओं एवं क्रियाकलापों को प्रमुख स्थान दिया गया है, पाठ्यवस्तु को एक साधन और उदाहरण के रूप में प्रयोग किया गया है। अतः आपको पाठ्यवस्तु बच्चों के परिवेश के अनुरूप ही जुटानी होगी। यह पाठ्यपुस्तक आपके लिए एक 'सहायिका' है 'अंत' नहीं'।
- इस पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु का चयन, उसका स्तर एवं उसका प्रस्तुतीकरण भी भिन्न है। इस आयु-वर्ग के बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को ध्यान में रखकर इसका चयन किया गया है।
- पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण में प्रक्रियाओं एवं कौशल-विकास को महत्त्व दिया गया है। इनके विकास के लिए बच्चे को विभिन्न अनुभव जैसे क्रियाकलापों (सामूहिक एवं व्यक्तिगत), मूर्त वातावरण का अनुभव, स्वयं के अनुभवों, चित्रों एवं मॉडलों का उपयोग (अगर वास्तविक वस्तु उपलब्ध न हो तो) आदि देने का प्रयत्न किया गया है। इस तरह वह अपने परिवेश के भिन्न-भिन्न घटकों को अपने साथियों के साथ मिलजुल कर अथवा अपने आप देखेगा, खोजेगा, करेगा और सीखेगा।

- इस आयु के बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए विविधता जरूरी है। अतः बच्चों में रुचि उत्पन्न करने तथा उसे बनाए रखने के लिए विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण में भिन्न-भिन्न प्रकार के तरीकों का उपयोग किया गया है, जैसे – कही संवाद से, कहीं बच्चों को स्वयं बुलवाकर, कहीं अध्यापक से बातचीत करवाकर, अथवा आपस में बातचीत करवाकर, या कक्षा-कक्ष के बाहर ले जाकर। बहुत जगह चित्रों द्वारा पाठ्यवस्तु को आगे बढ़ाया गया है। ऐसा बच्चों में अवलोकन और स्वतंत्र चिंतन के कौशलों को विकसित करने के लिए किया गया है।

आपके लिए क्या भिन्न?

इस पाठ्यपुस्तक को देखकर हो सकता है आपको अपना काम कठिन लगे, परंतु जब आप इस पुस्तक का उपयोग शुरू करेंगे तो आप पाएंगे कि आपका काम आसान होने के साथ-साथ बहुत रुचिकर भी हो गया है।

- अब आपको ज्यादा समय पाठ्यपुस्तक पढ़ानी नहीं है बल्कि बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में सहायता करनी है।
- पाठ्यपुस्तक में बहुत-सी क्रियाएँ (क्रियाकलाप) बच्चों से करवाने के लिए दी गई हैं। प्रत्येक बच्चे को उन क्रियाओं में भाग लेने का अवसर दें। क्रियाओं में भाग लेते समय जहाँ बच्चे को कठिनाई हो, उसकी उसी समय सहायता करना बहुत ज़रूरी होगा।
- जहाँ तक हो सके पाठ्यपुस्तक में दी पाठ्यवस्तु और क्रियाओं से अपेक्षित उपलब्धियों को बच्चों के परिवेश से जोड़कर सिखाएँ। दी गई क्रियाओं के अतिरिक्त आप इसी स्तर के अन्य क्रियाकलाप भी करवा सकते हैं।
- प्रत्येक बच्चा कितना सीख पाया, कहाँ उसे कठिनाई आई, ये तो आप शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान किसी भी समय जान सकते हैं। आप से यह अपेक्षा की जाती है कि प्रत्येक बच्चे को उसकी आवश्यकता के अनुसार समय-समय पर सहायता देते रहें।
- प्रत्येक इकाई से पहले एक संक्षिप्त संकेत-लेख दिया गया है। इसमें इकाई को पाठ्यपुस्तक में देने के कारणों के बाद बच्चों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन और कौशल विकास के साथ-साथ आपके लिए भी कुछ सुझाव दिए गए हैं। परंतु ये सुझाव केवल संकेत-मात्र हैं। आप अपनी स्वतंत्र सोच एवं अनुभव आधारित तरीकों से प्रत्येक पाठ को पढ़ा सकते हैं।

हम सब जानते हैं कि प्रत्येक अध्यापक अपने आप में अद्वितीय होता है। उसके पास हर बच्चे के गुणों को पनपने में सहायता करने के लिए विभिन्न तरीकों अथवा किसी भी कठिनाई का हल ढूँढ़ने की इच्छा अवश्य होती है। मनुष्य का यह गुण (समस्या का हल ढूँढ़ना) ही तो उसकी अमूल्य निधि है। यही गुण प्रत्येक बच्चे में पनपने में सहायता करना ही पर्यावरण अध्ययन का मूल उद्देश्य है। ऐसा करके हम हर बच्चे को अपने परिवेश के प्रति सजग और संवेदनशील बनाने में सहायता कर सकते हैं।

पांडुलिपि समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1. प्रो. सुमन पी. करंदीकर
   999 बी, नियोजन, फाटक बंग
   नवी पेठ, पुणे
2. डॉ एच.पी. राज गुरु
   ई/8/ टी.एच. 27, आकाश गंगा कालोनी
   शाहपुरा फेज -2, भोपाल
3. डॉ. टी.के. श्रीवास्तव
   निदेशक, जनकल्याण आश्रम, ग्राम चांदापुर
   शांहजहांपुर, उत्तर प्रदेश
4. डॉ ललित पांड्ये
   उत्तराखण्ड सेवा निधि, पर्यावरण सेवा संस्थान
   अल्मोड़ा, उत्तरांचल
5. प्रो. ए.बी. सक्सेना
   प्राचार्य, क्षेत्रीय शैक्षिक संस्थान,
   अजमेर
6. सुश्री अंशु श्रीवास्तव
   पूर्व-प्रधानाध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय,
   डी.एम.स्कूल, क्षेत्रीय शैक्षिक संस्थान, भोपाल
7. श्रीमती संयुक्ता लूदरा
   सी-20 के, गंगोत्री अपार्टमेंट, अलकनन्दा
   नई दिल्ली
8. श्री अशोक कुमार, टी.जी.टी. (नेचुरल साइंस)
   राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय
   ए ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली
9. श्री अशोक कुमार सेठ, प्रवक्ता (जीव विज्ञान)
   राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय
   विवेक विहार, दिल्ली
10. डॉ. कृष्ण कुमार मदान, प्रवक्ता (रसायन शास्त्र)
    राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय नं. 1
    झील कुरंजा, दिल्ली
11. श्री राजीव कुमार विश्नोई, टी.जी.टी. (नेचुरल साइंस)
    राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय
    सूरजमल बिहार, दिल्ली
12. श्रीमती बलजीत कौर
    अध्यापिका, निगम प्राथमिक विद्यालय
    लाडो सराय, महरौली, नई दिल्ली
13. श्रीमती रश्मि अग्रवाल
    मॉर्डन स्कूल, वसंत विहार
    नई दिल्ली
14. डॉ. डी.पी. शर्मा, निदेशक
    आई.आर.ई.पी ए-134,
    आनंद विहार, दिल्ली
15. श्रीमती रचना जैन
    प्राइमरी टीचर, केंद्रीय विद्यालय, जे.एन.यू.
    एन.सी.ई.आर.टी कैम्पस, नई दिल्ली
16. श्रीमती बन्दना चौधरी
    रामजस स्कूल, सैक्टर 4, आर.के.पुरम
    नई दिल्ली
17. श्रीमती रागिनी श्रीवास्तव
    भारतीय विद्या भवन, मेहता विद्यालय
    कस्तूरबा गाँधी मार्ग, नई दिल्ली
18. डॉ. एस.सी. चौहान
    प्रवक्ता, डी.ई.जी.एस.एन.
    एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

एन.सी.ई.आर.टी., प्रारंभिक शिक्षा विभाग

1. प्रो. के.के. वशिष्ठ
2. डॉ दलजीत गुप्ता
3. डॉ मंजु जैन **(संयोजक)**
4. डॉ स्वर्णा गुप्ता
5. श्रीमती रोमिला सोनी

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता**,
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में
व्यक्ति की गरिमा और [2][राष्ट्र की एकता
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए
दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई० **को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

51 क. **मूल कर्तव्य** – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय मे संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले।

विषय-सूची

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं । जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा । क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है ।

इकाई एक

मेरा परिचय

अध्यापक के लिए संकेत

यह इकाई क्यों

हम सब जानते हैं कि बच्चा पर्यावरण का एक प्रमुख हिस्सा है, अतः उसे अपने शरीर की जानकारी के साथ-साथ उसकी देखभाल के तरीके भी जानना जरूरी है। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उसमें कुछ सामाजिक मूल्यों, दूसरे जीवधारियों से उसके संबंधों और उनके प्रति संवेदनशीलता विकसित करना भी ज़रूरी है। इकाई 'मेरा परिचय' की पाठ्यवस्तु का चयन इन बातों को ध्यान में रखकर किया गया है।

इस इकाई के शिक्षण-अधिगम के बाद बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि बच्चे :

- अपने शरीर के बाह्यय अंगों की पहचान और उनके कार्यों के साथ-साथ सभी अंगों के समान महत्त्व को समझ सकेंगे।
- अच्छी आदतें एवं जीवन मूल्यों के विकास के साथ-साथ अच्छे संस्कारों की सराहना कर सकेंगे।
- अच्छे स्वास्थ्य के लिए नियमित दिनचर्या एवं सफ़ाई के महत्त्व को समझेंगे।
- अपने आस-पास के परिवेश में जीवधारियों के प्रति संवेदनशील/लगाव, उनकी देखभाल के तरीके एवं सौंदर्य-बोध विकसित कर पाएंगे।

इस इकाई में है क्या

इस इकाई में तीन पाठ हैं – 'कौन कितना जरूरी', 'मेरा एक दिन', और 'मैं और मेरे मित्र'। प्रस्तुतीकरण में विविधता बनाए रखने के लिए पाठों में दी विषयवस्तु को अलग-अलग तरह से प्रस्तुत किया है। 'कौन कितना जरूरी' पाठ को संवाद के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। 'मेरा एक दिन' में एक दिन की दिनचर्या बच्चों के सामने उदाहरण-रूप प्रस्तुत की गई है। 'मैं और मेरे मित्र' पाठ में बच्चे के सामने एक परिस्थिति रखकर परिवेश के जीवधारियों में उनमें समानता तथा विभिन्नता बताई गई है।

आपकी भूमिका क्या है

- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आपको प्रत्येक बच्चे को जोड़ना है।
- बच्चे चित्रों और संकेतों के द्वारा भी अपनी बात कह सकते हैं। अतः उन्हें बताने

का अवसर दें। प्रत्येक बच्चे को अवलोकन, वर्गीकरण एवं प्रयोग जैसी प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

- 'कौन कितना जरूरी' पाठ के शिक्षण के समय सभी बच्चों को संवाद में किसी न किसी प्रकार से क्रियाकलापों में जोड़ें जैसे अभिनय करना, पात्र-भूमिका करवाना, अवलोकन करवाना, चित्र बनवाना, पहचान करवाना आदि।

- इकाई में कुछ ऐसे क्रियाकलाप दिए गए हैं जिनके द्वारा बच्चों की सृजनात्मक चिंतन को बढ़ावा मिलता है। अतः इनके मूल्यांकन के समय सभी सम्भावित सृजनात्मक उत्तरों की प्रशंसा कीजिए।

- बच्चों में अच्छी आदतों एवं जीवन मूल्यों के विकास पर निरन्तर ध्यान दीजिए। इसके लिए कुछ तरीके आप प्रर्दशन के द्वारा भी बताएं जैसे अच्छी तरह हाथ धोने का तरीका, दाँत साफ़ करने का सही तरीका आदि।

- बच्चों को उनके आस-पास के परिवेश के पेड़-पौधों एवं पशु-पक्षी का अवलोकन करवाइए। अतः सभी बच्चों को अपने अनुभव बताने का मौका दें।

- तीनों पाठों की विषयवस्तु बच्चे के समक्ष समग्र रूप में प्रस्तुत कीजिए। उदाहरण अगर 'मेरा एक दिन' पाठ पढ़ाया जा रहा है तो शरीर के अंगों के साथ जोड़ कर चर्चा कीजिए। इसी तरह अगर 'मैं और मेरे मित्र' पाठ की चर्चा हो रही है तो अन्य जीवधारियों के शरीर के भागों को भी बच्चों को बताइए।

- समय-समय पर बच्चों से उनकी आदतों के बारे में चर्चा करते रहिए। ऐसा करने से आपको यह पता रहेगा कि बच्चों के व्यवहार में कितना बदलाव आया है। एक तरह से यह मूल्यांकन की प्रक्रिया है।

पाठ 1

कौन कितना ज़रूरी
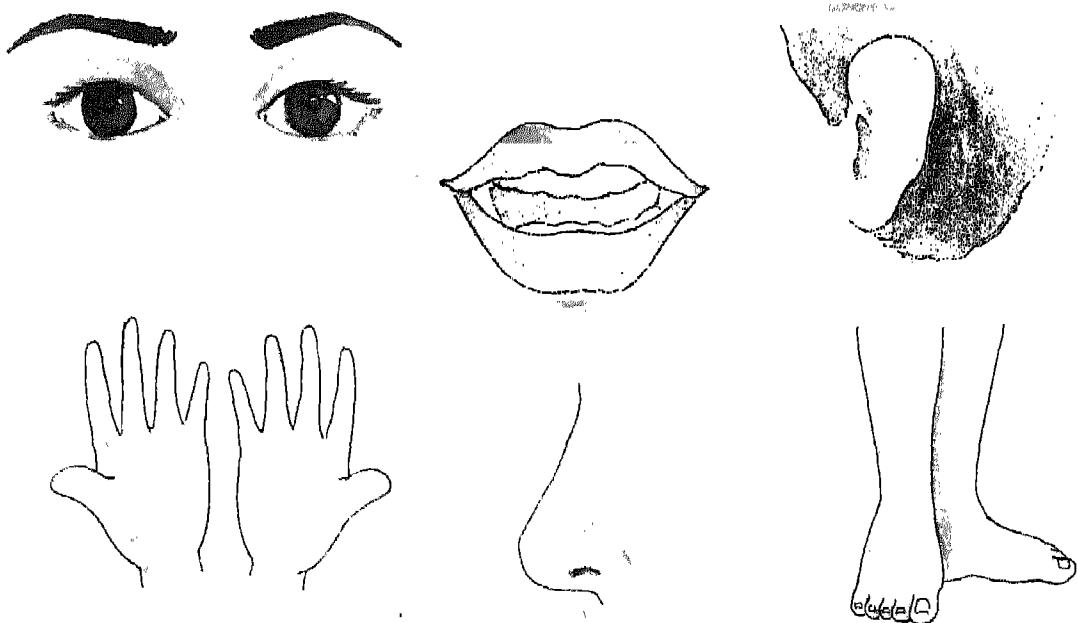
ऊपर दिए गए चित्रों को पहचानिए और उनके नाम बताइए।

एक दिन सुबह-सुबह अचानक इन सब में बहस शुरू हो गई।

शोर सुनकर दादा-मुँह बोले : अरे भाई क्या हुआ? मुझे भी तो पता चले, तुम सब क्यों लड़ रहे हो ?

सब एक साथ बोलने लगे : दादा-दादा, मैं ही मनुष्य के शरीर का सबसे ज़रूरी अंग हूँ।

दादा : देखो भाई, सब एक साथ बोलोगे तो मुझे कुछ भी समझ में नहीं आएगा। बारी-बारी से बताओ, तुम सब ऐसा क्यों सोचते हो।

आँख : दादा, मैं बताऊँ ?

दादा : हाँ-हाँ, तुम ही शुरू करो।

आँख : दादा मैं बहुत काम की चीज़ हूँ। मनुष्य मेरी सहायता से हर चीज़ को देखकर पहचानता है। सुंदर चीज़ों को देखकर खुश होता है। इतना ही नहीं, दुखी होने पर आँसू भी बहाता है। इससे उसका दुख कम हो जाता है।
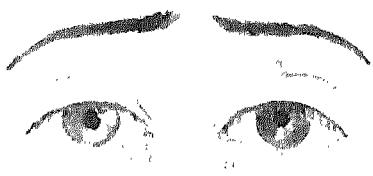
जानते हो, मैं तो बोल भी सकती हूँ।

दादा ने पूछा : वह कैसे ?

दिए गए मेरे ये तीन रूपों को देखो और अपने आप समझो।

अरे, इशारे से तो मैं कितनी ही बातें कह देती हूँ ।

मैं जब अपनी पलकें बंद कर लेती हूँ तो मनुष्य आराम महसूस करता है।

आँख की बातें सुनकर नाक को जोश आया।

वह बोल पड़ी : हाँ-हाँ, मैं जानती हूँ तुम बहुत काम की चीज़ हो। पर बहन, मैं भी, जो तुम्हारी पड़ोसन हूँ, तुम से किसी बात में कम नहीं हूँ।
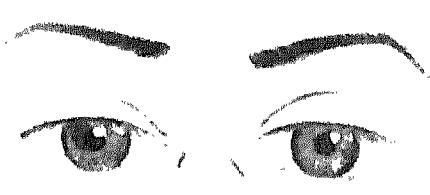
दादा : वह कैसे?

नाक : दादा, मैं तो बहुत ही जरूरी हूँ! मेरे द्वारा ही तो मनुष्य साँस लेता है। बिना साँस लिए तो वह जीवित ही नहीं रह सकता।

दादा : भाई, बात तो तुमने बहुत काम की कही है।

नाक : यही नहीं दादा, अगर मैं न होती तो मनुष्य भिन्न-भिन्न चीज़ों की खुशबू कैसे ले पाता ? सुंदर-सुंदर फूलों और खाने की वस्तुओं का मजा तो उनकी खुशबू से ही लिया जा सकता है। क्यों मेरी पड़ोसन, मानती हो न !

कान अब तक चुपचाप आँख और नाक की बातें सुन रहे थे। अब तो उनकी सुनने की शक्ति भी समाप्त हो रही थी।

तभी वे बोल पड़े : कोई हमारी भी तो बात सुनो। हम भी तो तुम्हारे ही आस-पास हैं।

दादा : हाँ भाई ! अब तुम भी बताओ, तुम्हारा क्या काम है ?

कान : दादा, आँख और नाक की बातें भी तो आपने हमारे द्वारा ही सुनीं हैं। सब लोग हमारे द्वारा ही अच्छी-अच्छी बातें सुनते हैं।

मधुर संगीत का आनंद भी सुनकर ही लेते हैं।

कई बार जिन वस्तुओं को आँख देख नहीं पाती, हम उनकी आवाज से उन्हें पहचान लेते हैं, जैसे, मोड़ पर आती हुई गाड़ी। इस तरह आवाज़ सुनकर मनुष्य उससे अपना बचाव कर सकता है।

अब तो हाथ भी बहुत बेचैन हो रहे थे अपनी बात कहने के लिए। उन्होंने तो एक लंबी सूची ही बना डाली अपने कामों की।

दिए गए चित्रों में दिखाए गए हाथों के काम अपनी कॉपी में लिखिए।

जरा सोचिए, हाथ के और क्या-क्या काम हो सकते हैं? खाली जगह में चित्र बनाइए। नीचे उस कार्य का नाम भी लिखिए।

____________________ ____________________
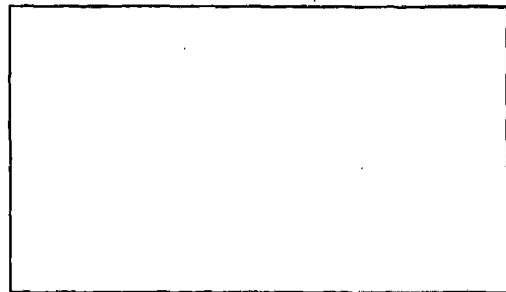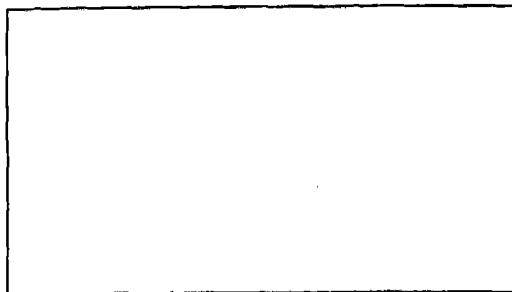
इतना सुनकर तो पाँव भी भड़क उठे।

वह बोले : तुम सब अब हमारी बात भी कान खोल कर सुन लो। हमारे बिना तो मनुष्य एक जगह से दूसरी जगह जा ही नहीं पाएगा। सोचो ! हमारे बिना मनुष्य और क्या-क्या काम नहीं कर पाएगा ?

दादा : बस-बस, अब बहुत तारीफ़ें हो गईं तुम सबकी। क्या तुमने कभी सोचा है अगर मैं नहीं होता तो तुम सबका क्या होता ? जरा बैठो, सोचो और इन चित्रों को देखकर समझो।
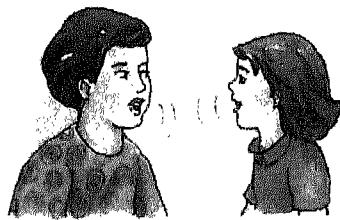
अब आया कुछ समझ में ! हम सभी, मनुष्य के लिए जरूरी हैं। एक दूसरे के बिना हम अपना-अपना काम ठीक से नहीं कर सकते। हम एक दूसरे के मित्र हैं, शत्रु नहीं।

सब मिलकर बोले : दादा, आप बिलकुल ठीक कहते हैं।

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. शरीर के किन्हीं पाँच अंगों के नाम बताइए।
2. आँख और नाक के दो-दो कार्य बताइए।
3. पैर हमारी किस-किस काम में मदद करते हैं ?
4. मुँह के कोई दो कार्य बताइए।
5. ऐसा क्या काम है जो मुँह हाथों की सहायता के बिना नहीं कर सकता।
6. हमारे शरीर में कौन-कौन से अंग दो-दो हैं ?

II लिखित

1. चित्र बनाकर प्रत्येक अंग का कोई एक कार्य लिखिए :
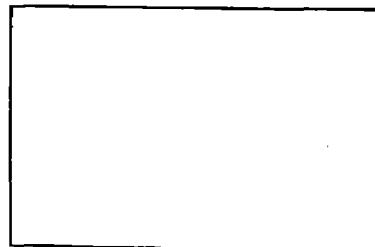
अंग	चित्र	कार्य
क. मुँह		....
ख. नाक		....
ग. कान		....
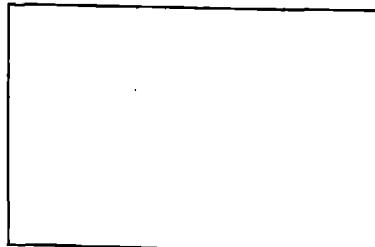
2. गोलों में लिखिए :
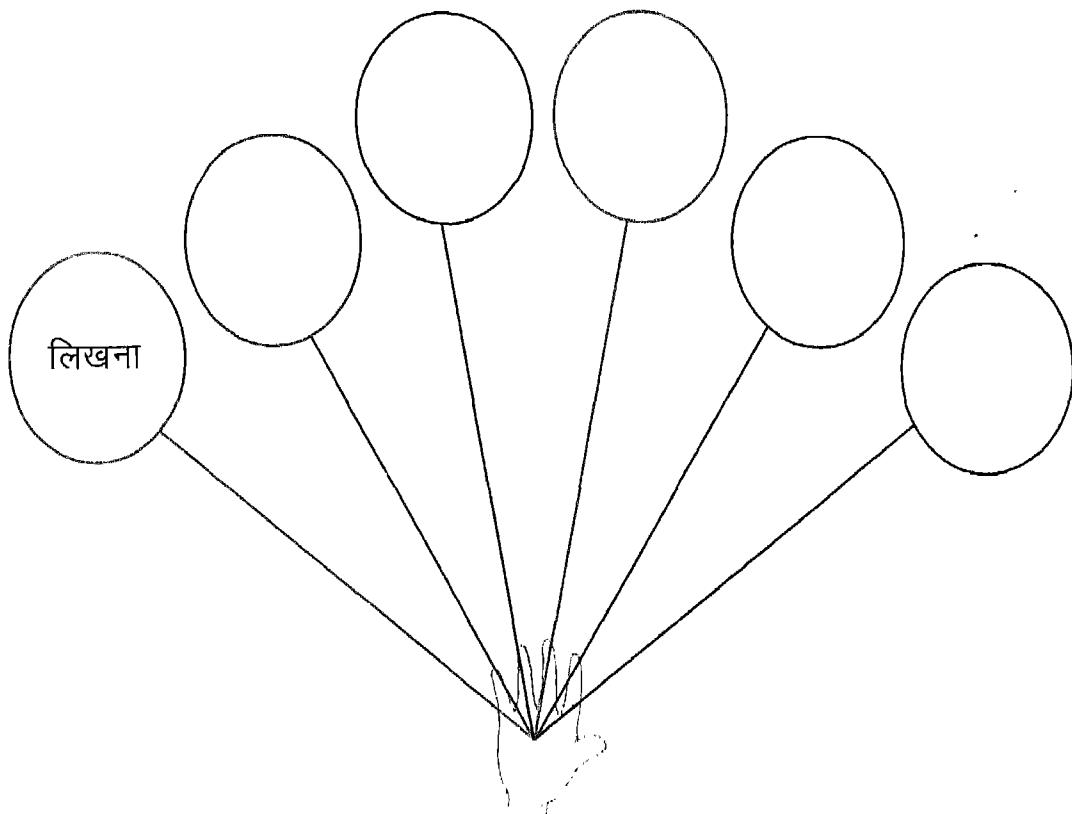
3. नीचे दिए गए शब्दों में से जो भिन्न है उस पर गोला लगाइए। उससे जुड़े हुए शरीर के अंग का नाम भी लिखिए :

	शरीर का अंग
क. पीना, खाना, बोलना, चलना	(पाँव)
ख. चलना, कूदना, सुनना, दौड़ना	( )
ग. पकड़ना, लिखना, भागना, छूना	( )
घ. रोना, चखना, देखना, घूरना	( )

III कुछ करने के लिए

1. बारी-बारी से अंगों के पात्र बन कर उनका अभिनय कीजिए।
2. मनुष्य के शरीर का चित्र बनाइए। विभिन्न भागों के नाम भी लिखिए।

पाठ 2

मेरा एक दिन

मेरा नाम मीना है। मैं आठ वर्ष की हूँ। मैं तीसरी कक्षा में पढ़ती हूँ। मेरी माँ मुझे सुबह छह बजे जगाती है। फिर मैं अपने छोटे भाई संजय को जगाती हूँ। संजय पाँच वर्ष का है। वह पहली कक्षा में पढ़ता है। हम दोनों भाई-बहन रोज कुछ नियमों का पालन करते हैं, जैसे –

1. सुबह उठकर अपने से बड़ों को नमस्कार करना।

2. शौच के बाद हाथों को अच्छी तरह से धोना।

3. सुबह और रात को सोने से पहले अपने दाँत साफ़ करना। जीभ भी साफ़ करना।
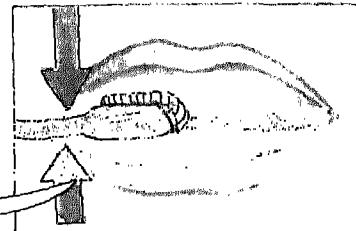
4. अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करना।
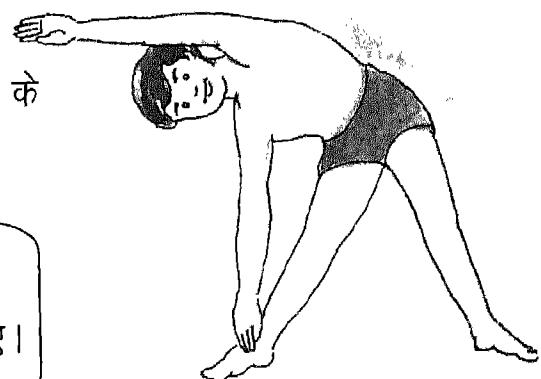
5. नहाना। नहाते समय आँख, नाक, नाखून आदि की अच्छी तरह सफ़ाई करना।

6. नहा कर शरीर को साफ़ तौलिए से पोंछना। साफ़ कपड़े या तौलिए से पोंछने से शरीर से गंदगी हट जाती है।

7. बालों में कंघी करना।
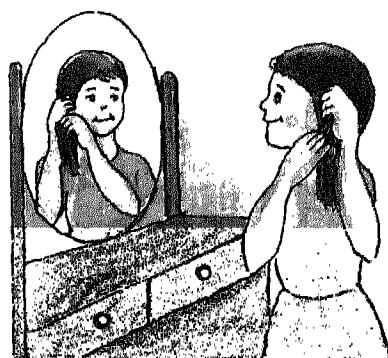
8. नाश्ता करना।

9. समय पर पाठशाला जाना।

10. पाठशाला से आने के बाद अपने बस्ते और बाकी वस्तुओं को उनकी ठीक जगह पर रखना।

11. हाथ धोकर भोजन करना।
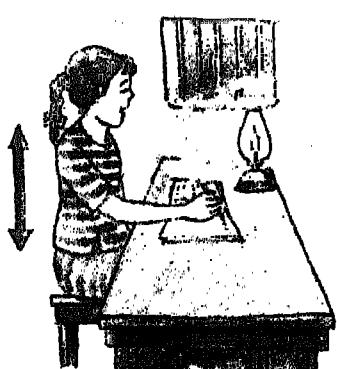
12. कुछ देर पढ़ाई करना। पढ़ते समय सीधा बैठना।

13. शाम को मित्रों के साथ खेलना।

14. रात का भोजन समय से करना।

15. रात को समय से सोना।

और भी कुछ ऐसी बातें हैं जिनका ध्यान हम सदैव रखते हैं, जैसे –

- अपने बड़ों का आदर करना।

- खाने-पीने की वस्तुओं को ढककर रखना।

- कूड़ा घर के बाहर या खुले में नहीं डालना।

- घर में ढके हुए कूड़ेदान का प्रयोग करना।

मेरा भाई संजय अभी बहुत छोटा है। इसलिए वह सब काम अपने-आप नहीं कर सकता। मैं कुछ कामों में उसकी सहायता करती हूँ।

यह सब करना मुझे और संजय को बहुत अच्छा लगता है।

जानते हो यह सब बातें हमने किससे सीखी हैं – दादा जी, दादी जी, माँ, पिता जी और अपनी अध्यापिका से।

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. आप अपने घर में क्या-क्या काम करते हैं ?
2. आपको कौन-सा काम करना सबसे अच्छा लगता है ?
3. आप अपने दाँत किस चीज से साफ़ करते हैं ?
4. भोजन करने से पहले हम हाथ क्यों धोते हैं ?

II लिखित

1. ठीक उत्तर पर (√) का निशान लगाइए :

   आप अपने दाँत एक दिन में कितनी बार साफ़ करते हैं ?

   क. एक बार ( )

   ख. दो बार ( )

   ग. एक बार भी नहीं ( )

2. रिक्त स्थान भरिए :

   क. सुबह उठकर बड़ों को ________ करना चाहिए।

   ख. सुबह और रात के भोजन के बाद दाँत ________ करने चाहिए।

   ग. भोजन करने के ______ और ______ ______ हाथ धोने चाहिए।

   घ. रात को ______ ______ सोना चाहिए।

3. नीचे दिए गए वाक्यों के सामने (√) या (X) का निशान लगाइए :

   क. खाने की चीजें ढककर रखनी चाहिए। ☐

   ख. मित्रों के साथ मिलजुल कर खेलना चाहिए। ☐

   ग. घर का कचरा सड़क पर फेंकना चाहिए। ☐

   घ. खाना जल्दी-जल्दी खाना चाहिए। ☐

   ङ. सीधे बैठकर पढ़ना अच्छा नहीं होता। ☐

4. नीचे दिए गए चित्रों में क्रियाओं को आप जिस क्रम में करते हैं, उसी क्रम में अंकित कीजिए :
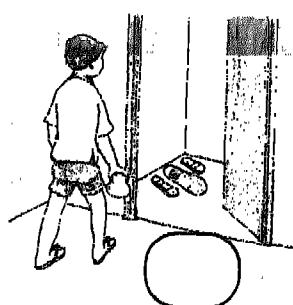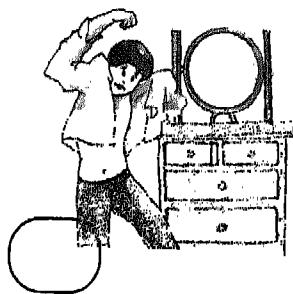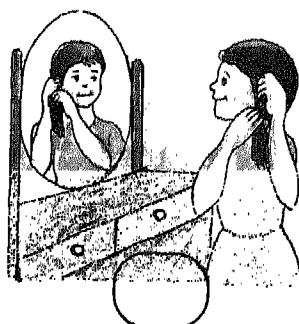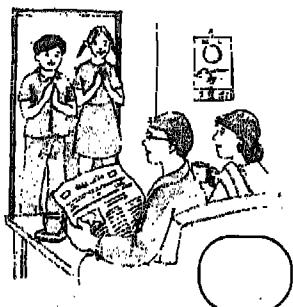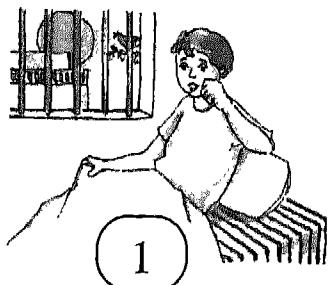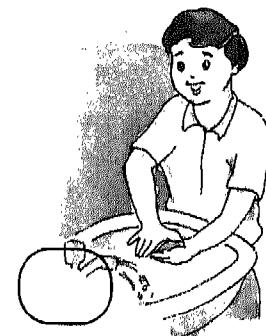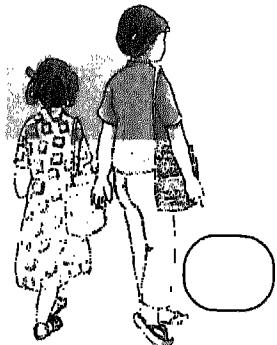
III कुछ करने के लिए

1. अपने मित्र से उसकी एक दिन की क्रियाएं पूछिए।
2. अपनी माता जी से दाँत साफ़ करने का ठीक ढंग पता कीजिए। ठीक ढंग कक्षा में साथियों को बताइए।
3. दाँत साफ़ करने में काम आनेवाली चीजों के नाम पता कीजिए। सूची बनाकर कक्षा में लगाइए।
4. अपनी अध्यापिका से ठीक से हाथ धोने का तरीका पूछिए। घर में जाकर यह तरीका सब को बताइए।

पाठ 3

मैं और मेरे मित्र

मेरा नाम मीता है। मेरे कुछ मित्रों के नाम मीना, सीमा, संजय और रहीम हैं। ये सब मेरी कक्षा में पढ़ते हैं। इन सब में संजय मेरा सबसे प्यारा मित्र है। संजय रोज मेरे घर खेलने आता है।
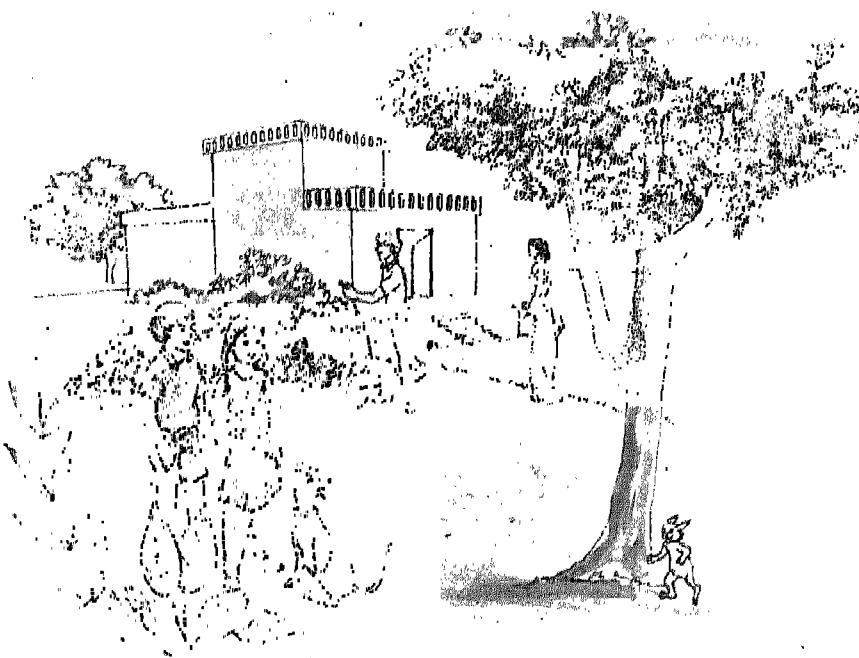
मेरे घर में मेरे कुछ और मित्र भी हैं।
जानते हो कौन ?

एक है मेरा प्यारा-सा कुत्ता–मोती। दूसरा है मेरा तोता–मिट्ठू। हमें एक-दूसरे के साथ खेलना अच्छा लगता है। मैं अपने इन मित्रों को बहुत प्यार करती हूँ। मैं उनका ध्यान भी रखती हूँ।

मेरे घर के बाहर एक छोटा-सा बगीचा है। रोज शाम को हम चारों बगीचे में खूब खेलते हैं, दौड़ते हैं।

बगीचे में रंगबिरंगे फूलों के बहुत-से पौधे हैं। वहीं पर जामुन का एक पेड़ भी है। खेलते-खेलते जब हम सब थक जाते हैं तो पेड़ की छाया में बैठ जाते हैं।

जामुन के पेड़ पर जब फल आते हैं तो हम सब जामुन खाते हैं। खाने से पहले हम उन्हें अच्छी तरह से धोते हैं। उनकी गुठली ढक्कन वाले कूड़ेदान में डाल देते हैं।

आपको मालूम है, पेड़-पौधे भी हमारे बहुत अच्छे मित्र हैं। उनसे हमें बहुत-सी चीजें मिलती हैं। हमें पेड़-पौधों की देखभाल करनी चाहिए। उन्हें तोड़ना नहीं चाहिए।

पेड़-पौधों की देखभाल के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं? कोई दो तरीके बताइए।

1. ______________________________

____

2. ______________________________

____

एक दिन, हम चारों मित्र बगीचे में खूब खेले। खेलने के बाद हम पेड़ की छाया में कुछ देर बैठे। बैठे-बैठे मैं सोचने लगी कि संजय, मोती, मिट्ठू और मैं आपस में कितने मिलते-जुलते हैं। हम सब की दो आँखें हैं। एक मुँह है। हम सब सुन सकते हैं। सूँघ भी सकते हैं।

हम सब मित्र एक जगह से दूसरी जगह आ-जा सकते हैं। हम दौड़ भी सकते हैं। मैं दो पैर से दौड़ती हूँ पर मोती तो चार पैरों से दौड़ता है। मिट्ठू के दो पैर हैं, जिनसे वह डाल पर बैठता है। वह थोड़ी दूर जमीन पर चल भी सकता है। मिट्ठू के दो पंख भी हैं जिनके द्वारा वह उड़ सकता है।

हमारा मित्र जामुन का पेड़ भी बहुत सी बातों में हम जैसा है। जैसे हम साँस लेते हैं, वह भी पत्तियों द्वारा साँस लेता है। हम पानी पीते हैं, वह भी अपनी जड़ों के द्वारा पानी और पानी में घुले पदार्थ लेता है।

हम सब बढ़ते भी हैं।

परंतु कुछ बातों में पेड़-पौधे हमसे भिन्न हैं।

आइए, सूची बनाएं, हम किन बातों में एक दूसरे के समान हैं और किन बातों में भिन्न हैं :

	समानताएँ	
	मनुष्य	पेड़-पौधे
1	साँस लेते हैं।	साँस लेते हैं ।
2		
3		
4		
	भिन्नताएँ	
	मनुष्य	पेड़-पौधे
1	चलते हैं।	नहीं चलते हैं।
2		
3		
4		

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. अपने किन्हीं पाँच मित्रों के नाम बताइए।
2. अगर आपके मित्र नहीं हों तो आपको कैसा लगेगा ?
3. कोई दो पशुओं और दो पक्षियों, जो आपने देखे हों, के नाम बताइए।
4. पेड़ और पक्षी में दो भिन्नताएँ बताइए।
5. पक्षी और आप में दो समानताएँ बताइए।

II लिखित

1. आपके मित्र और आप में पाई जाने वाली दो समानताएँ लिखिए।
2. मिट्ठू और मोती में पाई जाने वाली दो भिन्नताएँ लिखिए।
3. पेड़-पौधों से हमें क्या-क्या मिलता है ?
4. पेड़-पौधों की देखभाल के लिए हमें क्या करना चाहिए ?
5. फल देने वाले किन्हीं दो पेड़-पौधों के नाम लिखिए।
6. किन्हीं दो पशु-पक्षियों के नाम बताइए :

   क. जो दूध देते हैं 1. ________ 2. ________

   ख. जो अंडे देते हैं 1. ________ 2. ________

   ग. जिनसे ऊन प्राप्त होती है 1. ________ 2. ________

   घ. जो भार ढोते हैं 1. ________ 2. ________

7. बिंदुओं को जोड़कर छिपे हुए चित्र को पहचानिए और उसका नाम लिखिए।
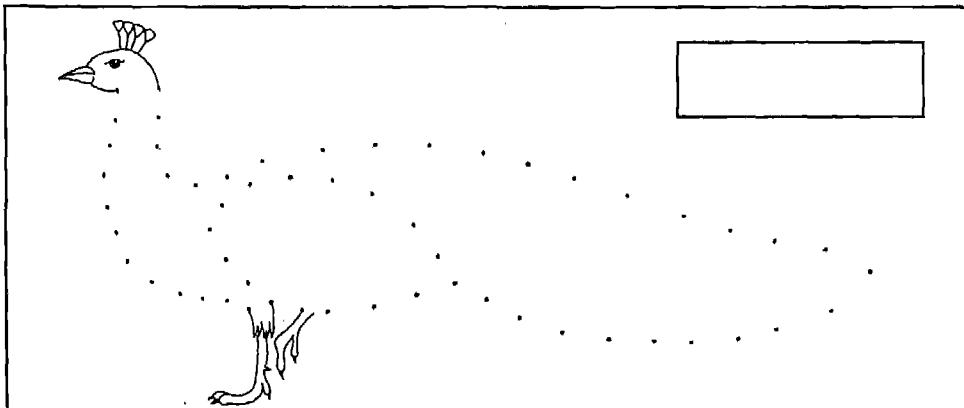
8. नीचे दिए गए चित्रों में समानताएँ और विभिन्नताएँ ढूँढकर नीचे लिखिए :
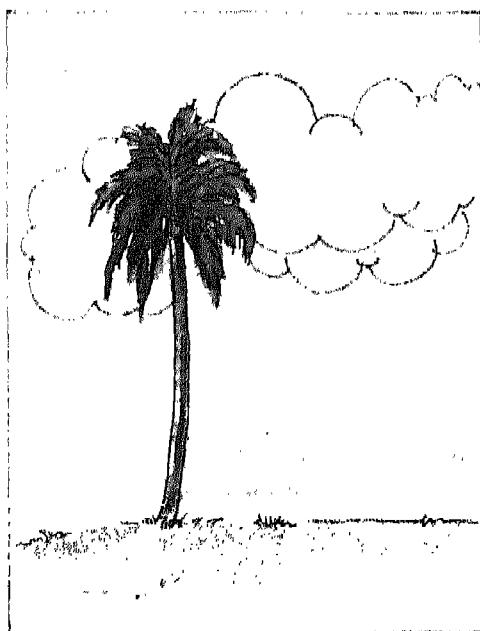
चित्र 'क'
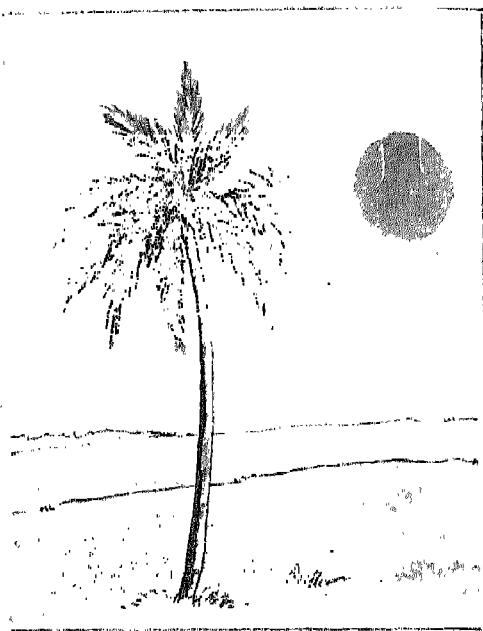
चित्र 'ख'

समानताएँ	भिन्नताएँ
1. दोनों चित्रों में पेड़ हैं।	1. चित्र 'ख' में सूरज है और चित्र 'क' में सूरज नहीं है।
2.	2. ....
3.	3. ....

III कुछ करने के लिए

1. अपने सबसे प्रिय फूल का चित्र बनाकर रंग भरिए :
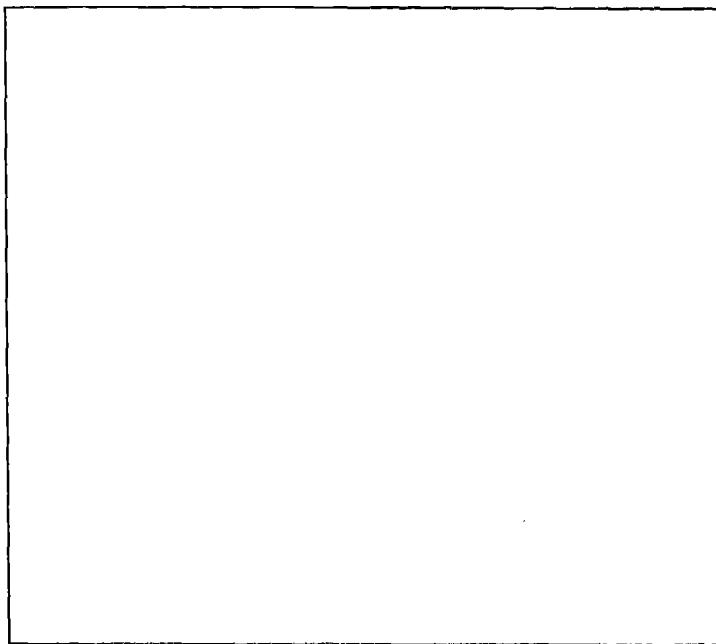
2. अपनी पाठशाला या उसके आस-पास लगे पेड़-पौधों के नाम पता कीजिए। उनके नाम कॉपी में लिखिए।
3. पाँच पक्षियों के चित्र इकट्ठे कीजिए और उन्हें कॉपी में चिपकाइए। चित्रों के नीचे उनके नाम भी लिखिए।
4. फल देनेवाले पेड़-पौधों के चित्र इकट्ठे कीजिए। उन्हें कॉपी में चिपकाइए। चित्रों के नीचे उनके नाम भी लिखिए।

इकाई दो

इनके बिना जीवन नहीं

अध्यापक के लिए संकेत

यह इकाई क्यों

पहली इकाई का मुख्य केंद्र बिंदु बच्चों की स्वयं के बारे में जानकारी थी। अब जरूरी है कि उनकी जानकारी को थोड़ा आगे बढ़ाते हुए, उनकी मुख्य जरूरतों, जैसे–भोजन, पानी और हवा तक ले जाया जाए।

इस इकाई के शिक्षण-अधिगम के बाद अपेक्षा की जाती है कि बच्चे :

- विभिन्न खाद्य-पदार्थों, उनकी आवश्यकता और उनके स्रोतों के बारे में जानेंगे।
- भोज्य पदार्थों के सही रख-रखाव की आदतें विकसित करेंगे।
- पानी की दैनिक जीवन में आवश्यकता जान सकेंगे। पानी के स्रोतों एवं उनके संरक्षण के तरीकों को समझ पाएंगे।
- पीने के पानी को स्वच्छ रखने के विभिन्न तरीकों के बारे में जान जाएंगे।
- पानी के तीन रूपों के साथ-साथ पानी के कुछ गुणों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुद्ध वायु के महत्त्व को समझेंगे।
- हवा में प्रदूषण के मुख्य कारण एवं उनसे बचने के तरीके जान सकेंगे।

इस इकाई में है क्या

इस इकाई में चार पाठ दिए गए हैं– 'हमारा भोजन', 'पानी की आत्मकथा', 'पानी कितना जरूरी' और 'हमारा आस-पास कितना साफ़'। 'हमारा भोजन' पाठ की विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण बच्चों के व्यवहारिक अनुभवों का संकलन है। पाठ का विकास बच्चों के अनुभवों पर आधारित क्रियाकलाप के द्वारा किया गया है। 'पानी' स्वयं अपने जल-चक्र को कहानी के रूप में सुनाकर साथ ही बच्चों के प्रश्नों के उत्तर भी देता है।

पानी के कुछ गुण एवं उसे स्वच्छ रखने में बच्चों की भूमिका, विषयवस्तु को उदाहरण देकर एवं उन्हीं के अनुभव पूछ कर प्रस्तुत की गई है। स्वच्छ वायु की जानकारी के लिए उसकी आवश्यकता के साथ-साथ 'उसे साफ़ कैसे रखें' पर चर्चा की गई है।

आपकी भूमिका क्या है

- पूरी इकाई में जहाँ तक हो सके बच्चों से उनके अनुभव सुनें। बच्चों द्वारा बताई गई भोजन की चीज़ों की जानकारी के आधार पर बातचीत ज़्यादा करें तो अच्छा होगा।
- पाठ के अंत में दिए गए क्रियाकलापों के अलावा अन्य रुचिकर क्रियाएं भी कराएं जैसे फलों और सब्जियों के चित्र-कार्ड बनवाकर, वर्गीकरण करवाकर, स्मृति-खेल खिलवाकर आदि। सभी प्रकार के खाद्य-पदार्थों को खाने की आदत विकसित करने के लिए कुछ संबंधित गीत एवं कविता सिखाएं।
- जलचक्र को चित्रों के माध्यम से (चार्ट बनाकर) बताएं। सभी बच्चों के घरों के आस-पास पानी के स्रोतों का पता करवाएं तथा पीने के पानी को स्वच्छ बनाए रखने के लिए उनकी भूमिका पर बात-चीत करें।
- पाठ 'पानी कितना जरूरी' में, पानी के कुछ गुणों से संबंधित कुछ क्रियाएं बताई गई हैं (रंग, गंध, आकार के लिए)। उन्हें कक्षा में सभी बच्चों से अवश्य करवाएं।

  इस इकाई के पाठ 'हमारा आस-पास कितना साफ़' पाठ में साँस लेने की प्रक्रिया योग से संबंधित है। हो सकता है बच्चे उसे ठीक से नहीं कर सकें। आप बच्चों के सामने इसे प्रदर्शित करेंगे, तो अच्छा रहेगा। इसका प्रमुख उद्देश्य बच्चों में गहरी एवं लंबी सांस लेने की आदत डालना है। यह स्वास्थ्य के लिए अच्छी होने के साथ-साथ बच्चों में ध्यान केंद्रित करने की आदत के विकास में भी सहायक होगी। इस क्रिया को समय-समय पर कक्षा में करवाते रहिए। पाठ में शुद्ध वायु एवं अशुद्ध वायु की बात की गई है। वायु के अशुद्ध होने के कुछ कारण भी बताए गए हैं। बच्चों से इस संदर्भ में उनके व्यक्तिगत अनुभव सुनिए। परिवेश को स्वच्छ बनाए रखने के लिए वो क्या कर सकते हैं, उस पर चर्चा अवश्य करें।

पाठ 4

हमारा भोजन
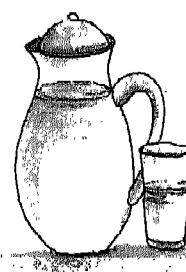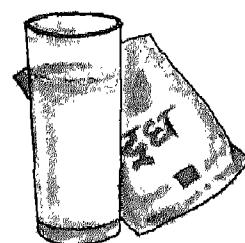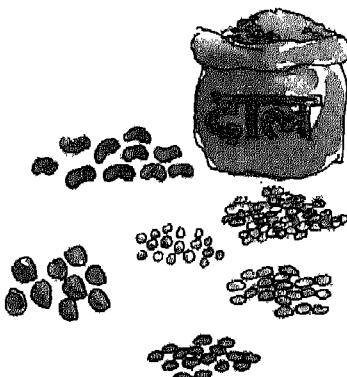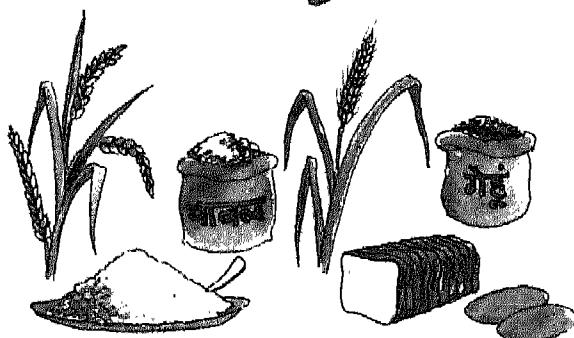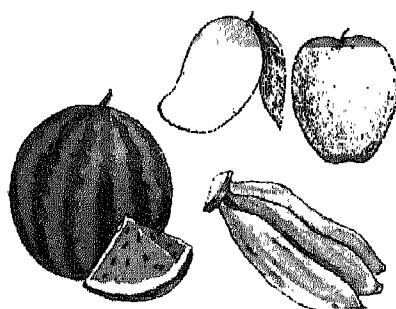
आइए, ऊपर दिए गए चित्रों को ध्यान से देखें और दी गई चीजों को पहचानें।

इनसे बनी कुछ चीजें आप अपने भोजन में रोज़ खाते हैं।

अपने परिवार में रोज खाई जाने वाली चीजों की सूची बनाइए :

____________	____________	____________
____________	____________	____________
____________	____________	____________

हमने देखा, कुछ लोग गेहूँ की रोटी खाते हैं तो कुछ लोग चावल। कुछ लोग गेहूँ की रोटी और चावल दोनों खाते हैं। कहीं-कहीं मक्के, बाजरे और चने की रोटी भी खाई जाती है।

आपके घर में इन अनाजों से और क्या-क्या चीज़ें बना कर खाई जाती हैं ? सूची बनाइए :

गेहूँ .... मक्का ....

....

....

चावल .... बाजरा ....

....

....

अपने भोजन में हम घी, तेल, शक्कर, गुड़ का भी प्रयोग करते हैं। यह सब चीजें हमारे शरीर को काम करने तथा खेलने की शक्ति देती हैं।

हमारे भोजन में और भी बहुत-सी चीज़ें हैं, जैसे—दालें, दूध, दही और पनीर।

कुछ लोग अंडा, मांस और मछली भी खाते हैं। दूध और दालों की तरह ये भी हमारे शरीर को बढ़ने में सहायता करते हैं।
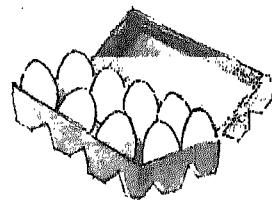
हम सब सब्ज़ियाँ और फल भी खाते हैं।
इनके खाने से हमारा बीमारियों से बचाव होता है।
कुछ सब्जियाँ पत्ते वाली होती हैं और कुछ बिना पत्ते वाली।

आइए पत्ते वाली सब्जियों की सूची बनाएं –

....

इन सब्ज़ियों में से कुछ को हम कच्चा खाते हैं, कुछ को पका कर और कुछ सब्ज़ियाँ दोनों तरह से खाई जाती हैं।

अपने घर में खाई जाने वाली सब्ज़ियों की सूची नीचे दी गई तालिका में बनाइए।

कच्ची खाने वाली सब्जियाँ	पकाकर खाने वाली सब्जियाँ	दोनों तरह से खाई जाने वाली सब्ज़ियाँ
....	....	....
....	....	....
....	....	....

खाने की चीजों के साथ-साथ कुछ और भी है जो हमारे भोजन का हिस्सा है। जानते हो वह क्या है ?

आपने बिलकुल ठीक पहचाना।

वह है 'पानी'।

पानी हमारे भोजन का बहुत ही जरूरी भाग है। प्रतिदिन हमें पानी काफी मात्रा में पीना चाहिए। पानी हमारे शरीर को फ़लों और सब्जियों से भी मिलता है।

क्या आप जानते हैं कि खाने की सब चीज़ें हमें कहाँ से मिलती हैं? ये सब हमें पेड़-पौधों और पशुओं से मिलती हैं।

आइए पेड़-पौधों तथा पशुओं से प्राप्त होने वाली खाने की चीजों की सूची बनाएं।

पेड़-पौधों से	**पशुओं से**
1. ____________	1. ____________
2. ____________	2. ____________
3. ____________	3. ____________
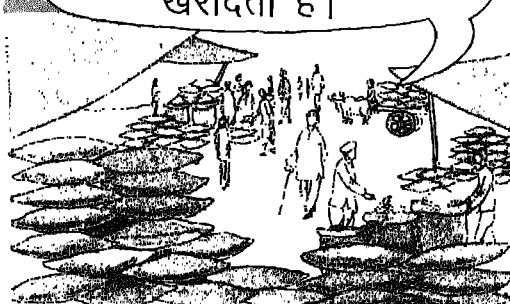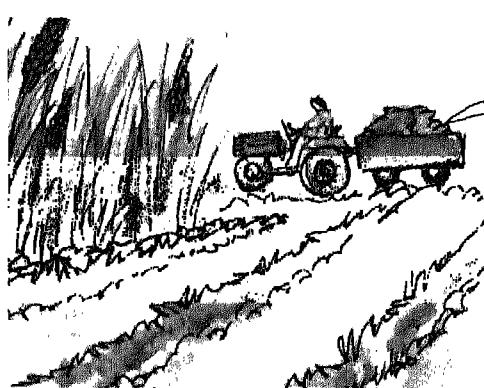
ये तो हुई इन सब चीजों के मिलने और हम तक पहुँचने की बातें। परंतु खाने की चीज़ों का पूरा लाभ उठाने के लिए हमें बहुत-सी बातों का ध्यान रखना चाहिए, जैसे :

- खाना खाने की जगह साफ़ होनी चाहिए।
- खाने की चीज़ें ढककर रखनी चाहिए।
- खाना हमें खूब चबाकर खाना चाहिए।
- खाना उतना ही लें जितना खा सकें। खाने को फेंकना नहीं चाहिए।
- कोई भी चीज खाने से पहले हाथ धोने चाहिएं।
- खाने से पहले फलों को अच्छी तरह साफ़ पानी से धोना चाहिए।
- फलों को खाने के समय ही काटना चाहिए।
- सब्ज़ियाँ पहले धोनी चाहिएं, फिर काटनी चाहिएं।
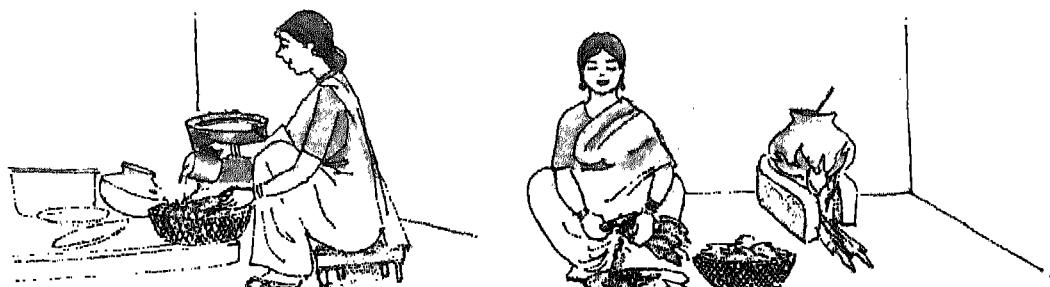
- सब्ज़ियों और फलों के छिलके ढक्कन वाले कूड़ेदान में डालने चाहिएं।

आइए अगले पन्ने पर दिया साँप सीढ़ी का खेल खेलें और भोजन के बारे में कुछ और जानें।

100	99 स्वस्थ शरीर पाया	98	97 बीमार होने से बचें	96	95	94 छिलको को इधर उधर फेंका	93	92	91
81	82	83 ताजा भोजन खाया	84	85	86	87	88	89 स्वस्थ सरीर बढ़ने मे मदद	90
80 स्वस्थ व चमकती ऑखे	79	78 खाना बरबाद किया	77 फल और सब्जियाँ खायी	76	75	74	73	72 अच्छे बच्चे	71
61	62	63	64	65 मक्खी मच्छर घर में आये	66	67	68	69	70 मांस, मछली, अंडा, दूध खाये
60	59 हरी सब्जियां खाई	58	57	56	55	54 धीरे–धीरे और चबा के खाना खाया	53	52	51
41 बिना ढका भोजन खाया	42	43	44	45	46 काम व खेलने की शक्ति मिली	47	48	49 पेड पौधों को पानी नहीं दिया	50
40	39	38	37	36	35	34	33	32	31
21	22	23	24 है ना बुरी बात	25	26	27 घी शक्कर,फल सब्ज़ी,गुड खाया	28 फल सब्ज़ियाँ नहीं खायीं	29 बीमार होने से बचें	30
20	19 बीमारी को बुलाया	18	17	16	15 पेट की बीमारी से बचे	14	13 खाने से पहले फलों को धोना	12	11
1 शुरू करें	2	3 खाना खाने से पहले हाथ धोए	4	5	6	7	8	9	10

हमने क्या सीखा

I मौखिक

बताइए क्या होगा यदि :

1. आप भोजन नहीं करेंगें तो
2. आप कचरा खुले में फेंकेंगे तो
3. पेड़-पौधों को पानी नहीं देंगे तो
4. भोजन को ढककर नहीं रखेंगे तो

II लिखित

1. पशुओं से मिलने वाली खाने की किन्हीं दो चीज़ों के नाम लिखिए।
2. किन्हीं चार हरी सब्ज़ियों के नाम लिखिए जो आप खाते हैं।
3. सब्जियाँ हमारे शरीर के लिए क्यों ज़रूरी हैं ?

4. नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए और (√) या (X) का निशान लगाइए :

क. फल और सब्ज़ियों को धोकर खाना चाहिए। ☐

ख. भोजन हमेशा ढककर रखना चाहिए। ☐

ग. भोजन करने से पहले हाथ धोना ज़रूरी नहीं है। ☐

घ. खाना जल्दी-जल्दी खाना चाहिए। ☐

ङ़. कचरा कूड़ेदान में डालना चाहिए। ☐

च. सब्ज़ियाँ काटने के बाद धोनी चाहिएं। ☐

छ. पीने का पानी खुले बरतन में रखना चाहिए। ☐

ज. भोजन करने की जगह साफ़ होनी चाहिए। ☐

III कुछ करने के लिए

1. आपके घर में खाई जाने वाली विभिन्न दालों के नमूने इकट्ठे कीजिए। उन्हें छोटी-छोटी थैलियों में डालकर चार्ट पर लगाइए। उनके नाम भी लिखिए।
2. अपने आस-पास पाए जाने वाले पशुओं के चित्र इकट्ठे कीजिए। उन्हें कॉपी में चिपकाइए। उनके नाम भी लिखिए।
3. अपनी सबसे प्रिय सब्जी का चित्र बनाइए। उसका नाम भी लिखिए।
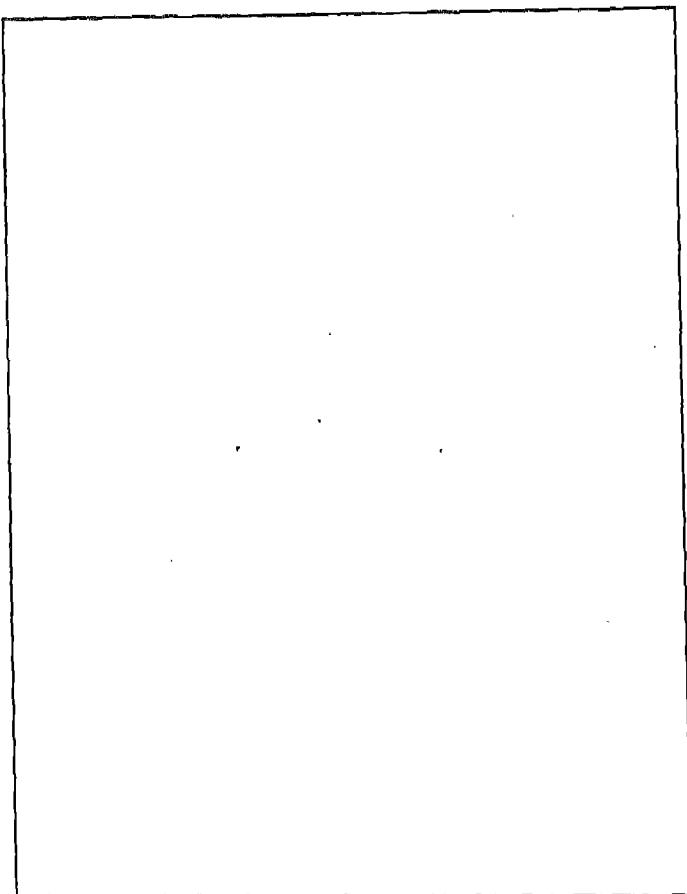
पाठ 5

पानी की आत्मकथा

एक दिन पाठशाला बंद होते समय पीने वाले पानी का नल खुला रह गया। अगले दिन सुबह-सुबह ही छल-छल करता पानी आया और लगा बहने। वह तो अच्छा हुआ कि पानी बह कर पास बनी हुई नाली के रास्ते फूलों की क्यारियों में जाता रहा।

पर जब तक पाठशाला में बच्चे आने शुरू हुए, सब क्यारियाँ भर चुकी थीं। अब पानी पाठशाला के बाहर वाली नाली में बह रहा था।
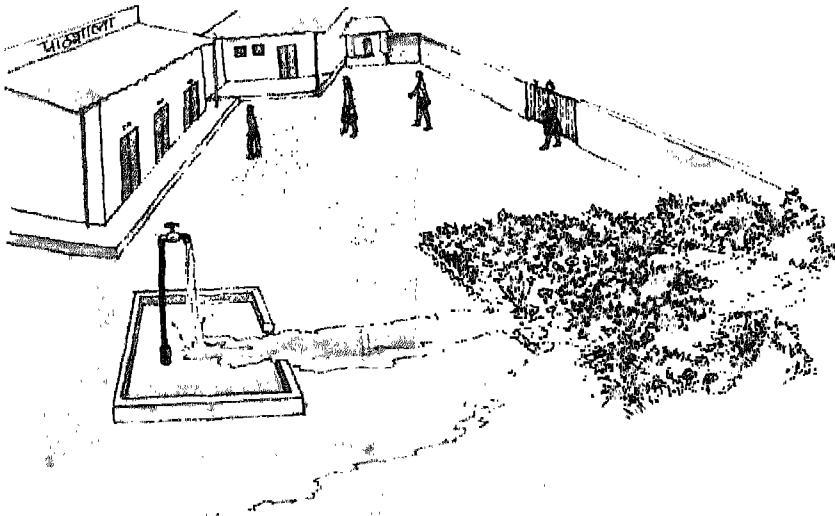
परंतु यह क्या ! पानी को इस तरह से बेकार बहते देखकर भी किसी ने नल बंद नहीं किया।

सब की लापरवाही देखकर पानी को बहुत बुरा लगा। पानी ने जोर से झर-झर करते हुए कुछ बच्चों को आवाज़ दी—अरे भाई ! जरा इधर तो आओ। इस नल को बंद कर दो, नहीं तो आज सबको प्यासा रहना पड़ेगा।

क्या आपने कभी सोचा है मैं कितनी लंबी यात्रा करके आप तक पहुँचता हूँ ?

नहीं, पानी चाचा–बच्चों ने कहा। चाचा ! आप ही हमें बताइए।
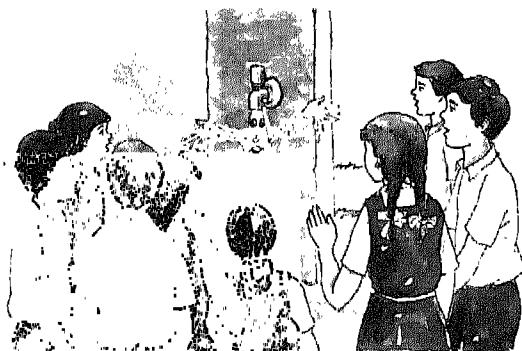
अच्छा, आओ मैं आज आपको अपनी कहानी सुनाता हूँ–पानी बोला।

मुख्य रूप से मेरा घर समुद्र है। झीलें और तालाब भी मेरे छोट-छोटे घर हैं। जब सूरज की तेज किरणें मुझ पर पड़ती हैं तो मैं गरम होकर भाप में बदल जाता हूँ।
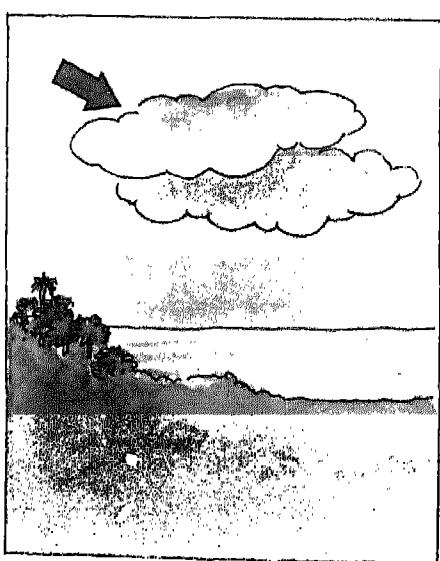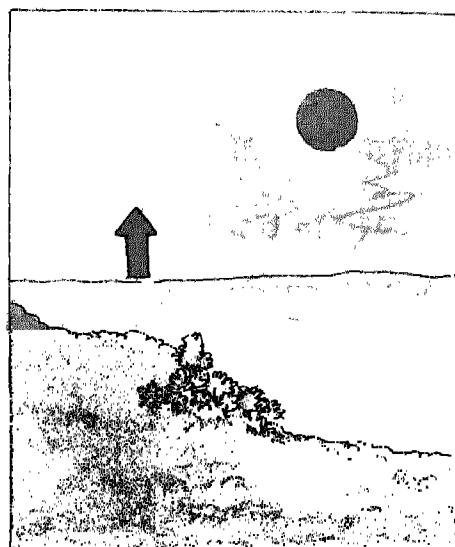
फिर मैं हलका होकर हवा के साथ ऊपर की ओर उड़ने लगता हूँ। ऊपर हवा में धुएँ तथा धूल के छोटे-छोटे कण होते हैं। मैं इनके सम्पर्क में आकर ठंडा हो जाता हूँ और भाप से पानी की छोटी-छोटी बूँदों में बदल जाता हूँ। मेरी ये छोटी-छोटी बूँदें बादल कहलाती हैं।

छोटी-छोटी बूँदें मिलकर बड़ी बूँदें बन जाती हैं। यह बड़ी बूँदें भारी होकर ज़मीन पर बरसने लगती हैं। इसे ही वर्षा कहते हैं।
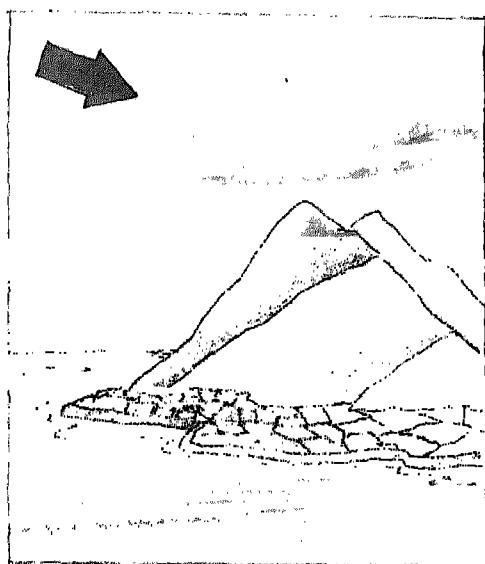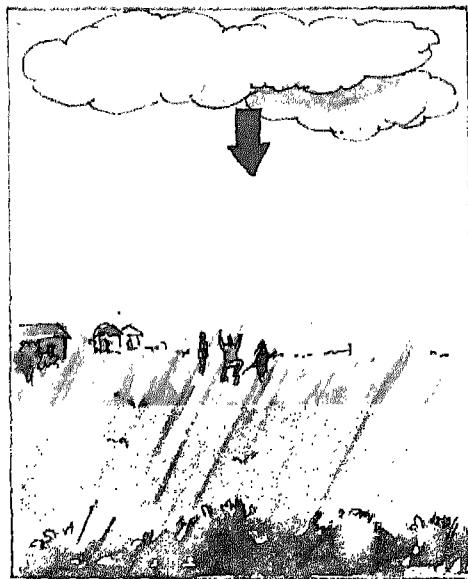
कहीं-कहीं तो मैं अधिक ठंड के कारण बरफ़ के रूप में जम भी जाता हूँ। ऐसा ज़्यादातर ऊँचे पहाड़ों पर होता है।

बरफ़ पर जब सूरज की किरणें पड़ती हैं तो मैं पिघलने लगता हूँ और पानी बन जाता हूँ। फिर मैं ढलान की ओर से नीचे बहने लगता हूँ।

वर्षा के पानी को कहीं-कहीं तालाबों में इक्ट्ठा किया जाता है। यह पीने और खेती के काम में लाया जाता है।

इस तरह मैं अलग-अलग जगह पहुँचता हूँ। कहीं छोटे नाले के रूप में, कहीं नदियों के रूप में। कहीं झील और कहीं झरनों के रूप में।

बहुत बड़ी नदियों के रूप में बहते-बहते मैं फिर समुद्र में पहुँच जाता हूँ।

देखा, मैं कैसे अपने रूप बदलता हूँ !
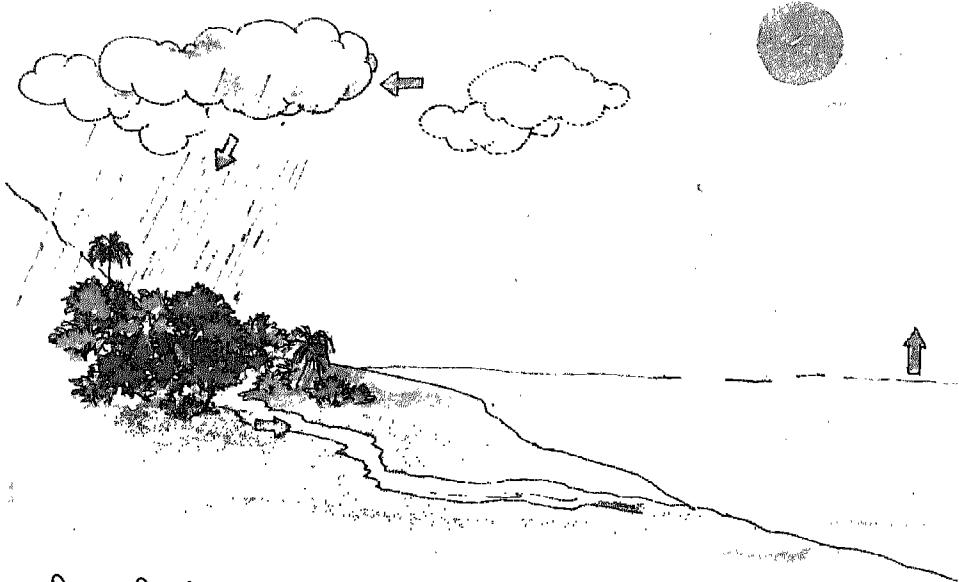
कभी पानी (द्रव), कभी भाप (गैस) तो कभी बरफ़ (ठोस)। इसे ही जल-चक्र कहा जाता है।

मेरा कुछ भाग ज़मीन में भी समा जाता है। जमीन के अन्दर से मुझे कुँओं और नलकूपों (हैंडपंपों) द्वारा बाहर निकाला जाता है और पीने तथा खेती के काम में लाया जाता है।
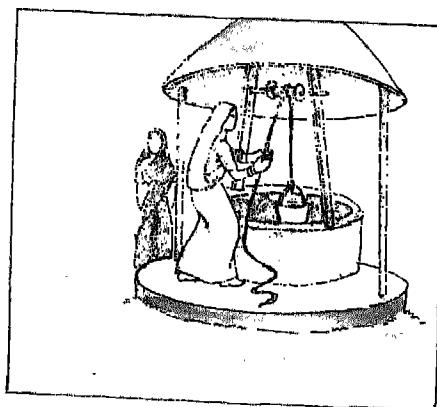
नदी, नाले, झील, झरने, कुएँ और समुद्र मेरे स्रोत हैं। इन सबसे आप मुझे प्राप्त कर सकते हैं।

पर चाचा, आप हमारे घरों और पाठशाला तक कैसे पहुँचते हैं ?

बच्चो, अब तो मैं बहुत थक गया हूँ। मेरी आगे की कहानी कक्षा में आपकी अध्यापिका बताएंगी।
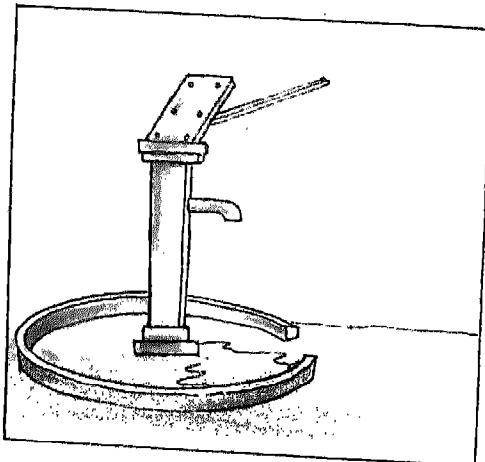
हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. सोचो और बताओ, यदि :

   क. पानी बेकार बहेगा तो
   ख. हमें, पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों को पानी नहीं मिलेगा तो
   ग. बादल न बने तो
   घ. सूरज की किरणें समुद्र तक न पहुँचे तो
   ड़. बरसात न हो तो

2. कहानी को आगे बढ़ाइए :

   एक दिन हमारे घर पानी नहीं आया। ....
   ....

II लिखित

1. पानी के कौन-कौन से स्रोत हैं ?
2. पानी के तीन रूप कौन-कौन से हैं ?
3. पानी भाप में किस तरह बदलता है ?
4. दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर खाली स्थान में भरिए :

   क. पानी के जमे हुए रूप को..................कहते हैं।
   (बादल, बरफ़, वर्षा)

   ख. सबसे अधिक पानी ....में पाया जाता है।
   (नदी, समुद्र, तालाब)

   ग. गरम करने पर पानी ....में बदलना शुरू हो जाता है।
   (भाप, बरफ़, नदी)

   घ. पानी..................के कारण बरफ़ में बदल जाता है।
   (गरमी, ठंड, वर्षा)

   ड. जमीन से पानी को.................. द्‌वारा बाहर निकाला जाता है।
   (तालाब, नदी, नलकूप)

5. हमें पानी कहाँ-कहाँ से प्राप्त होता है ? चित्र में पहचानिए और खाली जगह में लिखिए।
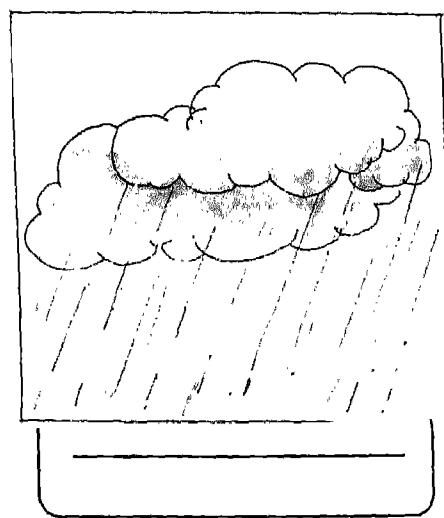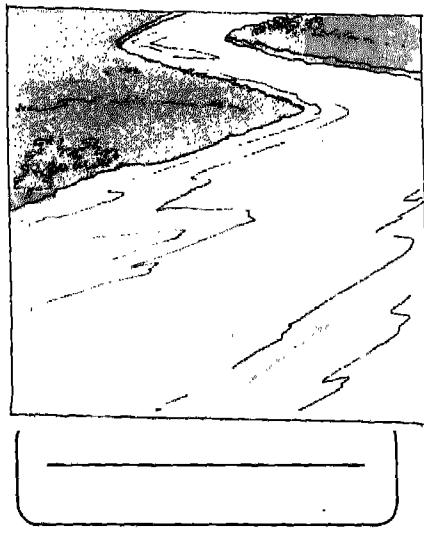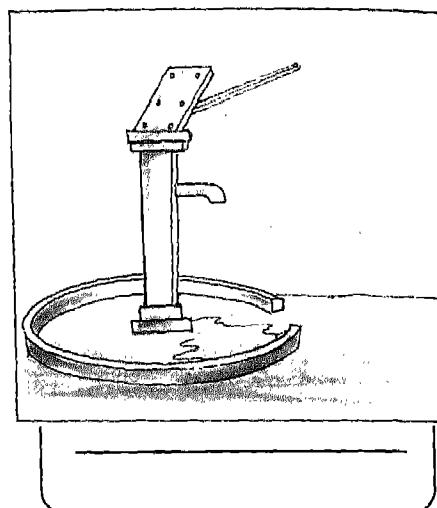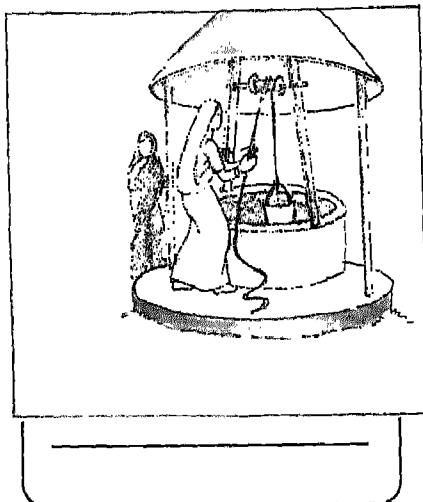
III कुछ करने के लिए

1. जल-चक्र का चित्र बनाइए।
2. पानी की आत्मकथा अपने घर में सुनाइए।
3. आपके घर के आस-पास जल कहाँ-कहाँ से प्राप्त होता है, पता करिए। उन स्थानों के नाम अपनी कॉपी में लिखिए।
4. अपने मित्रों से मालूम करिए कि वे पीने का पानी किन-किन स्रोतों से प्राप्त करते हैं।

पाठ 6

पानी – कितना ज़रूरी

पिछले पाठ में हमने पानी की कहानी पानी से ही सुनी। हमने यह भी जाना कि जमीन पर पानी वर्षा के रूप में बरसता है। बरफ़ पिघलने पर भी यह पानी नालों, नदियों द्वारा भिन्न-भिन्न जगहों पर पहुँचता है।

हम जानते हैं कि पानी हमारे लिए बहुत ज़रूरी है। जानते हो हमारे घरों में काम आनेवाला पानी कहाँ से आता है ?

कहीं हम इसे कुएँ से लेते हैं, कहीं तालाब से, तो कहीं सीधा नदी नाले से। कहीं नलकूप द्वारा भी जमीन से निकालते हैं।

शहरों में तो पानी नलों द्वारा हमारे घरों में पहुँचता है। घरों में आने से पहले पानी बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा साफ़ किया जाता है। फिर इसे बड़ी-बड़ी टंकियों में इकट्ठा किया जाता है। वहाँ से लम्बे पाईप द्वारा यह हमारे घरों तक पहुँचता है।

पानी हमारे बहुत काम आता है।

आइए नीचे दिए गए चित्र को देखें और सूची बनाएं कि यह हमारे किस-किस काम आता है :

....

....

....

हमारी तरह पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों को भी पानी की ज़रूरत होती है। नीचे दिए गए चित्रों को देखिए।

आपने चित्रों में जैसा देखा, अपनी कॉपी में लिखिए।

आप के घर में पानी किस-किस काम के लिए उपयोग में लाया जाता है? सूची बनाइए :

....

....

नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखिए :

आपने क्या पाया ?
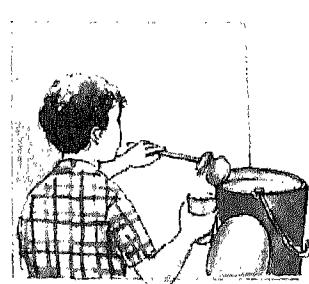
पहले चित्र में दूसरे चित्र में तीसरे चित्र में

- हाँ, पीने और खाना बनाने का पानी हमें साफ़ बरतन में रखना चाहिए।
- उसे ढककर रखना चाहिए।
- लंबी डंडी वाले बरतन से निकालना चाहिए।

हम प्रतिदिन पानी का उपयोग करते हैं। आइए, आज पानी को लेकर एक खेल खेलें।

हमारे पास कुछ काँच के बरतन हैं–एक जग, एक बड़ा गिलास, एक छोटा गिलास और एक कटोरी। जग में पानी भरा है।
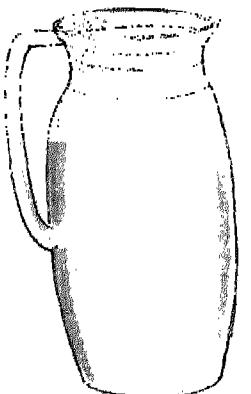
अब तीन बच्चे मेरे पास आएँ। एक-एक करके आप जग के पानी को बड़े गिलास, छोटे गिलास और कटोरी में डालिए। अब ध्यान से देखिए। आपको अपने बरतनों में पानी का आकार कैसा लग रहा है ?

अब सब बच्चे एक-एक करके इन बरतनों में पानी डाल कर देखेंगे। हम सबने इन क्रियाओं में क्या देखा ?

हम सबने देखा कि पानी को जिस बरतन में डालते हैं, वह उसी बरतन जैसा दिखाई देता है। पानी का अपना कोई आकार नहीं होता।

अब, सब बच्चे फिर से एक पंक्ति में आना शुरू करें। इन बरतनों में रखे पानी को ध्यान से देखें और सूँघें।

हम सबने पाया कि इस पानी का कोई रंग नहीं है। इसमें कोई गंध भी नहीं है। इसका कोई स्वाद भी नहीं होता।

ये सब पानी के गुण हैं।

पानी का अपना कोई आकार नहीं होता।
पानी का अपना कोई रंग नहीं होता।
पानी की कोई गंध नहीं होती।
पानी का कोई स्वाद नहीं होता।

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. पानी हमारे किस-किस काम आता है ?
2. पानी का रंग कैसा होता है ?
3. पानी का स्वाद कैसा होता है ?
4. आप किसी बगीचे में घूमने गए हैं। वहाँ नल खुला है और पानी बेकार बह रहा है। आप क्या करेंगे ?
5. पानी से भरी बालटी में पानी का आकार कैसा होगा ?

II लिखित

1. मनुष्य के अतिरिक्त पानी और किस-किस के काम आता है ?
2. पानी के कोई दो उपयोग लिखिए।
3. पीने का पानी हमें कहाँ-कहाँ से मिलता है ? कोई दो स्रोत बताइए।

4. खाली स्थान भरिए :

   क. पानी साफ़ .... में रखना चाहिए।
   ख. पानी पेड़-पौधों और .... के लिए ज़रूरी है।
   ग. हमें पानी हमेशा .... बरतन में पीना चाहिए।
   घ. पानी का अपना कोई .... नहीं होता।

6. नीचे दिए गए वाक्यों में (√) या (X) का निशान लगाइए।

   क. पानी सिर्फ़ हमारे पीने के काम आता है। ( )
   ख. पानी का कोई रंग नहीं होता। ( )
   ग. पेड़-पौधों को भी हमारी तरह पानी चाहिए। ( )
   घ. पानी का अपना आकार होता है। ( )
   ड़. कुएँ से पीने का पानी नहीं मिलता है। ( )

III कुछ करने के लिए

1. आप घर में पीने के पानी को गंदा होने से कैसे बचाते हैं ? पता कीजिए और कक्षा में अपने मित्रों को बताइए।
2. पानी व्यर्थ न जाए, इसके लिए आप घर में क्या-क्या करते हैं ? अपनी कक्षा में बताइए।

पाठ 7

हमारा आस-पास – कितना साफ़

आज खेल-कूद के घन्टे के बाद कक्षा में आते ही अध्यापिका ने सब बच्चों से कहा–सब अपनी-अपनी जगह पर चुपचाप बैठिए।

सब बच्चे यह सुनकर कुछ हैरान हुए। पर सभी जल्दी ही अपनी-अपनी जगह बैठ गए।

अब सब अपनी आँखें बंद कीजिए–अध्यापिका ने फिर कहा।
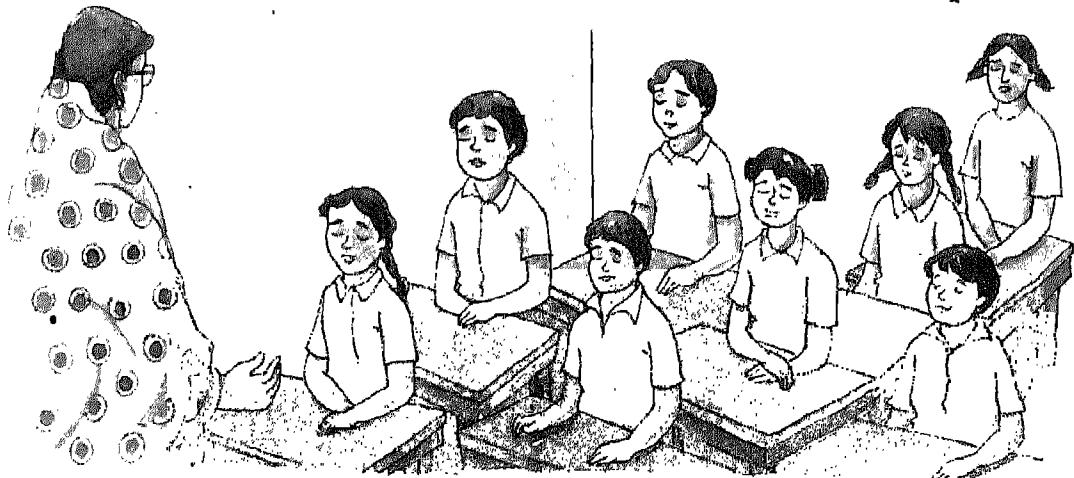
अपने शरीर से आनेवाली आवाज को ध्यान से सुनने की कोशिश कीजिए।

कुछ समय बाद फिर अध्यापिका की आवाज आई–अपनी आँखें खोलिए। बिना एक दूसरे से बात किए अपनी-अपनी कॉपी में लिखिए कि आपने क्या सुना

पूछने पर कुछ बच्चों ने जवाब दिया–'साँस की आवाज।'

हाँ, साँस लिए बिना कोई भी मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। हमारे मित्र पशु-पक्षी भी साँस लेते हैं। पेड़-पौधे भी अपने पत्तों द्वारा साँस लेते हैं।

साँस लेने के लिए बहुत जरूरी है–हवा ?

कभी गंदे नाले के पास से निकलने पर हमें कैसा लगता है।

बहुत दिनों से पड़े कूड़े के ढेर के पास से निकलने पर कैसा लगता है ?

गंदे नाले या कूड़े के आस-पास की हवा भी गंदी हो जाती है। ऐसी जगह से निकलते समय हमें अपनी नाक ढकनी पड़ती है। गंदी हवा में साँस लेने से हम बीमार भी हो जाते हैं।

गंदी जगह पर मक्खी और मच्छर भी पैदा हो जाते हैं। इससे बहुत-सी बीमारियाँ हो जाती हैं।

हवा कई और कारणों से भी गंदी हो जाती है, जैसे–
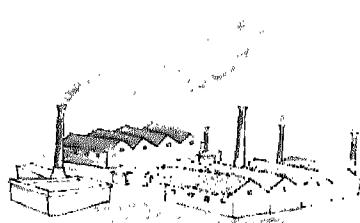
1. कारखानों से निकलते धुएँ से
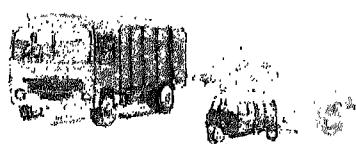
2. मोटर गाड़ियों के धुएँ से

3. पटाखों के धुएँ से
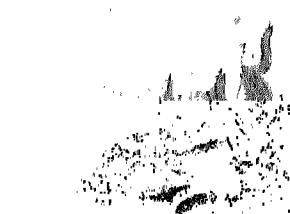
4. जलते हुए कूड़े के धुएँ से

हमें अपने आस-पास की हवा साफ़ रखने के लिए क्या-क्या करना चाहिए ?

आइए, सूची बनाएं :

- कूड़ा ढक्कन वाले डिब्बे में डालें।
- सड़क के किनारे निश्चित स्थान पर कूड़ा डालें।
- खुली नाली में कूड़ा न डालें। प्लास्टिक की थैलियाँ कूड़े में न डालें। इनसे नालियाँ बंद हो जाती हैं। इनको खाने से कभी-कभी पशु मर भी जाते हैं।
- पानी के ठीक निकास के लिए नालियाँ बनाएं।
- कूड़ा जलाएँ नहीं, उसे गड्ढों में दबा दें।

खुली जगह पर थूकने से भी हमारे आस-पास गंदगी हो जाती है। कुछ लोग खुली जगह में शौच भी कर देते हैं।

- शौच को खुला न छोड़ें। उस पर मिट्टी डाल दें।
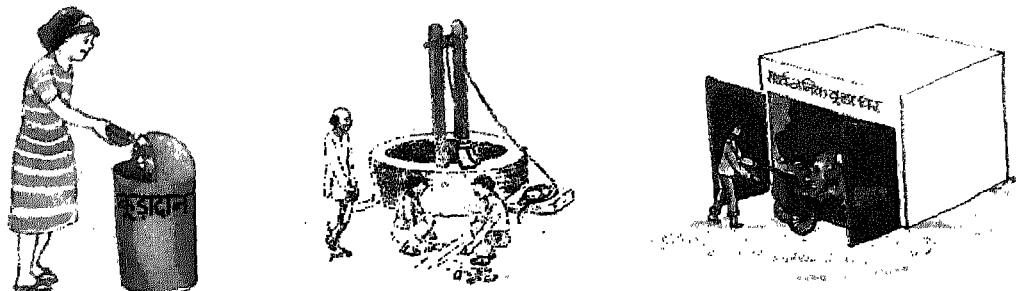
> ऊपर दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए। इनमें सफ़ाई के लिए कौन-कौन सी क्रियाएं हो रही हैं ? इनके बारे में अपनी कक्षा में मित्रों से बातचीत कीजिए।

आस-पास की सफ़ाई को कोई भी अकेला नहीं बनाए रख सकता। इसे हम सब मिलकर ही साफ़ रख सकते हैं, चाहे बच्चा हो या बड़ा।

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. अगर हम अपना घर साफ़ नहीं रखेंगे तो क्या होगा ?
2. यदि हमें शुद्ध हवा न मिले तो क्या होगा ?
3. कूड़ा-कचरा खुले में फेंकने से क्या नुकसान होगा ?
4. प्लास्टिक की थैलियाँ इधर-उधर फेंकने से क्या होगा ?

II लिखित

1. ठीक जगह पर (√) का निशान लगाइए।

क. आपके घर में कैसा कूड़ादान है ?

बिना ढक्कन वाला ☐ ढक्कन वाला ☐

ख. आपके घर से पानी की निकासी के लिए कैसी नालियाँ हैं ?

खुली नाली ☐ ढकी हुई नाली ☐

ग. आप खुली जगह पर कहीं भी थूक देते हैं।

कभी नहीं ☐ कभी-कभी ☐ हमेशा ☐

घ. आपके घर में मच्छर होते हैं।

हमेशा ☐ कभी-कभी ☐ कभी नहीं ☐

ड़. आप शौच के बाद राख या साबुन से हाथ साफ़ करते हैं।

हमेशा ☐ कभी-कभी ☐ कभी नहीं ☐

2. हमें अपने आस-पास को साफ़ रखने के लिए क्या-क्या करना चाहिए ?
3. कूड़ेदान को ढककर क्यों रखना चाहिए ?

4. नीचे लिखे वाक्यों में (√) या (X) का निशान लगाइए :

क. धुआँ हमारे जीवन के लिए जरूरी है। ( )
ख. हवा की कोई गंध नहीं होती। ( )
ग. सफ़ाई रखना सिर्फ़ सफ़ाई कर्मचारियों का काम है। ( )
घ. कूड़ा-कचरा नाली में बहा देना चाहिए। ( )
ङ. साफ़ हवा में साँस लेना हमारे स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी है। ( )
च. छोटे बच्चे भी आस-पास सफ़ाई रखने में सहायता कर सकते हैं। ( )

5. खाली जगहों में नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़कर उत्तर लिखिए :

1. घर के बाहर न फेंकें।
2. गंदे पानी में होते हैं।
3. कूड़ा मुझ में डालें।
4. गंदी जगह पर बैठती है।
5. जीवित रहने के लिए भोजन और पानी के अलावा ज़रूरी है।

1. क	च	रा	■
2.			
3.			
4.			
5.			

इकाई तीन

हम और हमारा पड़ोस

अध्यापक के लिए संकेत

यह इकाई क्यों

पिछली इकाई में बच्चे की परिवेश की परिधि को स्वयं की जानकारी से आगे उसकी आवश्यक्ताओं तक विस्तृत किया गया। अब बच्चे को 'स्वयं' से आगे बढ़कर 'हम' के दायरे में ले जाना आवश्यक है। इसके अनुभव के लिए सामाजिक मूल्यों के विकास के साथ-साथ उसे उसके रिश्तेदारों, पड़ोसियों तथा उसके आस-पास के प्रमुख स्थानों, भवनों आदि के बारे में जानना एवं समझाना जरूरी है। इन सभी अनुभवों के विकास के लिए अवलोकन, वर्गीकरण, समानता, विभिन्नता ढूँढ़ने आदि प्रक्रियाओं को विकसित करना भी जरूरी है।

इस इकाई के शिक्षण-अधिगम के बाद बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह :

- घर की आवश्यकता, उसके प्रकार एवं सफ़ाई के महत्त्व को जानेंगे।
- परिवार संरचना एवं सदस्यों में आपसी संबंधों को समझेंगे। साथ ही स्वयं, माता-पिता एवं अन्य सदस्यों की परिवार में भूमिका के महत्त्व को जान सकेंगे।
- विभिन्न प्रकार के व्यवसायों की जानकारी एवं सभी व्यवसायों से जुड़े व्यक्तियों के प्रति–सम्मान एवं एक दूसरे के प्रति निर्भरता के महत्त्व को समझेंगे।
- मिल-जुलकर कार्य करने के महत्त्व को जानेंगे।
- वस्तुओं में रंग, आकार, आक ति के आधार पर वर्गीकरण करने की क्षमता विकसित करेंगें।
- दिशाओं की जानकारी एवं उन्हें ढूँढ़ने के कौशल प्राप्त कर सकेंगे

इस इकाई में है क्या

इस इकाई में चार पाठ दिए गए हैं–'मेरा घर मेरे लोग', 'हमारे पड़ोसी', 'आओ मिलकर करें' तथा 'जब बगिया बनी कक्षा'। इस इकाई में परिवार, मित्रों एवं रिश्तेदारों का परिचय एक परिस्थिति का उदाहरण देकर किया गया है। हमारे पड़ोसी पाठ में विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण भी एक बच्चे के पड़ोस को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मिल-जुल कर कार्य करने के महत्त्व को पाठशाला में बाल दिवस मनवाकर तथा बच्चों द्वारा ही उसका क्रियान्वयन करवाकर प्रस्तुत किया गाया है। कक्षाकक्ष के बाहर किस तरह व्यक्तिगत एवं सामूहिक क्रियाकलाप करवाए जा सकते हैं, उसका उदाहरण आप 'जब बगिया बनी कक्षा' पाठ में पाएंगे।

आपकी भूमिका क्या है

- प्रत्येक बच्चे को अपने पड़ोस के बारे में बताने के लिए प्रेरित करें ताकि वह अपने पड़ोस के महत्त्व और ज़रूरतों को समझ सके।

  इस इकाई में विभिन्न व्यवसायों से जुड़े लोगों से परिचित करवाना एक उदाहरण मात्र है। इसका उद्देश्य एक दूसरे के प्रति निर्भरता का महत्त्व समझना है।

- यह प्रयास करें कि इकाई के सभी पाठों को जब भी पढ़ाएँ पाठ्यवस्तु को समग्र रूप में बच्चों के सामने रखें। उदाहरण के लिए अगर 'आओ मिलकर करें' पाठ की बात हो रही है तो विभिन्न व्यवसायों से जुड़े लोगों की बात जब भी आए तो बच्चों को उनके पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए पढ़ाएँ।

- सभी बच्चों से उनके पड़ोस के बारे में पूछें। उनके अपने मित्रों– पशु-पक्षियों आदि के बारे में भी पूछें। कुछ पक्षियों के घर (घोंसले) भी दिखाएँ।

- कक्षा-कक्ष के बाहर की क्रिया को 'जब बगिया बनी कक्षा' पाठ के द्वारा बताया गया है। जहाँ तक हो सके आप अपनी वास्तविक परिस्थितियों में ही यह क्रिया कराएं। इन क्रियाओं द्वारा बच्चों में उनके परिवेश के प्रति सजगता और संवेदनशीलता जैसे मूल्यों को विकसित करने में सहायता करें।

  भ्रमण के बाद बच्चों द्वारा इकट्ठी की गई चीजों का पुनः अवलोकन, वर्गीकरण अवश्य करवाएं। एक दूसरे समूह को सभी चीजें देखने का मौका दें। छोटी-सी रिपोर्ट भी तैयार करवा सकते हैं।

- किसी न किसी रूप से क्रियाओं और परिवेश में जुड़ाव होना चाहिए। जब भी बच्चों का मूल्यांकन करें तो पाठों में पीछे दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त परिवेश से जुड़े कुछ और भी प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

पाठ 8

मेरा घर मेरे लोग

मेरा घर मुझे बहुत प्यारा लगता है। इसमें मैं अपने दादा-दादी, माता-पिता और बहन के साथ रहता हूँ। यह हमारा परिवार है।

हमारे घर के बाहर एक छोटा-सा बगीचा है। बगीचे में एक बड़ा-सा आम का पेड़ है। इस पेड़ पर एक चिड़िया ने अपना घोंसला बना रखा है। यह घोंसला उसका घर है।
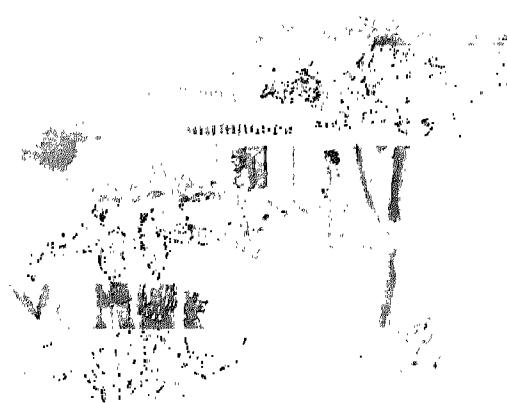
बगीचे में ही एक तरफ़ मेरे खरगोश 'मीकू' ने अपने रहने के लिए बिल बनाया हुआ है। बिल 'मीकू' का घर है।

हमारा प्यारा कुत्ता 'चीकू' भी हमारे साथ रहता है।

घर हम सभी के लिए बहुत जरूरी है। यह हमें सरदी, गरमी और बरसात से बचाता है।

कुछ घर ईंट, पत्थर और सीमेन्ट से बनाए जाते हैं। ऐसे घरों को पक्के घर कहा जाता है।
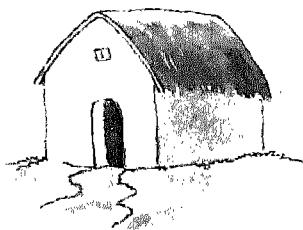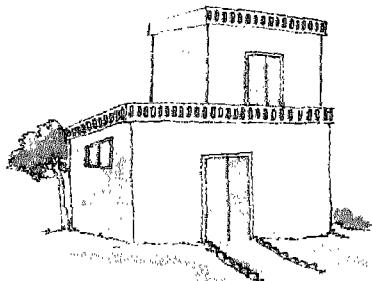
कुछ घर मिट्टी, लकड़ी, घास-फूस से बनाए जाते हैं। उन्हें कच्चे घर कहा जाता है।

हम सब मिलकर अपने घर को साफ़-सुथरा रखते हैं। हम अपनी सभी वस्तुओं को ठीक स्थान पर रखते हैं। घर का कूड़ा-कचरा ढके हुए कूड़ेदान में डालते हैं। कूड़ेदान का कचरा बाहर एक निश्चित जगह पर डालते हैं।

प्रतिदिन सुबह हम अपने घर के सब खिड़की-दरवाज़े खोल देते हैं। इससे घर में ताज़ी हवा आती है।

हमारे घर का मुख्य-द्वार पूर्व दिशा में है।

इससे सुबह-सुबह सूरज की किरणें हमारे घर में रोशनी फैलाती हैं। जानते हो, सूरज की गरमी से बीमारी फैलाने वाले बहुत से कीटाणु मर जाते हैं।
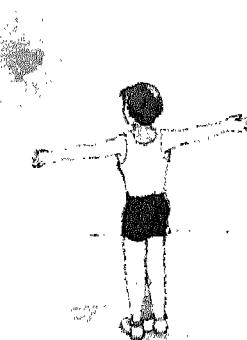
घर के सब काम हम सब मिल-जुल कर करते हैं। मैं अपना बस्ता, कपड़े, जूते और खेलने की चीज़ों को ठीक जगह पर रखता हूँ। दीदी भी मेरी सहायता करती है। दीदी खाना बनाने में माँ की सहायता करती है।

छुट्टी वाले दिन, मैं पिताजी के साथ बगीचे की देख-भाल करता हूँ। हमारा कुत्ता 'चीकू' किसी भी अनजान व्यक्ति या जानवर को घर के अंदर नहीं आने देता। वह उन पर भौंकने लगता है।

मेरे दादी और दादाजी हमें बहुत प्यार करते हैं। वे मेरे पिताजी के माता-पिता हैं। दादीजी हमें बहुत-सी कहानियाँ सुनाती हैं। दादाजी हमें नई-नई बातें बतातें हैं।

गरमियों की छुट्टियों में मेरे ताई-ताऊ जी, चाचा-चाची जी, बुआ-फूफा जी और उन सबके बच्चे भी हमारे घर आते हैं। उन दिनों हमें मिलकर रहना बहुत अच्छा लगता है।

कभी-कभी छुट्टियों में हम अपने नानी-नाना जी के घर भी जाते हैं। वे मेरी माँ के माता-पिता हैं। वहाँ हमारे मामी-मामा जी और उनके बच्चे भी रहते हैं। पास ही मेरी मौसीजी का परिवार रहता है।

यह सब हमारे रिश्तेदार हैं। हम सब शादियों तथा त्योहारों पर भी इकट्ठे होते हैं।

आप इन्हें क्या कहकर पुकारते हैं ? लिखिए :

पिताजी के बड़े भाई ....

माताजी के भाई ....

पिताजी के छोटे भाई ....

माताजी की बहन ....

पिताजी की बहन ....

माताजी की माताजी ....

हमने क्या सीखा

I मौखिक

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. घर हमारे लिए क्यों जरूरी है ?
2. कच्चा घर किन-किन चीज़ों से बनाया जाता है ?
3. सुबह-सुबह घर के खिड़की-दरवाजे क्यों खोल देने चाहिएं ?
4. आप अपने घर को साफ़ रखने के लिए क्या-क्या करते हैं ?

II लिखित

1. रेखा खींचकर जोड़े बनाइए :

2. कच्चे घर और पक्के घर में अंतर बताइए।
3. पक्षी अपना घोंसला किन-किन चीज़ों से बनाते हैं ?
4. आपके परिवार में कौन-कौन हैं ?
5. खरगोश की तरह बिल में और कौन रहता है ?

III कुछ करने के लिए

1. आपके घर का मुख्य द्वार किस दिशा में है ? अपने माता-पिता से पूछिए। कक्षा में सब मित्रों को बताइए।
2. अपने घर का चित्र कॉपी में बनाइए, उसमें रंग भी भरिए।

3. चित्र देखिए और अन्य तीन
   दिशाओं के नाम लिखिए :

4. किसी पक्षी के घोंसले का चित्र बनाइए।
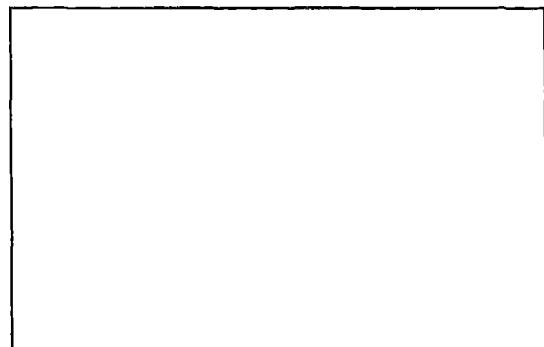
5. कविता याद कीजिए

इक चिड़िया के बच्चे चार
घर से निकले पंख पसार

पूरब से पश्चिम को जाते
उत्तर से दक्षिण को आते

घूम-घाम सब घर को आए
माता को ये वचन सुनाए

देख लिया हमने जग सारा
अपना घर है सबसे प्यारा

पाठ 9

हमारे पड़ोसी

हमारे घर के आस-पास बहुत से घर हैं – कुछ कच्चे, कुछ पक्के। इन घरों में हमारी ही तरह बहुत से परिवार रहते हैं – कुछ छोटे और कुछ बड़े।
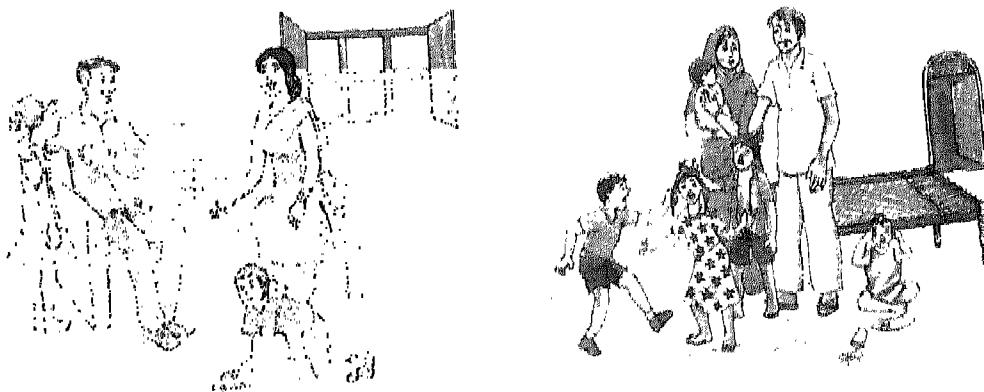
हमारे घर की दाईं ओर राहुल अपने माता-पिता के साथ रहता है। राहुल के पिता दरज़ी हैं। उसकी माँ घर की देखभाल करती है। राहुल पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है।

हमारे घर की बाईं ओर रहने वाले परिवार में छह सदस्य हैं। इस परिवार की सबसे बड़ी लड़की का नाम 'रमा' है। रमा दीदी कॉलिज में पढ़ती हैं। इनके पिता पुलिस विभाग में काम करते हैं। रमा दीदी के तीनों छोटे भाई-बहन अभी पाठशाला में पढ़ाई कर रहे हैं।

हमारे घर के आस-पास रहने वाले अन्य लोग भी अलग-अलग जगह पर काम करते हैं। ये सब हमारे पड़ोसी हैं।

आपके घर के दाईं और बाईं ओर रहनेवाले परिवारों के सदस्य क्या-क्या काम करते हैं ? नीचे सूची बनाएं :

बाईं ओर का परिवार		**दाईं ओर का परिवार**	
सदस्य	**काम**	**सदस्य**	**काम**
________	________	________	________
________	________	________	________
________	________	________	________

हम सब पड़ोसी मिल-जुल कर रहते हैं। हम सब मिलकर सभी त्योहार मनाते हैं। हम एक दूसरे के परिवार की शादियों में भी शामिल होते हैं। ज़रूरत के समय हम एक दूसरे की मदद भी करते हैं।

आप अपने पड़ोसियों के साथ मिल-जुल कर कौन-कौन से त्योहार मनाते हैं ? उनके नाम लिखिए।

________________ ________________

________________ ________________

इस बार तो बैसाखी के त्योहार पर हम सब एक साथ मेला देखने गए थे।

हमें मेला बहुत अच्छा लगा। वहाँ पर हमने तरह-तरह के खेल खेले। मेले में कई तरह की दुकानें लगी थीं। हमने मेले में मिठाई खाई। मिठाई हमने उन्हीं दुकानों से खरीदी जहाँ उसे ढककर रखा गया था। गुब्बारे और खिलौने भी खरीदे। झूला भी झूले।

हमारे घर से लगभग दस घर छोड़कर दो भवन हैं। उनमें से एक है अस्पताल। दूसरी इमारत में डाकघर है। पास ही कुछ दुकानें हैं। इन दुकानों से हम अपनी रोज़ की ज़रूरत की वस्तुएँ खरीदते हैं।

हमारे घर के सामने एक पार्क भी है। हम यहाँ शाम को अपने पड़ोस के बच्चों के साथ खेलते हैं। इस पार्क में फूलों के बहुत से पौधे लगे हैं। खेलते समय हम उन पौधों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते। किसी को फूल भी नहीं तोड़ने देते। इस पार्क में सुबह और शाम बहुत लोग सैर के लिए भी आते हैं।
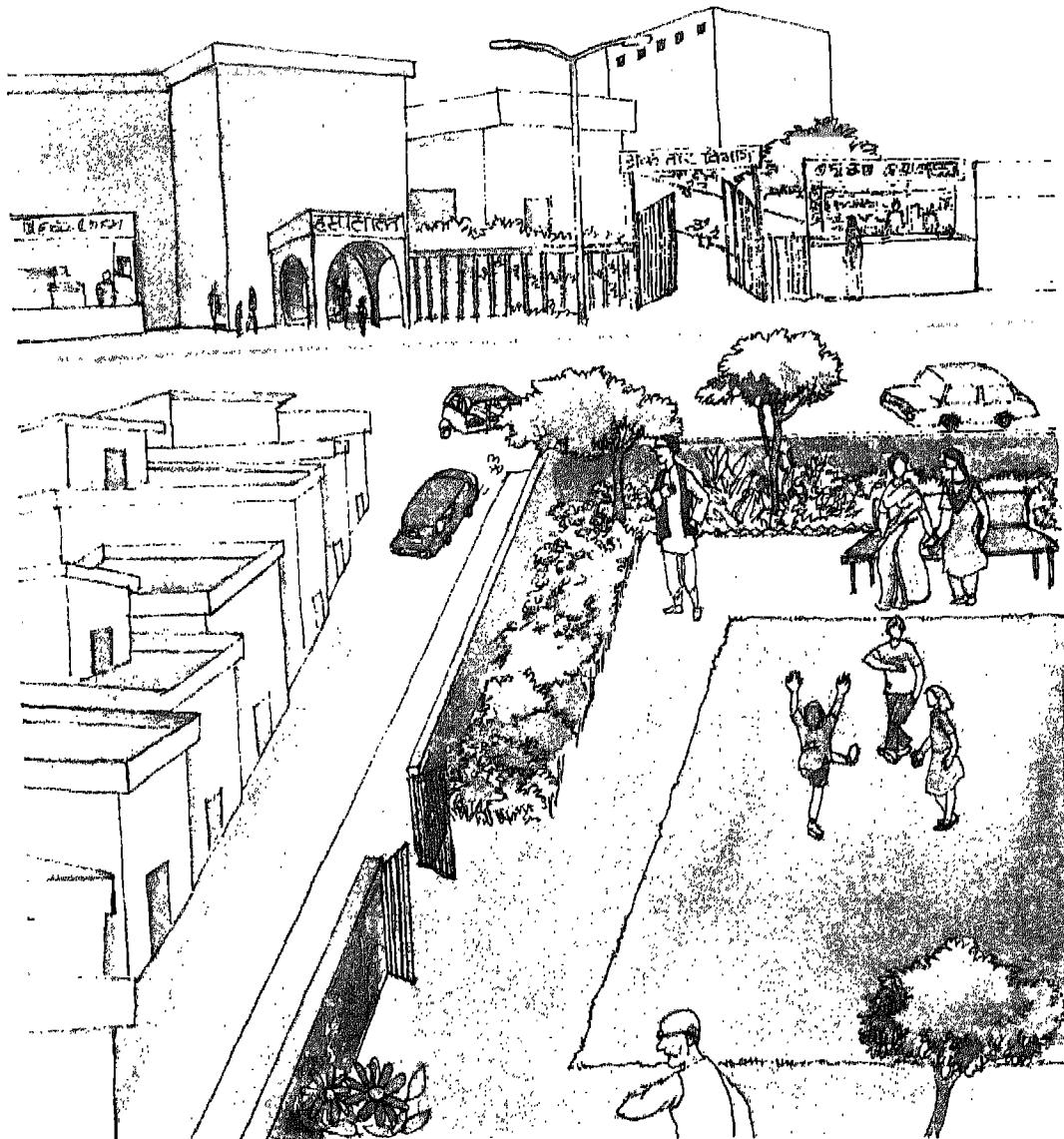
हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. बीमार पड़ने पर हम कहाँ जाते हैं ?
2. लकड़ी का दरवाज़ा कौन बनाता है?
3. मोची हमारी किस तरह मदद करता है ?
4. हम डाकघर को कैसे पहचानते हैं ?
5. हम मिठाइयाँ कहाँ से खरीदते हैं ?

II लिखित

1. नीचे दी गई सूची देखिए और उनके सामने दी गई जगह पर (√) लगाइए जो आपके पड़ोस में है :

क. पंचायतघर ☐

ख. दुकान/दुकानें ☐

ग. डाकघर ☐

घ. पार्क ☐

ड़. बैंक ☐

च. पाठशाला ☐

छ. अस्पताल ☐

ज. पुलिस चौकी ☐

झ. बस अड्डा ☐

2. चित्रों को देखकर उनके कार्यों से मिलाएँ :

क. मरीज़ों की देखभाल करना

ख. जूते बनाना
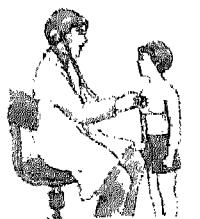
ग. खेती करना

घ. चिट्ठी/पत्र बाँटना

ङ. कपड़े सिलना

3. नीचे लिखे व्यक्तियों के काम करने की जगह छाँटकर लिखिए :
बस अड्डा, बगीचा, पाठशाला, दुकान

व्यक्ति	**काम करने की जगह**
माली	________________
दुकानदार	________________
अध्यापक	________________
कुली	________________

4. शब्द ढूँढ़िए

डा	न	ट	र
क	पा	मा	मा
घ	र्क	ट	पँ
र	च	र	खा

III कुछ करने के लिए

1. अपने पड़ोस में रहने वाले लोगों से मिलिए। उनसे पता कीजिए कि वह क्या काम करते हैं।
2. अभिनय कीजिए।

   क. डॉक्टर का

   ख. अध्यापिका का

   ग. दुकानदार का

   घ. डाकिए का

पाठ 10

आओ मिलकर करें

पाठशाला के बच्चे आज सुबह से बड़े खुश नज़र आ रहे हैं। हों भी क्यों नहीं। आज महीने का तीसरा शनिवार है। पाठशाला में बालसभा होनी है। सभी
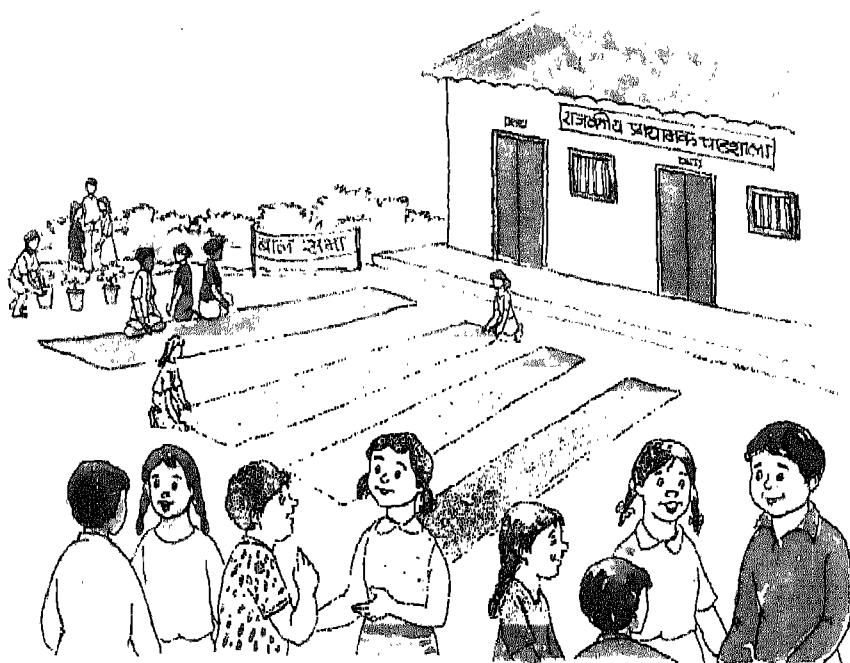
कक्षाओं ने पिछले महीने जो कार्य किया था, बालसभा में उसे सबके सामने बताना है।

कक्षा तीन के बच्चों को पिछले महीने पाठशाला की सफ़ाई और रखरखाव का काम दिया गया था। बच्चे छोटे अवश्य थे परन्तु उत्साह की कमी नहीं थी। उनकी अध्यापिका ने उन्हें बताया था कि कोई भी कार्य यदि मन लगाकर किया जाए तो मुशकिल नहीं होता।

सबसे पहले बच्चों ने पाठशाला का निरीक्षण किया और कार्यों की नीचे लिखी सूची बनाई :

1. पाठशाला की सफ़ाई का ध्यान रखना।
2. साफ़-सफ़ाई बनाए रखने के लिए पोस्टर बनाकर लगाना।
3. पौधों को पानी देने की व्यवस्था करना और नए पौधे लगाना।
4. कक्षा के कमरे की खिड़की का टूटा दरवाज़ा ठीक करवाना।
5. श्यामपट्ट (ब्लैकबोर्ड) पर रंग करवाना।

इन सभी कार्यों को ठीक से करने के लिए अध्यापिका की सहायता से पाँच समूह बनाए गए। प्रत्येक समूह को एक-एक कार्य दिया गया।
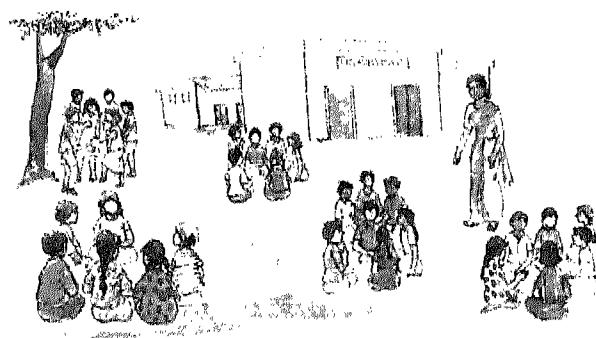
पहले समूह के बच्चों को सफ़ाई का ध्यान रखना था। उन्होंने फैसला किया कि वह प्रार्थना के पहले प्रतिदिन प्रत्येक कक्षा में जाएंगे। यदि कहीं सफ़ाई नहीं हुई तो अपनी अध्यापिका को बताएंगे। आधी छुट्टी के समय ध्यान रखेंगे कि सब बच्चे कूड़ा कूड़ेदान में डालें।
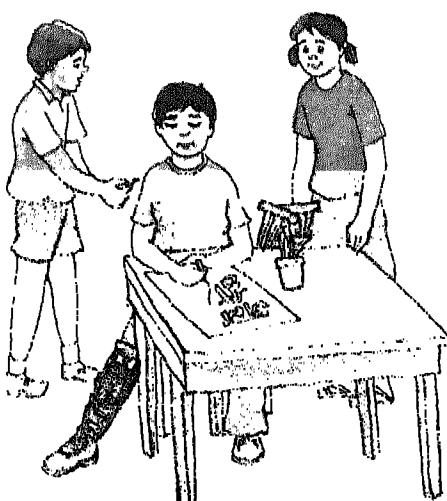
पोस्टर बनाने के लिए अच्छे सुलेख की आवश्यकता थी। इस कार्य के लिए मोहन को चुना गया। मोहन का दायाँ पैर पोलियो से ग्रस्त है। उसकी पेन्टिग में रुचि है। उसकी लिखाई भी बहुत अच्छी है। जब पोलियो की दवाई पिलाने के लिए गांव में प्रभातफेरी निकाली गई थी तब भी मोहन ने ही पोस्टर बनाए थे। राजू और गीता को भी इस काम में मोहन की मदद करने के लिए कहा गया।
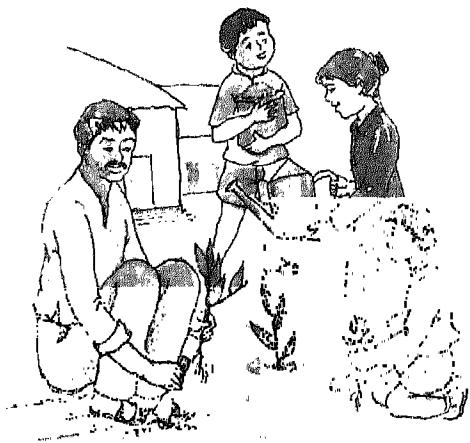
तीसरे समूह का काम था पौधों का ध्यान रखना। उन्होंने नए पौधे भी लगवाने थे। बच्चों ने एक दूसरे से बातचीत की कि नए पौधे कहाँ से लाए जाएँ। उन्हें लगाने में भी सहायता चाहिए थी। राहुल ने बताया कि उसके पिताजी पास के बगीचे में माली का काम करते हैं।

क्यों न उनसे सलाह ली जाए – सभी बच्चे एक साथ बोले। अगले ही दिन राहुल के पिताजी पाठशाला आए। उन्होंने पाठशाला के लिए कुछ पौधे दिलवा दिए। उन्होंने पौधे लगवाने में भी बच्चों की मदद की।

पौधों की देखभाल और पानी देने का काम इस समूह के बच्चों ने मिल-जुल कर करना शुरू कर दिया।

कक्षा के कमरे की टूटी खिड़की ठीक करवाने के लिए बढ़ई की आवश्यकता थी। चौथे समूह के अनिल और सलीम के घर के पास एक बढ़ई की दुकान है। बच्चों ने घर जाते समय बढ़ई काका से टूटी खिड़की की बात की।

बढ़ई-काका हँसने लगे। बच्चों की भोली सूरत देखकर बोले – ठीक है एक-दो दिन में औज़ार लेकर आऊँगा और टूटी खिड़की ठीक कर दूँगा। बच्चों ने इस काम के पैसे पूछे।

काका मुसकराए। कुछ देर बाद बोले – बहुत सारे। बच्चे सहम गए। काका हँसकर बोले – तुम जो भी नई बातें पाठशाला में सीखते हो, मुझे समय-समय पर बताते रहना। वही होगी मेरी फीस।

यह सुनकर दोनों ने काका को प्रणाम किया और खुशी-खुशी घर की ओर चल पड़े।

अगले दिन बढ़ई काका आकर खिड़की ठीक कर गए।
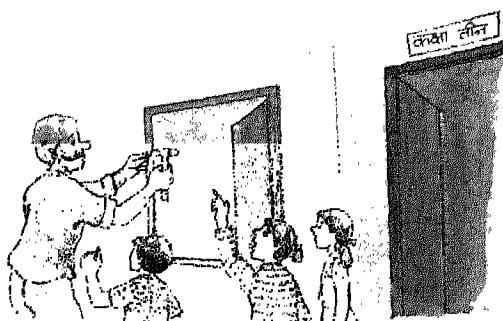
पाँचवें समूह के बच्चों ने अध्यापिका से श्यामपट्ट पर लिखा ठीक से न पढ़ सकने की बात की। अध्यापिका ने बताया कि इसे रंग करना होगा। बच्चे समझ नहीं पा रहे थे क्या करें ! रंग कहाँ से आएगा ? उसे कौन श्यामपट्ट पर लगाएगा ! तभी दूसरी कक्षा के अध्यापक वहाँ से निकले। बच्चों की बातचीत सुनकर वो रुक गए। उन्होंने बच्चों से वादा किया कि वे श्यामपट्ट पर रंग कर देंगे।

अगले दिन जब अध्यापिका कक्षा में पहुँची तो श्यामपट्ट खूब चमक रहा था।

इस तरह इस महीने की बालसभा तक बच्चों ने लगभग सारे काम पूरे कर लिए थे।

- पीने के पानी की टंकी के पास पोस्टर लगा दिए गए थे – 'जल ही जीवन है'; 'पानी के नल को खुला न छोड़ें'
- हर कक्षा के बाहर पोस्टर लगा था– 'कूड़ा कूड़ेदान में ही डालें'
- खिड़की का टूटा दरवाजा ठीक हो चुका था।
- बच्चों की मदद से मास्टर जी ने श्यामपट्ट पर काला रंग कर दिया था।
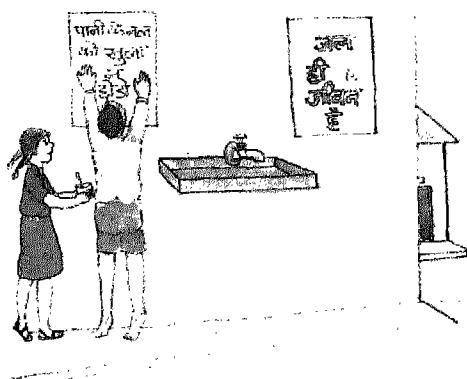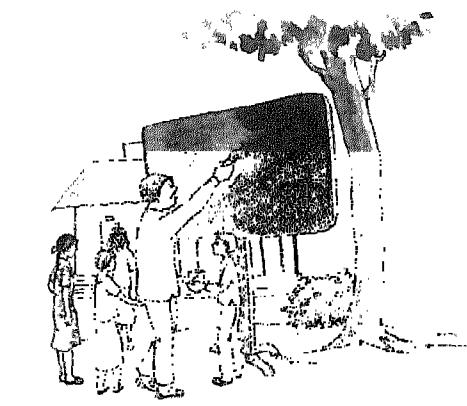
आज जब घंटी बजी तो बच्चे उछलते हुए बालसभा के लिए पहुँचे। कक्षा तीन के बच्चों ने अपने कार्यों की रिपोर्ट सुनाई। प्रधानाध्यापिका सहित सभी अध्यापक, अध्यापिकाओं ने उनके कार्यों की प्रशंसा की। पाठशाला के सब बच्चों ने भी खूब तालियाँ बजाकर बधाई दी।

सभा समाप्त होने पर सभी बच्चे खुशी-खुशी अपने घरों की ओर चल पड़े।

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. आपकी पाठशाला में बालसभा कैसे मनाते हैं ?
2. पाठशाला में कौन-कौन से कार्य मिल-जुल कर हो सकते हैं ?
3. माली हमारी कैसे सहायता करता है ?
4. हमें अपना आस-पास स्वच्छ क्यों रखना चाहिए ?
5. मिट्टी के गमले कौन बनाता है ?

II लिखित

1. मिल-जुल कर काम करने का कोई एक लाभ बताइए।

2. सही जोड़े बनाइए

क. बढ़ई	मिट्टी के बर्तन बनाना
ख. लोहार	लकड़ी का काम करना
ग. कुम्हार	बगीचे की देखभाल करना
घ. माली	लोहे का काम करना

3 नीचे दिए गए वाक्यों में (√) या (X) पर निशान लगाइए :

क. दरवाजा ठीक करवाने के लिए हम मोची के पास जाएँगे। ( )

ख. कपड़े दर्जी सिलता है। ( )

ग. सोने की चेन लुहार ठीक करता है। ( )

घ. गमले कुम्हार बनाता है। ( )

III कुछ करने के लिए

1. कक्षा को सुन्दर बनाने के लिए चार्ट कागज पर चित्र बनाइए और दीवार पर लगाइए।
2. विभिन्न व्यवसायों से जुड़े लोगों के चित्र इकट्ठे करें और उन्हें कॉपी में चिपकाएं। नीचे उस व्यवसाय का नाम भी लिखें।
3. पाठशाला में सफ़ाई रखने के लिए कक्षा में कुछ नियम बनाएं। उन्हें पोस्टर पर लिखें और पाठशाला में उचित जगह पर लगाएं। उनका पालन भी करें।

पाठ 11

जब बगिया बनी कक्षा

एक दिन अध्यापिका ने बच्चों को बताया कि कल उनकी कक्षा बगीचे में लगेगी।

सभी बच्चे बड़े हैरान हुए। एक दूसरे से पूँछने लगे– भला कक्षा वहाँ कैसे लगेगी? न तो वहाँ श्यामपट्ट है ! न बस्ता होगा और न ही मेज-कुर्सी। पढ़ाई होगी तो कैसे ?

दूसरे दिन पाठशाला पहुँचते ही सभी बच्चों ने जल्दी-जल्दी पंक्ति बना ली। एक कॉपी-पेंसिल हाथ में लेकर पहुँच गए सब बगीचे में अपनी अध्यापिका के साथ।

वहाँ पहुँचकर सभी बच्चे सुंदर-सुंदर पेड़-पौधे, रंग-बिरंगे फूलों और पत्तियों को देखकर खुश हो रहे थे।
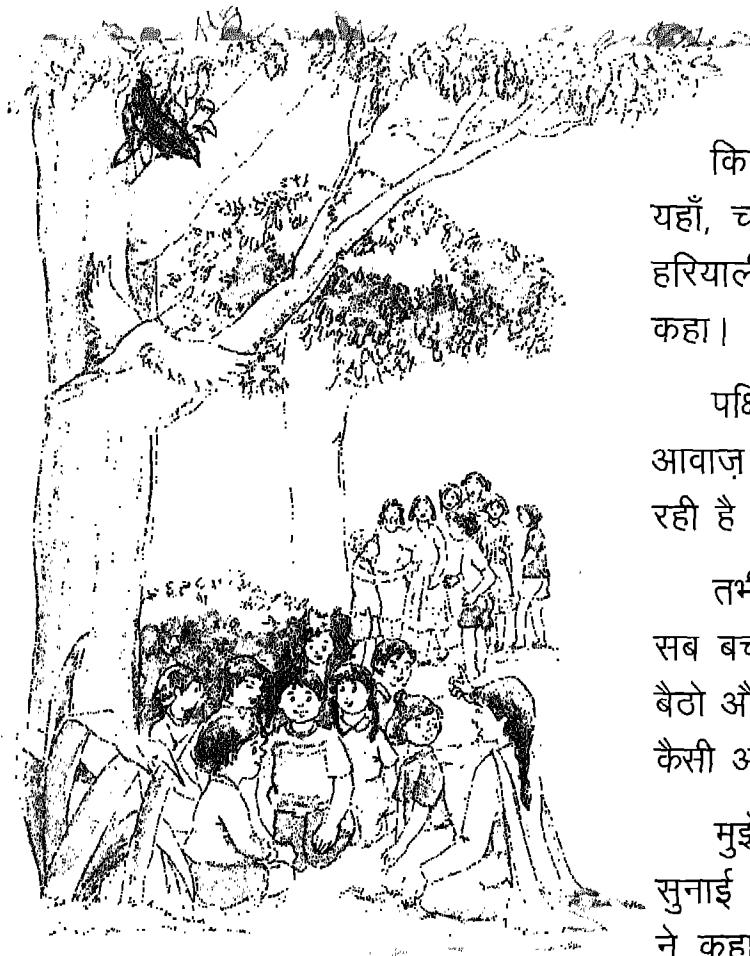
कितना अच्छा लग रहा है यहाँ, चारों तरफ हरियाली ही हरियाली है – एक बच्चे ने कहा।

पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ भी कितनी मधुर लग रही है – दूसरा बच्चा बोला।

तभी अध्यापिका ने कहा – सब बच्चे यहाँ मेरे पास आओ बैठो और ध्यान से सुनो, कैसी-कैसी आवाजें आ रही हैं।

मुझे तो चिड़िया की आवाज सुनाई दे रही है – एक बच्चे ने कहा।

तोते और कोयल की आवाज़ भी तो आ रही है – दूसरा बच्चा बोला।

भाई हमें तो पत्तों के हिलने की आवाज़ भी सुनाई दे रही है – कुछ बच्चे बोले।

अध्यापिका ने कहा– अच्छा अब तय करें कि हम सब क्या-क्या करेंगे

सबसे पहले सभी घेरे में बैठेंगे और 'एक दो', 'एक दो' गिनती बोलेंगे। जैसे पहला बच्चा बोलेगा 'एक', दूसरा 'दो', तीसरा फिर 'एक'.......। 'एक' बोलने वाले बच्चे 'एक' समूह में रहेंगे और 'दो' बोलने वाले बच्चे दूसरे समूह में।

पहले समूह के बच्चे बगिया में पाँच पौधों को ध्यान से देखेंगे और उन पौधों के नाम पता करेंगे :

- इस समूह का प्रत्येक बच्चा उन पौधों के नाम तथा उनके भागों के नाम अपनी कॉपी में लिखेगा।
- पौधों के आस-पास गिरे उनके पत्ते, फूल और फल भी इकट्ठे करके लाएंगे।
- कोई भी बच्चा पौधों से कुछ तोड़ेगा नहीं।
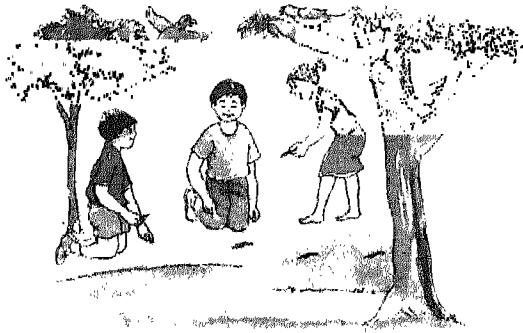
दूसरे समूह के बच्चे पाँच पक्षियों के, जो बगिया के अंदर दिखाई दे रहे हैं, नाम पता करेंगे। इन्हें देखने के लिए इस समूह के बच्चे धीरे-धीरे बगीचे में घूमेंगे और पक्षियों की आवाज़ भी सुनेंगे।

- जिन पक्षियों की आवाज़ें सुनी, उनके नाम भी लिखेंगे।
- जो भी पक्षी देखे, उनके शरीर के भागों के नाम और उनके रंग भी लिखेंगे।
- अगर उनके पंख वहाँ मिलें, तो उन्हें भी इकट्ठा करेंगे।

कुछ देर में सभी बच्चे अपने-अपने काम में जुट गए। कोई ध्यान से देख रहा था, तो कोई लिख रहा था। इसी तरह कोई पौधों की पहचान कर रहा था और कोई उनके नाम कॉपी में लिख रहा था।

सभी ने कुछ ही देर में अपना काम समाप्त कर लिया। अध्यापिका के आवाज़ देने पर सभी अपने सामान के साथ एक जगह इकट्ठे हो गए और

करने लगे अध्यापिका के निर्देश का इन्तजार।

अब पहला समूह इकट्ठी की गई सभी चीजों को अलग-अलग समूहों में रखेगा– अध्यापिका ने कहा।

इस तरह पहले समूह वालों की :

- पहली ढेरी होगी छोटे पत्तों की।
- दूसरी ढेरी होगी बड़े पत्तों की।
- रंग के अनुसार फूलों की भी ढेरियाँ होंगी, जैसे–पीले फूल, सफ़ेद फूल या लाल फूल। इस तरह जितने रंगों के फूल मिले होंगे, उतनी ही ढेरी बन जाएंगी।

प्रत्येक बच्चा बाद में एक पौधे का चित्र अपनी कॉपी में बनाएगा। उसके भागों के नाम भी लिखेगा
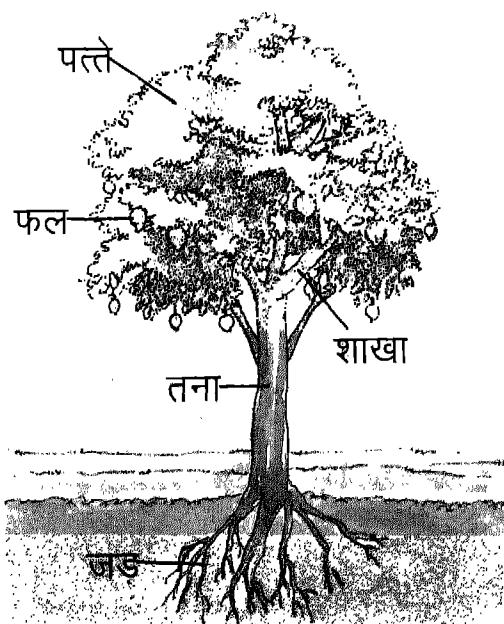
अब दूसरे समूह के बच्चों ने जो भी पक्षी बगिया में देखे हैं उनके नाम बताएंगे। हर बच्चा किसी एक पक्षी का चित्र अपनी कॉपी में बनाएगा और उसके शरीर के भागों के नाम भी अपनी-अपनी कॉपी में लिखेगा।
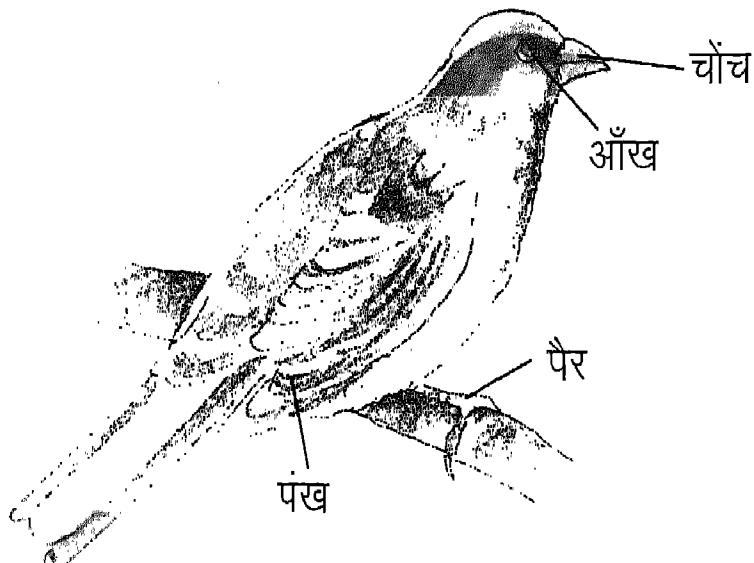
इस समूह ने यदि पक्षियों के पंख इकट्ठे किए हैं तो उनकी भी ढेरियाँ बनाएंगे जैसे–

- छोटे पंखों की ढेरी।
- बड़े पंखों की ढेरी।

इसी तरह सभी बच्चों ने मिल-जुल कर इकट्ठी की गई चीजों की तरह-तरह की ढेरियाँ बनाईं और बहुत-सी बातें एक दूसरे से सीखीं।

अरे यह क्या ! 12 बज गए चलो अब हम सब पाठशाला चलेंगे। इस सामान को भी साथ ले लें। इनके द्वारा हमें और भी बहुत कुछ सीखना है – अध्यापिका ने कहा।

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. पौधे के भागों के नाम बताइए।
2. किसी पक्षी के शरीर के भागों के नाम बताइए।
3. आपके घर के आस-पास लगे कोई दो पौधों के नाम बताइए।
4. काले रंग के पक्षी का नाम बताइए।
5. कबूतर के पंखों का रंग कैसा होता है ?

II लिखित

1. पौधों और पक्षियों में कोई दो समानताएँ बताइए।
2. बगिया में आपने क्या-क्या किया ?
3. आपने बगिया में कौन-कौन से पौधे देखे ? नाम लिखिए।
4. आपने बगिया में कौन-कौन से पक्षी देखे ? नाम लिखिए।
5. जोड़े बनाइए :

क.	पत्ती	सब्जी
ख.	पंख	गाय
ग.	सींग	पौधा
घ.	गोभी	पक्षी
ड़.	अमरूद	फल

III कुछ करने के लिए

1. कोई एक पौधा जो आपने देखा है उसका चित्र बनाइए। उसके भागों के नाम भी लिखिए। रंग भी भरिए।
2. अपने आस-पास पाए जाने वाले पेड़-पौधों की पत्तियाँ इक्ट्ठी करें। उन पत्तियों को छोटे से बड़े क्रम में अपनी कॉपी में लगाइए।

3. नीचे दिए गए दोनों चित्रों में समानताएँ और भिन्नताएँ ढूँढिए।

चित्र–1
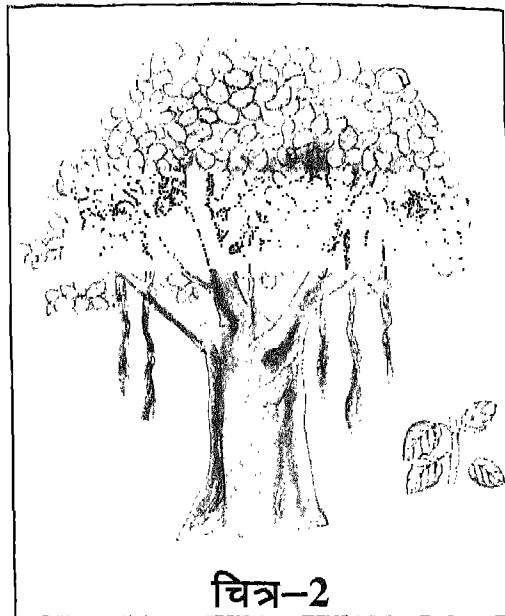
चित्र–2

4. कोई एक पक्षी जो आप हमेशा देखते हैं, उसका चित्र बनाइए। चित्र में रंग भी भरिए।
5. पक्षियों की आवाजों की नकल करिए और अपने साथी से पक्षी का नाम पूछिए।
6. नीचे दिए गए पक्षी के चित्र में उसके शरीर के भागों के नाम लिखिए। रंग भी भरिए।
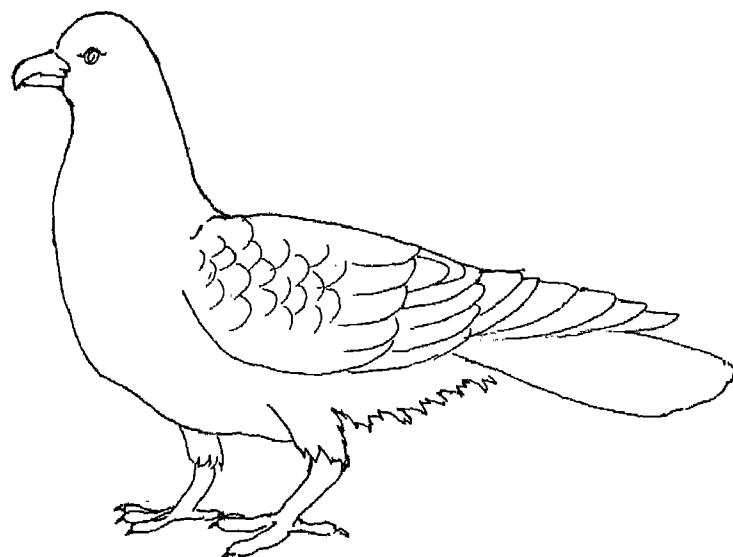
इकाई चार

कैसे पहुँचें - एक जगह से दूसरी जगह
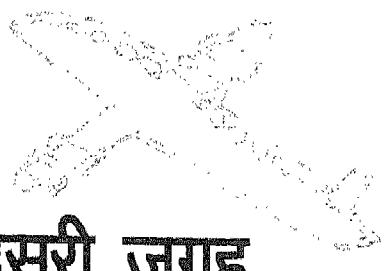
अध्यापक के लिए संकेत

यह इकाई क्यों

अब बच्चों को आस-पास के परिवेश से और आगे बढ़कर अनुभव देना जरूरी है। इस प्रक्रिया में बच्चे को स्थान ढूँढनें के कौशलों की आवश्यकता पड़ेगी। एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के साधन, सड़क पर चलने के नियमों आदि को जानना भी जरूरी होगा। इन सब बिंदुओं का समावेश इस इकाई में किया गया है।

इस इकाई के शिक्षण-अधिगम के बाद बच्चों से अपेक्षा की जाती है वह :

- अमानक चिह्नों की सहायता से किसी जगह को ढूँढनें की क्षमता एवं कौशल विकसित कर सकें। साथ ही उनके महत्त्व को भी जान सकें।
- सड़क पर चलने के नियमों एवं यातायात नियन्त्रक चिह्नों की जानकारी प्राप्त करें।
- सड़क के नियमों का पालन करने की आदत डालें।
- आने-जाने के साधनों (थल, जल, वायु) की जानकारी एवं उनके महत्त्व को समझें।
- पहिए के बदलते स्वरूप के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

इस इकाई में है क्या

इस इकाई में चार पाठ हैं – 'कैसे ढूँढें–कोई स्थान', 'सड़क पर चलने के नियम', 'यातायात के साधन' तथा 'पहिए की कहानी'। 'कैसे ढूँढें–कोई स्थान' पाठ में एक ग्रामीण परिवेश प्रस्तुत किया है जिसमें मुख्य स्थानों की सहायता से जगह ढूँढनें के कौशलों के विकास की बात की गई है। साथ ही मानचित्र पढ़ने के कौशलों की जानकारी दी है। 'सड़क पर चलने के नियम' पाठ की विषयवस्तु कक्षा-कक्ष के बाहर क्रियाकलाप के रूप में विकसित की गई है। इस पाठ में बच्चों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाकर वास्तविक स्थिति में सड़क के नियमों से परिचित करवाया है। तीसरे पाठ में बच्चे के परिवेश में ही उपलब्ध साधनों से लेकर विभिन्न प्रकार के साधनों (जल, थल पर चलने वाले तथा वायु में उड़ने वाले) से परिचित करवाया है। समय के साथ पहिए में आए विकासात्मक परिवर्तनों को कॉमिक चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिससे बच्चे को विषयवस्तु आसान होने के साथ-साथ रुचिकर भी लगे।

आपकी भूमिका क्या है

- इस इकाई का मुख्य शिक्षण बिंदु है बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में जहाँ तक हो सके वास्तविक अनुभव द्वारा जोड़ना। यदि ऐसा करना सम्भव न हो तो पाठशाला अथवा आस-पास में मिलती-जुलती परिस्थिति उत्पन्न कीजिए और उस उत्पन्न स्थिति में ही विभिन्न कौशल एवं क्षमताएँ विकसित करने का प्रयत्न करें।
- सभी बच्चों से उनके घर से पाठशाला तक आने वाली मुख्य जगहों के नाम पूछें। वे पाठशाला आने में जिन साधनों का प्रयोग करते हैं, उन पर बातचीत करें। उन्हें पाठ में दिए साधनों से जोड़कर पढ़ाएँ।
- सड़क पर चलने के नियमों में उनकी भूमिका पूछें। वे किन-किन बातों का ध्यान रखते हैं, चर्चा करवाएँ।
- बच्चों में किसी भी आदत का विकास एक बार में नहीं होता। इसके लिए समय-समय पर उनका निरीक्षण करना जरूरी है। ज़रूरत पड़ने पर उन्हें सुधार के लिए सुझाव देते रहिए।
- बच्चों को आपसे और आपस में चर्चा करने का मौका दीजिए। उन्हें अपने अनुभव सुनाने के अवसर भी दीजिए। पाठ से संबंधित अथवा अन्य शंकाएं पूछने के लिए भी प्रेरित कीजिए।
- मूल्यांकन, शिक्षण-अधिगम के दौरान करते रहिए क्योंकि मूल्यांकन आपके शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। इससे बच्चों का सतत् मूल्यांकन होगा। इस प्रक्रिया में एक बच्चे की तुलना दूसरे से नहीं करें बल्कि प्रत्येक बच्चे में उनकी क्षमता अनुरूप उन्नति जाँचें। मूल्यांकन की सहायता से आप अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में भी सुधार कर सकते हैं।

पाठ 12

कैसे ढूँढ़ें–कोई जगह

मेरा नाम अंकुर है। मैं सीतापुर गाँव में रहता हूँ। मेरा गाँव सड़क के एक ओर बसा हुआ है। सड़क की दूसरी ओर हमारे गाँव वालों के खेत हैं। हमने अपना घर खेत में ही बना रखा है। हमारे गाँव में एक पाठशाला भी है। मैं उसी पाठशाला में पढ़ता हूँ। मेरी पाठशाला का नाम राजकीय प्राथमिक पाठशाला है।
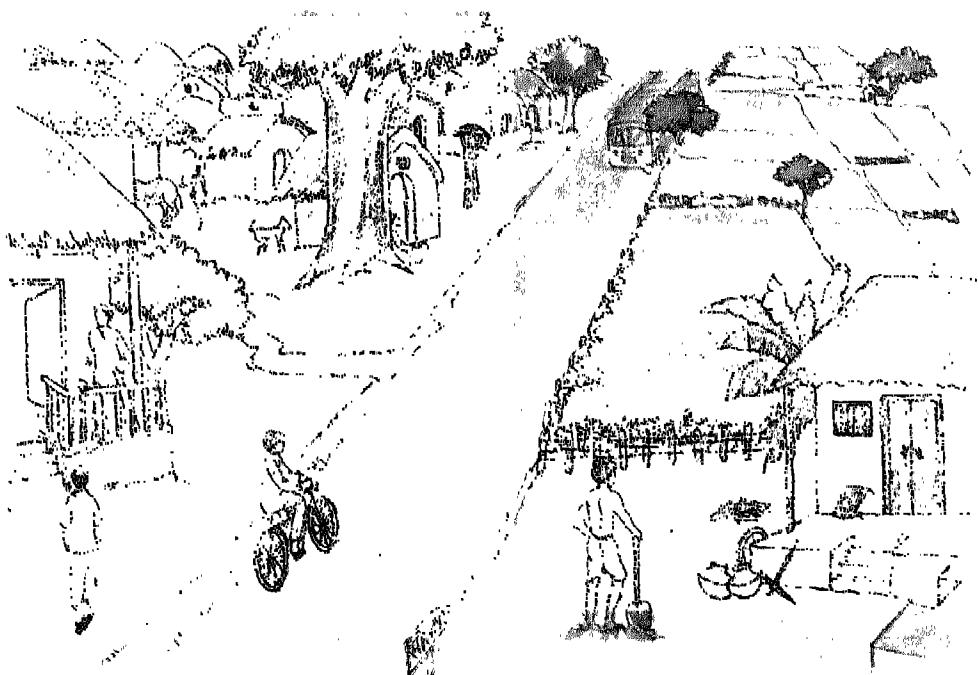
मैं प्रतिदिन अपने फौजी चाचा के साथ पाठशाला जाता हूँ।

पाठशाला पहुँचने के लिए हमें रोज सड़क पार करनी पड़ती है। इस सड़क पर बस और ट्रक भी आते-जाते हैं। इसलिए हम सड़क बड़ी सावधानी

से पार करते हैं। सड़क पार करते समय हमें पहले दाईं तरफ और फिर बाईं तरफ देखना चाहिए।

सड़क से पाठशाला तक हमें कई जगह से होकर निकलना पड़ता है। रास्ते में सबसे पहले दाईं ओर पीपल का एक पेड़ है। इस पेड़ के चारों ओर गोल चबूतरा बना है। यहाँ गाँव के लोग अपने खाली समय में बैठकर बातचीत करते हैं।

पीपल के पेड़ से रास्ता बाईं ओर मुड़ता है। यहाँ से बीस-पच्चीस कदम पर है एक छोटा-सा तालाब। इस तालाब में गाँव के पशु पानी पीते हैं।

कुछ दूर और चलकर, जब हम फिर दाईं ओर मुड़ते हैं तो वहीं पर है गाँव का पंचायत घर। पंचायत गाँव की बहुत सी ज़रूरतों जैसे–सफ़ाई, पानी और शिक्षा आदि का प्रबंध करती है।

पंचायत घर पार करने के बाद हम फिर दाईं ओर मुड़ते हैं। रास्ते में आता है एक छोटा सा नाला। नाले पर एक पुलिया बनी है। पुलिया पार करते ही सड़क के बाईं ओर हमारी पाठशाला है।

मेरे फौजी चाचा ने हमारे घर से पाठशाला तक का रास्ता ढूँढ़नें के लिए मानचित्र भी बनाया है। इस मानचित्र में उन्होंने रास्ते में पड़ने वाले मुख्य स्थानों के चिह्न बना दिए हैं। इनकी सहायता से कोई भी मेरी पाठशाला का रास्ता ढूँढ़ सकता है।

पता है मानचित्र पर चिह्न क्यों बनाए जाते हैं ?

मानचित्र तो छोटे से कागज पर बनाया जाता है। उस पर मुख्य जगह को दिखाने के लिए उनके छोटे चित्र बना देते हैं। इन छोटे चित्रों को हम चिह्न कहते हैं।

चाचा ने मुझे यह भी बताया कि मानचित्र पर बने चिह्नों की सहायता से हम कोई भी जगह आसानी से ढूँढ़ सकते हैं।

बड़े शहरों में अधिकतर बस्तियों के बाहर उनका मानचित्र लगा होता है। इसकी सहायता से कोई भी, बस्ती में जहाँ जाना चाहे, आसानी से पहुँच सकता है।
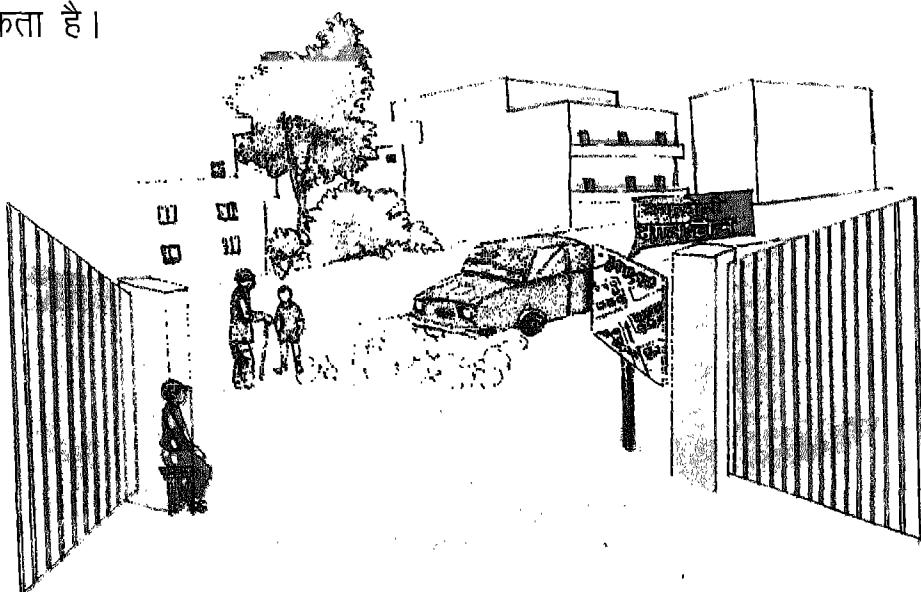
हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. आप जिस गाँव अथवा शहर में रहते हैं, उसका नाम बताइए।
2. आपके घर से स्कूल तक के रास्ते में आने वाले तीन मुख्य स्थानों के नाम बताइए।
3. शहरों में बस्ती के बाहर मानचित्र क्यों लगा होता है ?
4. सड़क पार करते समय हम किन-किन बातों का ध्यान रखते हैं ?

II लिखित

1. खाली जगह भरिए :

   क. हमारी पाठशाला का नाम.......................................है।

   ख. मानचित्र रास्ता.......................................में सहायता करता है।

   ग. गाँव में बिजली और पानी का इंतजाम.......................................करती है।

2. मानचित्र का कोई एक लाभ लिखो।
3. इस पाठ में घर से पाठशाला तक आने वाली जगहों को क्रम में लिखिए।
4. मानचित्र पर चिह्न क्यों बनाए जाते हैं ?
5. गाँव में पंचायत क्या-क्या काम करती है ?

III कुछ करने के लिए

1. अपने घर से पाठशाला तक का मानचित्र बनाइए। मुख्य जगहों के नाम भी लिखिए।
2. सामने दिए गए चित्र में मित्र के घर पहुँचने के कितने रास्ते हैं, ढूँढ़िए।
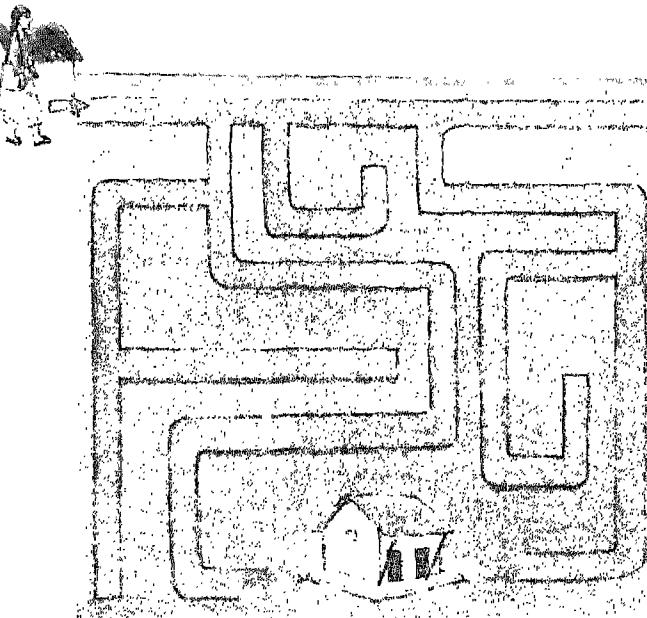
पाठ 13

सड़क पर चलने के नियम

पीटर गाँव की पाठशाला में पढ़ता है। आज पाठशाला की तरफ़ से बच्चे चिड़ियाघर जा रहे हैं। चिड़ियाघर गाँव के पास वाले शहर में है। सब बच्चों की तरह पीटर को भी चिड़ियाघर देखने की बहुत खुशी है। इसलिए पीटर ने तो दो दिन पहले से ही चिड़ियाघर जाने की तैयारी शुरू कर दी थी। कौन-सा थैला लेकर जाना है? क्या-क्या सामान चाहिए ? अपनी मनपसंद खाने की चीजें उसने पहले ही अपनी माँ को बता दी थीं।

चिड़ियाघर जाने का समय आ गया। बच्चे जल्दी ही पंक्ति बनाकर पाठशाला की बस में बैठ गए। बच्चों के साथ उनकी अध्यापिका भी जा रही है।
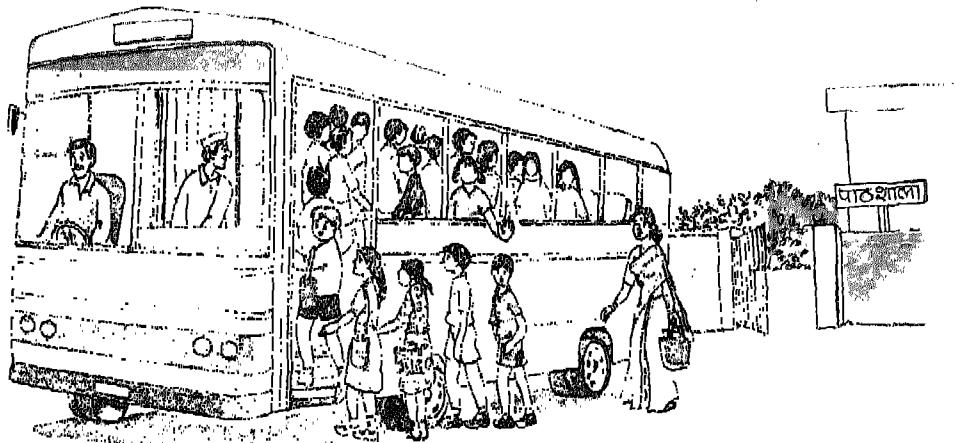
सभी बच्चों के बस में बैठने पर अध्यापिका ने समझाया–रास्ते में कोई भी बच्चा अपने शरीर का कोई भी अंग खिड़की के बाहर नहीं निकालेगा।

कुछ ही देर में बस चल पड़ी। परंतु यह क्या ? बस कुछ दूर चलकर रुक गई। सभी बच्चे उठ-उठकर देखने लगे। सड़क के एक तरफ लगी लाल

बत्ती दिखाई दे रही थी। बच्चों ने देखा, कुछ समय बाद हरी बत्ती होते ही बस फिर चल दी। रास्ते में कई बार ऐसा ही होता रहा।
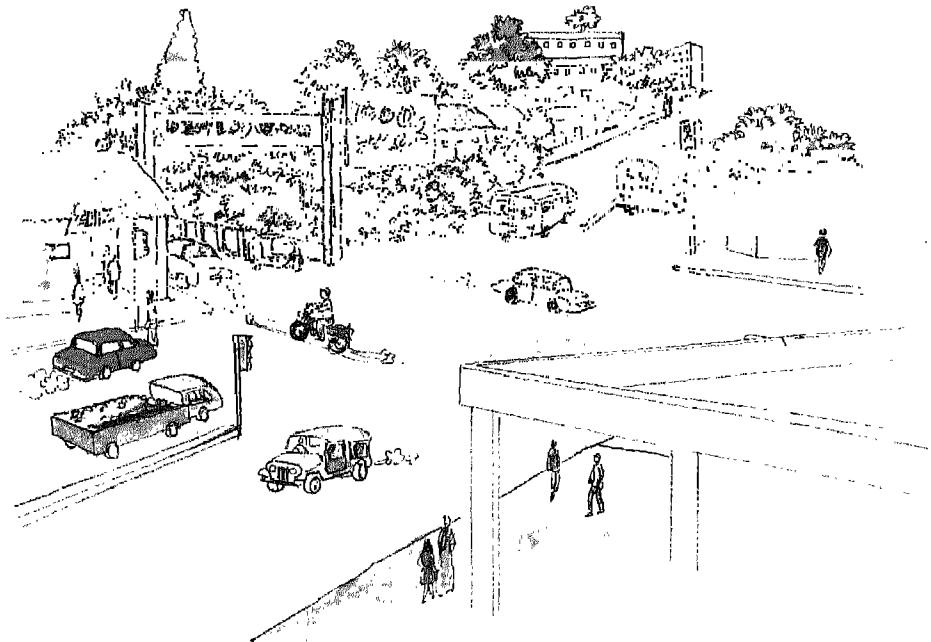
बच्चों ने अध्यापिका से कहा : ऐसे तो हमें पहुँचने में देर हो जाएगी।

अध्यापिका ने कहा : देर तो होगी, पर बस का रोकना जरूरी है। बस चालक ऐसा करके सड़क के नियमों का पालन कर रहा है। ये हमारी सुरक्षा के लिए जरूरी हैं। हम सबको भी सड़क के नियमों का पालन करना चाहिए, जैसे –
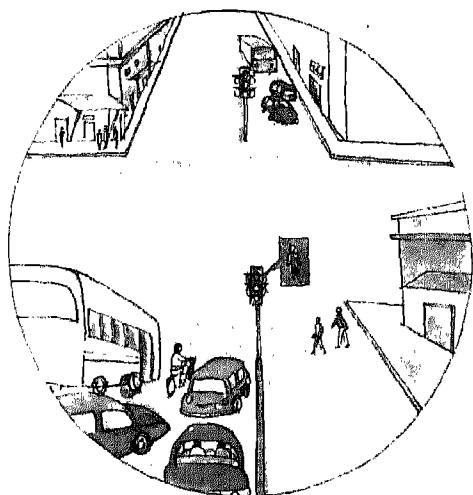
- लाल बत्ती होने पर रुको।
- हरी बत्ती होने पर ही चलो।
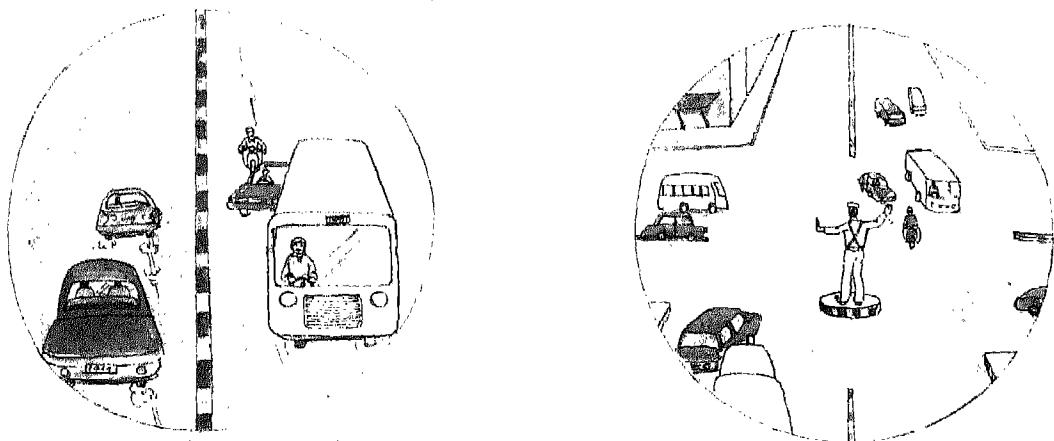
• वाहन को सड़क के बाईं तरफ चलाओ।

• चौराहे पर खड़ी ट्रैफ़िक पुलिस का संकेत मानो।

ऐसा करने से क्या होगा ? सभी बच्चों ने एकसाथ पूछा।

अध्यापिका ने समझाया–ऐसा करने से हम सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं से बच सकते हैं।

कुछ दूर चलकर बस फिर रुक गई। बच्चों ने बाहर झाँककर देखा। सामने रेल फाटक बंद हो रहा था।

अब तो और भी देर हो जाएगी। रेलगाड़ी तो पता नहीं कब आएगी– एक बच्चा बोला।

अध्यापिका ने फिर से बच्चों को समझाया– रेल फाटक भी हमारी सुरक्षा के लिए बनाए जाते हैं। जब फाटक बंद हो तो रेल-पटरी पार नहीं करनी चाहिए। इससे दुर्घटना हो सकती है।

तभी दूर से रेल के इंजन की सीटी की आवाज़ आई – कू-उ उ · · · । बच्चे बस के अंदर से बाहर देखने लगे। एक ओर से पटरी पर छुक-छुक करती रेलगाड़ी आ रही थी। रेलगाड़ी देखकर बच्चे बहुत खुश हुए।
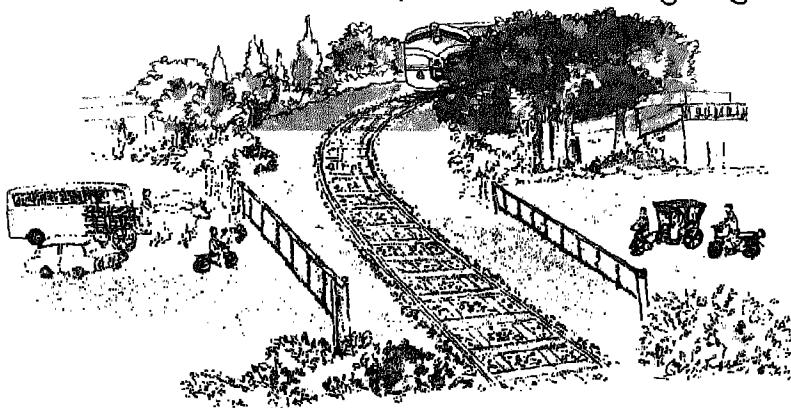
रेलगाड़ी के जाने के बाद रेल फाटक खुल गया। घर्र-घर्र करती बस फिर से चल पड़ी।

कुछ ही देर में बस चिड़ियाघर के सामने पहुँच गई। सभी बच्चे बस से उतरे और अध्यापिका के साथ खड़े हो गए। अध्यापिका ने सब बच्चों को बताया कि अब हमें सामने की सड़क पार करनी है। इसके लिए हमें थोड़ा पैदल चलकर चौराहे की तरफ जाना होगा।

चौराहे पर बच्चों ने देखा कि सामने सड़क पर काली-सफ़ेद पट्टियाँ बनी हुई हैं।
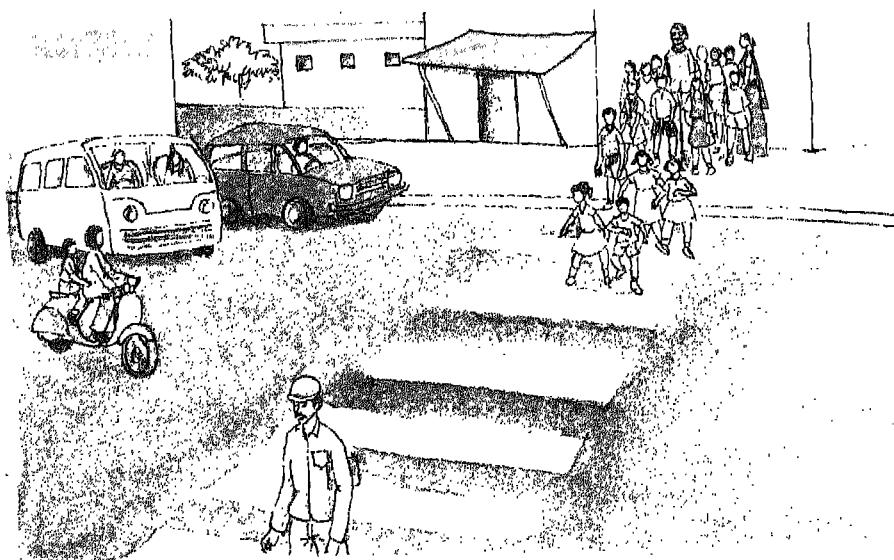
लोग उस पर से सड़क पार कर रहे हैं। बच्चों ने अध्यापिका से पूछा–ये सभी इन पट्टियों पर ही चलकर सड़क के उस पार क्यों जा रहे हैं ?

अध्यापिका ने बताया– सड़क पर बनी इन पट्टियों को ज़ेबरा क्रासिंग कहते हैं। सड़क पार करने के लिए इस पट्टी का प्रयोग करना भी सड़क के नियमों में आता है। लाल बत्ती होने पर जब वाहन रुक जाते हैं, तभी हमें सड़क पार करनी चाहिए। ऐसा करने से हम दुर्घटना से बच सकते हैं।

देखो, अब लाल बत्ती हुई है। अब हम सड़क को पार कर सकते हैं–अध्यापिका ने कहा। सभी बच्चों ने अध्यापिका के साथ ज़ेबरा क्रासिंग से सड़क पार की। चिड़ियाघर के अंदर पहुँचकर बच्चों ने हँसते-खेलते चिड़ियाघर देखा। चिड़ियाघर देखकर सभी बच्चे खुशी-खुशी अपने घर लौट आए।

हमने क्या सीखा

I **मौखिक**

1. सोचो, समझो और बताओ –

क. हमें सड़क के नियमों का पालन क्यों करना चाहिए ?

ख. पैदल चलने वालों को सड़क कहाँ से पार करनी चाहिए ?

ग. लाल बत्ती का संकेत होने पर वाहन क्या करते हैं ?

घ. सड़क पर पैदल चलने वालों को किन नियमों का पालन करना चाहिए ?

II **लिखित**

1. नीचे दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :
(ज़ेबरा क्रासिंग, रेल फाटक, हरी बत्ती, बत्तियों, दुर्घटना)

क. चौराहे पर लगी ....का संकेत मानो।

ख. पैदल चलने वाले सड़क पार करते समय .... का प्रयोग करते हैं।

ग. जब .... बंद हो तो रेल पटरी पार नहीं करनी चाहिए।

घ. सड़क के नियमों का पालन न करने पर .... हो सकती है।

ड़. वाहन .... होने पर ही चलते हैं।

2. नीचे दिए वाक्यों पर (√) अथवा (X) का निशान लगाइए –

क. लाल बत्ती होने पर वाहन चलते हैं। ☐

ख. सड़क पर काली-सफ़ेद पट्टियों को
ज़ेबरा-क्रासिंग कहते हैं। ☐

ग. वाहन सड़क के बाईं तरफ ही चलाने चाहिएं। ☐

घ. दुर्घटना से बचने के लिए सड़क के नियमों
का पालन करना चाहिए। ☐

ड़. बस की खिड़की से सिर बाहर निकालकर
देख सकते हैं। ☐

3. रेल फाटक बंद होने पर रेल पटरी पार क्यों नहीं करनी चाहिए ?
4. सड़क पर चलने के नियमों की सूची बनाइए।

5. जोड़े बनाइए :

लाल बत्ती	काली-सफ़ेद पट्टियाँ
ट्रैफिक पुलिस	रुको
रेल फाटक	चौराहा
हरी बत्ती	रेलगाड़ी
ज़ेबरा क्रासिंग	चलो

III कुछ करने के लिए

1. सड़क पर पैदल पार करने वाली जगह को ज़ेबरा क्रासिंग क्यों कहते हैं? कक्षा में चर्चा करें।
2. ट्रैफ़िक लाइट का चित्र बनाइए। रंग भी भरिए।
3. सड़क के नियमों का चार्ट बनाकर कक्षा में लटकाइए।

पाठ 14

आने जाने के साधन

हम सबके मित्र और संबंधी होते हैं। इनमें से कुछ तो हमारे ही गाँव या शहर में रहते हैं। कुछ दूसरे स्थानों पर रहते हैं। कभी-कभी हम उनसे मिलने जाते हैं। वे भी हमसे मिलने आते हैं।

हम अपने गाँव या शहर में रहने वाले मित्रों से मिलने जाने के लिए जिन साधनों का उपयोग करते हैं, उनमें से कुछ के चित्र नीचे दिए गए हैं इन्हें देखिए और पहचानिए।
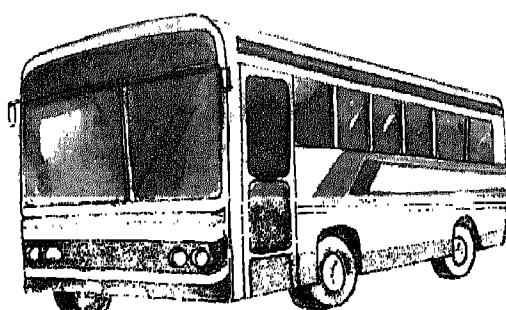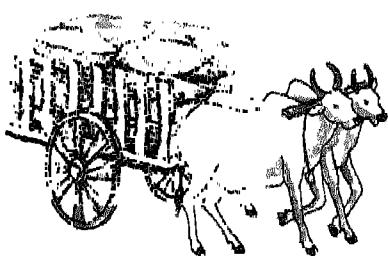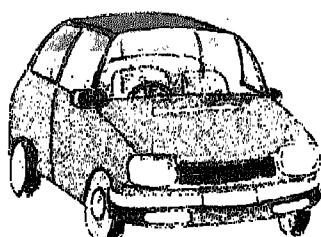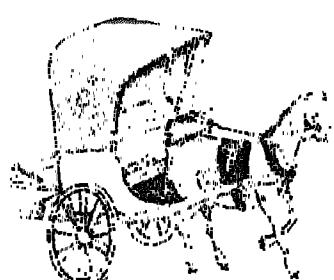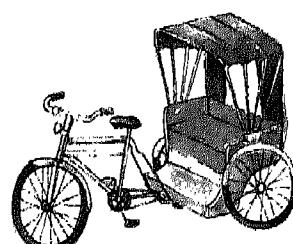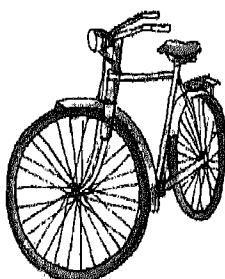
अपने शहर या गाँव में एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए आप किन-किन साधनों का उपयोग करते हैं? सूची बनाइए :

_______________ _______________

_______________ _______________

_______________ _______________

आपके कुछ संबंधी दूर के स्थानों पर भी रहते होंगे। उनसे मिलने जाने के लिए आप जिन साधनों का उपयोग कर सकते हैं, उनमें से कुछ के चित्र नीचे दिए हैं। इन्हें देखिए और पहचानिए।
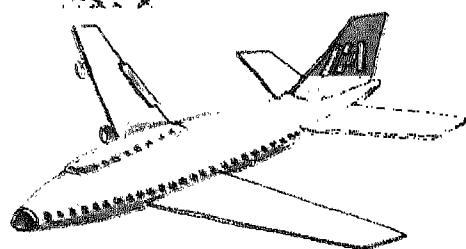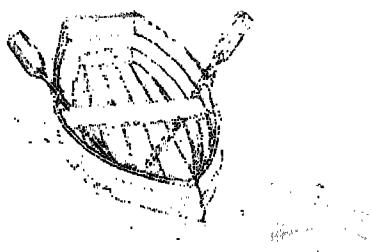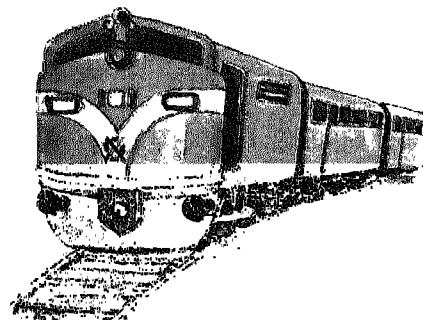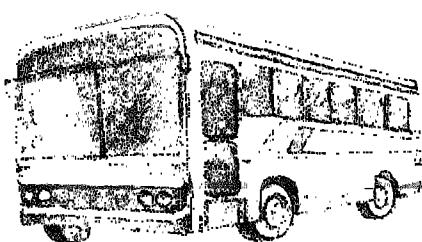
दूसरे शहर या गाँव जाने के लिए आप जिन साधनों का उपयोग करते हैं, उनकी सूची बनाइए :

_______________ _______________

_______________ _______________

_______________ _______________

आपमें से कुछ के संबंधी बहुत दूर रहते होंगे। कई लोगों के संबंधी दूसरे देशों में भी रहते होंगे। वे भी एक-दूसरे से मिलने के लिए आते-जाते होंगे। बहुत दूर जाने के लिए हम कई साधनों का उपयोग करते हैं, जैसे– बस, रेलगाड़ी, हवाई जहाज और समुद्री जहाज।

बहुत दूर जाने के लिए आप किन-किन साधनों का प्रयोग करते हैं ? सूची बनाइए :

_______________ _______________

_______________ _______________

इन साधनों से हम यात्रा ही नहीं करते, बल्कि सामान लाने ले जाने के लिए भी उपयोग करते हैं। कुछ साधन केवल सामान ढोने के लिए ही होते हैं। इन्हें इस चित्र में देखिए और पहचानिए।
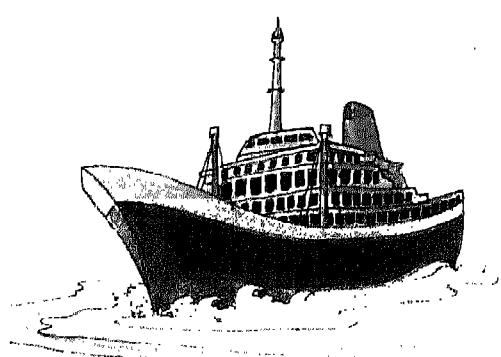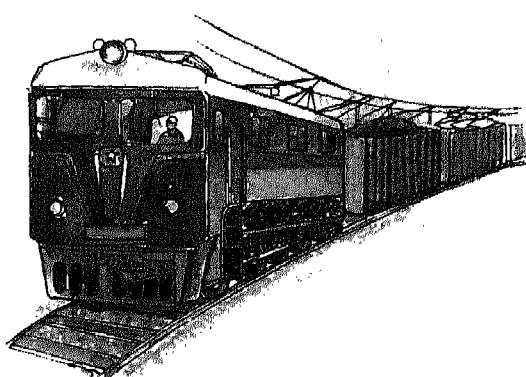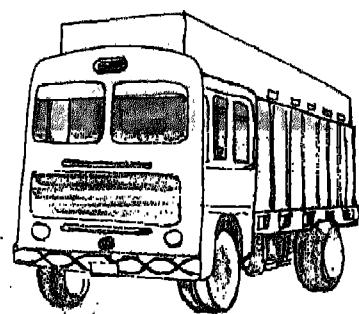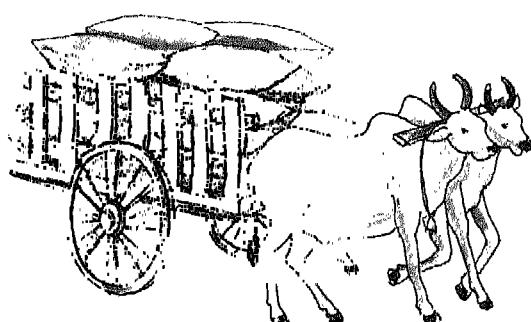
आपके गाँव या शहर में सामान एक ज़गह से दूसरी ज़गह ले जाने के लिए कौन-से साधन उपयोग में लाए जाते हैं ? सूची बनाइए :

_______________ _______________

_______________ _______________

_______________ _______________

हमने जाना कि कुछ वाहन जमीन पर चलते हैं, कुछ हवा में उड़ते हैं और कुछ पानी में चलते हैं। इन सबको हम **यातायात के साधन** कहते हैं।

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. बताइए ये वाहन कहाँ पर चलते हैं :
   बस, कार, हवाई जहाज, साइकिल, रिक्शा, नाव, हैलीकाप्टर, बैलगाड़ी, ऊँटगाड़ी
2. सामान ढोने वाले साधनों के नाम बताइए ?

II लिखित

1. सूची बनाइए :

जमीन पर चलने वाले वाहन	पानी में चलने वाले वाहन	आसमान (हवा) में उड़ने वाले वाहन
______________	______________	______________
______________	______________	______________

2. दो पहिए वाले वाहनों के नाम लिखिए।
3. अपने सबसे प्रिय वाहन पर पाँच वाक्य लिखिए।
4. यातायात के साधनों से होने वाली कोई एक हानि बताइए।

5. जोड़े बनाइए :

रेलगाड़ी	सड़क
बस	पटरी
हवाई जहाज	पानी
नाव	आसमान

6. रिक्त स्थान भरिए :

क. साइकिल बैलगाड़ी से .... चलती है।

ख. हवाई जहाज पानी के जहाज से .... चलता है।

ग. बस रेल-गाड़ी से .... चलती है।

घ. रिक्शा तांगे से .... चलती है।

III कुछ करने के लिए

1. विभिन्न प्रकार के वाहनों के चित्र इकट्ठे कीजिए और उन्हें गति के बढ़ते क्रम में कॉपी पर चिपकाइए। नीचे उनके नाम भी लिखिए।
2. आपको जो वाहन सबसे अच्छा लगता है, उसका चित्र बनाइए। रंग भी भरिए।
3. वाहनों से संबंधित गीत और कविताएँ इकट्ठी कीजिए।
4. मित्रों के साथ वाहन के रूप में पात्र बनकर अभिनय (रोल-प्ले) करिए।

पाठ 15

पहिए की कहानी

पिछले अध्याय में हमने यातायात के साधनों के बारे में पढ़ा। उनमें से कुछ साधन तेज़ चलने वाले हैं और कुछ धीरे। कुछ जमीन पर चलते हैं, कुछ जल में और कुछ हवा में भी उड़ते हैं।

ज़मीन पर और हवा में चलने वाले वाहनों में एक चीज़ ऐसी है, जो सभी में है। ज़रा सोचो, वह क्या है ?

आप ने ठीक समझा– वह है 'पहिया'।

आप ने देखा होगा कुछ वाहनों में पहिया छोटा होता है तो कुछ वाहनों में बड़ा। कुछ वाहनों में दो पहिए होते हैं तो कुछ में चार। कुछ वाहनों में तो चार से भी अधिक पहिए होते हैं।

परंतु जो पहिया हम आज देख रहे हैं वह हमेशा ऐसा नहीं था। पहिए के इस रूप में आने तक की कहानी बहुत लंबी है। आइए आज उसके बारे में जानें।

बहुत पुरानी बात है, मनुष्य के पास एक जगह से दूसरी जगह जाने तथा अपना सामान ले जाने का कोई साधन नहीं था।

वह पैदल ही चल कर एक जगह से दूसरी जगह जाता था।
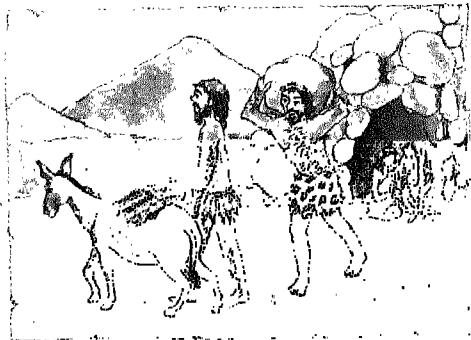
अपना सामान या तो अपनी पीठ पर लाद कर ले जाता था या किसी जानवर की पीठ पर।

परंतु बहुत भारी सामान जानवरों द्वारा भी नहीं ले जा पाता था।

कभी-कभी वह भारी सामान को लुढ़का कर ले जाता था। परंतु भारी सामान लुढ़ककर भी दूर तक नहीं जा सकता था।
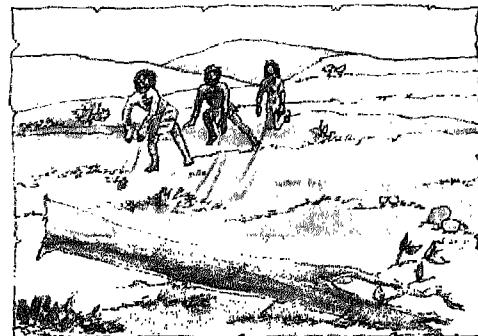
परंतु उसने पाया कि पेड़ के मोटे गोल तने जरा-सा ही धक्का देने से दूर तक लुढ़क जाते थे।

अब उसने पेड़ के तने से कुछ गोल टुकड़े काटे। उन्हें लुढ़काया। वे दूर तक लुढ़क गए।

फिर उसने पेड़ के तने के दो गोल टुकड़ों को एक लंबी लकड़ी से जोड़ा और एक गाड़ी बनाई।

उसने जिन गोल टुकड़ों को अपनी गाड़ी में जोड़ा था, वे बेमेल थे। एक छोटा, एक बड़ा।

यह गाड़ी ऊँची-नीची जगह पर ठीक से नहीं चल पाई। उसने और सोचा, पर कुछ बात न बनी।

उसने फिर और सोचा। इस बार उसकी सोच काम आई। अबकी बार दोनों टुकड़े एक आकार के थे। और उसकी गाड़ी चल पड़ी। इस तरह उसने पहिया बना लिया।
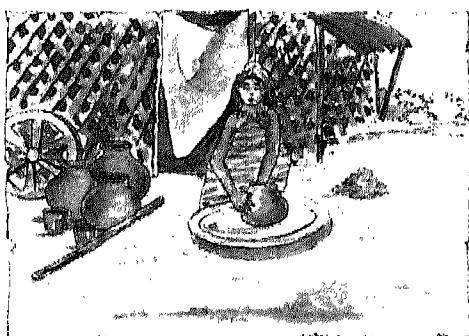
वाहनों के साथ-साथ उसने पहिए का उपयोग मिट्टी के बरतन बनाने में भी करना सीखा।

धीरे-धीरे मनुष्य ने पहिए को आवश्यकता के साथ नए नए रूप दिए। इस तरह अनेक वाहन बन गए।
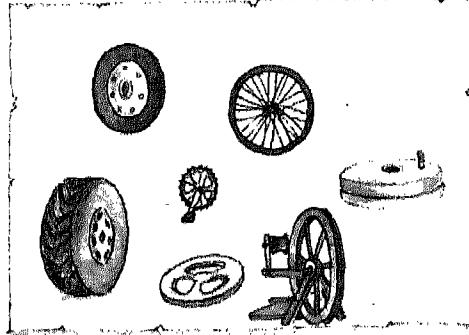
अब तो वाहनों में तरह तरह के पहिए, जैसे, स्टील, रबर आदि के लगने लगे हैं।

आज पहिया वाहनों में ही काम नहीं आ रहा है। इसका उपयोग कई और तरह के कार्यों में हो रहा है।

उसे घिरनी (पुली) के रूप में कुएँ से पानी खींचने के लिए प्रयोग किया जाता है। इससे पानी खींचने में आसानी हो जाती है।
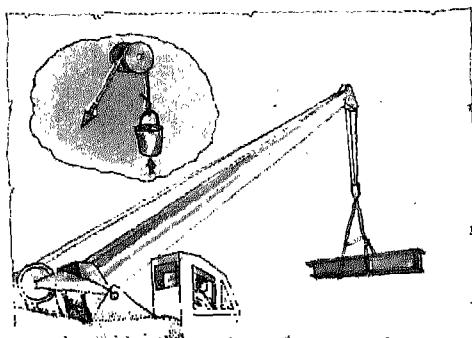
आज मनुष्य के बनाए इस पहिए को पुली (घिरनी) के रूप में बड़ी-बड़ी क्रेनों में भी लगाया जाता है। इसकी सहायता से भारी सामान आसानी से उठाया जा सकता है।
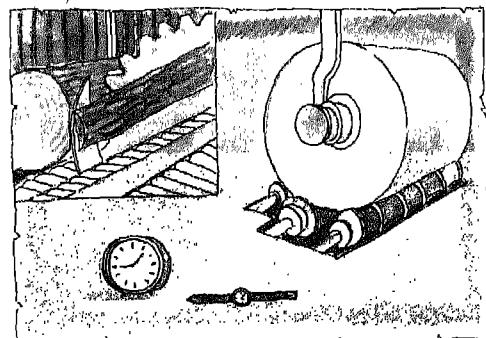
आज बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी मशीनों में पहिया किसी न किसी रूप में काम आ रहा है।

और तो और चाहे पवन चक्की हो, चाहे पानी से बिजली बनानी हो, पहिए का होना जरूरी है।

देखा आपने, है न पहिया बड़े काम की चीज़ !

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. चार पहिए वाले कुछ वाहनों के नाम बताइए।
2. अपने पहियों वाले खिलौनों के नाम बताइए।
3. पहले मनुष्य एक जगह से दूसरी जगह कैसे जाता था?
4. पहले मनुष्य बहुत भारी सामान एक जगह से दूसरी जगह कैसे ले जाता था ?

II लिखित

1. इन वाहनों में लकड़ी का पहिया किसमें होता है –

   क. साइकिल   ग. कार

   ख. बैलगाड़ी   घ. रेलगाड़ी   (   )

2. निम्नलिखित में से किसमें पहिए का उपयोग नहीं होता –

   क. क्रेन में लगी घिरनी   ग. पवनचक्की

   ख. ऊँटगाड़ी   घ. हवा भरने का पंप   (   )

3. ऐसी दो मशीनों के नाम बताइए जिन्हें चलाने के लिए पहिए का प्रयोग किया जाता है।
4. लकड़ी के पहिए वाले चार वाहनों के नाम लिखिए।

III कुछ करने के लिए

1. अपने घर के आस-पास चलने वाले वाहनों को ध्यान से देखिए, उनमें से किन्हीं तीन के चित्र बनाइए। रंग भी भरिए।
2. पहिए की कहानी घर में सभी को सुनाइए।

इकाई पाँच

कितनी दूर कितनी पास

अध्यापक के लिए संकेत

यह इकाई क्यों

इस विषय द्वारा बच्चे के पर्यावरण से संबंधित अनुभवों को धीरे-धीरे विस्तृत करना ज़रूरी है। इसके लिए उसे क्रमिक रूप से अनुभव दिए जाने चाहिएं। संचार के साधनों की जानकारी द्वारा हमें इस क्रम को आगे बढ़ाने की आवश्यक्ता है। इसके साथ-साथ ब्रह्माण्ड में पृथ्वी और रोज दिखने वाले आकाशीय पिण्ड जैसे सूरज, चाँद, तारे, जिनका प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है, के बारे में भी जानकारी देना आवश्यक है।

इस इकाई के शिक्षण-अधिगम के बाद बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह :

- संचार के क्षेत्र में नवीनतम आविष्कारों के बारे में जानकारी प्राप्त करें और जीवन में उसका उपयोग करें।
- पत्र पर सही पता लिखने का महत्त्व समझ सकें।
- आकाशीय पिण्डों को पहचान सकें और दैनिक जीवन में उनके प्रभाव को समझ सकें।

इस इकाई में है क्या

इस इकाई में दो पाठ हैं, 'संचार के साधन' एवं 'पृथ्वी, सूरज, चाँद, तारे कितने प्यारे'। दोनों पाठों में चित्रों और दैनिक जीवन से जुड़े अनुभवों/उदाहरणों से विषयवस्तु को आगे बढ़ाया गया है।

आपकी भूमिका क्या है

- 'संचार के साधन' पाठ के अध्ययन के समय बच्चों को पत्रों के प्रकार, टिकट, तार का फार्म, विदेश भेजने वाले पत्र कक्षा में दिखाएं। अगर संभव हो तो बच्चों को डाकघर भी ले जाएं।
- समाचार पत्रों से संबंधित क्रिया-कलाप करवाएं। यदि ज़रूरत पड़े तो बच्चों से अपने घरों से समाचार-पत्र लाने को भी कहा जा सकता है ।
- बच्चों से उनके स्वयं के अनुभव सुनें। जैसे पत्र लिखने की क्रिया, दूरभाष का उपयोग, दूरदर्शन के कार्यक्रम आदि।

- सभी बच्चों से आकाशीय पिण्डों के बारे में उनके अनुभव अवश्य पूछें। चंद्रमा के बदलते रूप के बारे में अवलोकन करने के लिए कहें। सूर्य को नंगी आँखों से देखने के लिए मना करें।
- रात्री में तारों को देखने के बाद उनके अनुभव पूछें। सप्त-ऋषि तारा मण्डल देखने के लिए प्रोत्साहित करें।

पाठ 16

संचार के साधन

चित्र में दिए गए व्यक्ति को पहचानिए।

यह हमारी कैसे सहायता करता है ?

हाँ, डाकिया हमारे लिए, हमारे मित्रों, रिश्तेदारों के संदेश लाता है। हमारे संदेश भी उन तक पहुँचाता है।

आइए, अब पता लगाएं कि हमारे संदेश हमारे मित्रों और रिश्तेदारों तक कैसे पहुँचते हैं।

हम अपना संदेश पोस्टकार्ड या अन्तरदेशीय-पत्र पर लिखते हैं। कागज पर लिखकर लिफ़ाफ़े में भी डाल देते हैं। इन सब पर बाहर दी गई जगह पर पाने वाले का नाम और पता लिखते हैं।
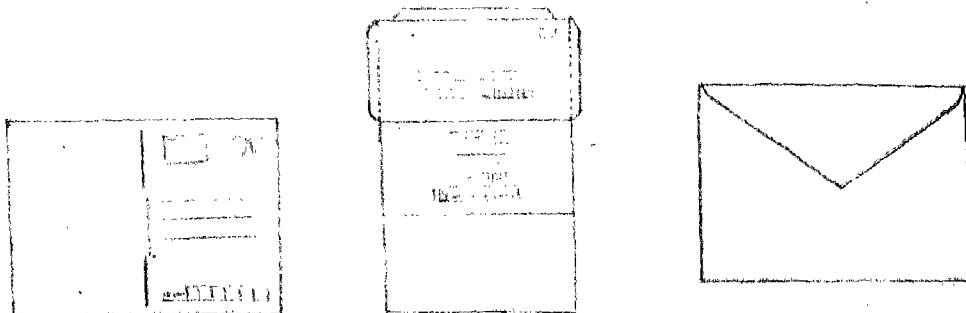
पता, हमें पूरा और ध्यान से साफ़-साफ़ लिखना होता है। जैसे–

पाने वाले का नाम ....

घर का पता ....

डाकघर का नाम ....

शहर/गाँव का नाम ....

जिला ....

राज्य का नाम ....

पिनकोड | | | | | | |

पते में पिन-कोड लिखना बहुत जरूरी होता है। इसकी सहायता से हमारे पत्र ठीक समय पर ठीक जगह पहुँच जाते हैं। हमारे देश में यह छह अंकों में होता है।

पत्र लिखने के बाद हम पत्र को पत्र-पेटी (लेटर-बॉक्स) में डाल देते हैं।
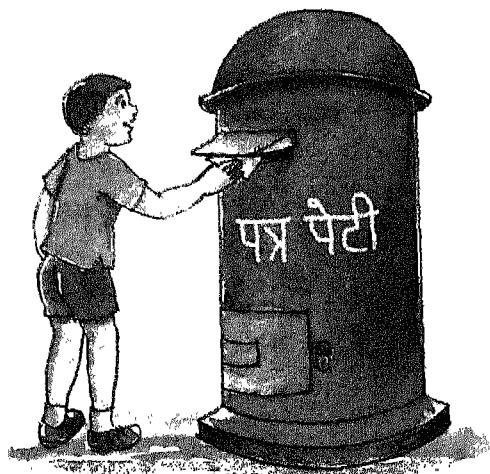
निश्चित समय पर डाकिया पत्र-पेटी से पत्र निकाल कर डाकघर ले जाता है। वहाँ उनकी छँटाई होती है।

छँटाई के बाद बड़े-बड़े थैलों में डालकर उन्हें बस, रेल या हवाई जहाज द्वारा दूसरी जगह भेज दिया जाता है। दूसरी जगह के डाकघर में उनको शहर/गाँव में पतों के अनुसार छाँटा जाता है और डाकिया उन्हें दिए गए पते पर पहुँचा देता है। इस तरह एक लंबी यात्रा के बाद पत्र पाने वाले के पास पहुँचता है।
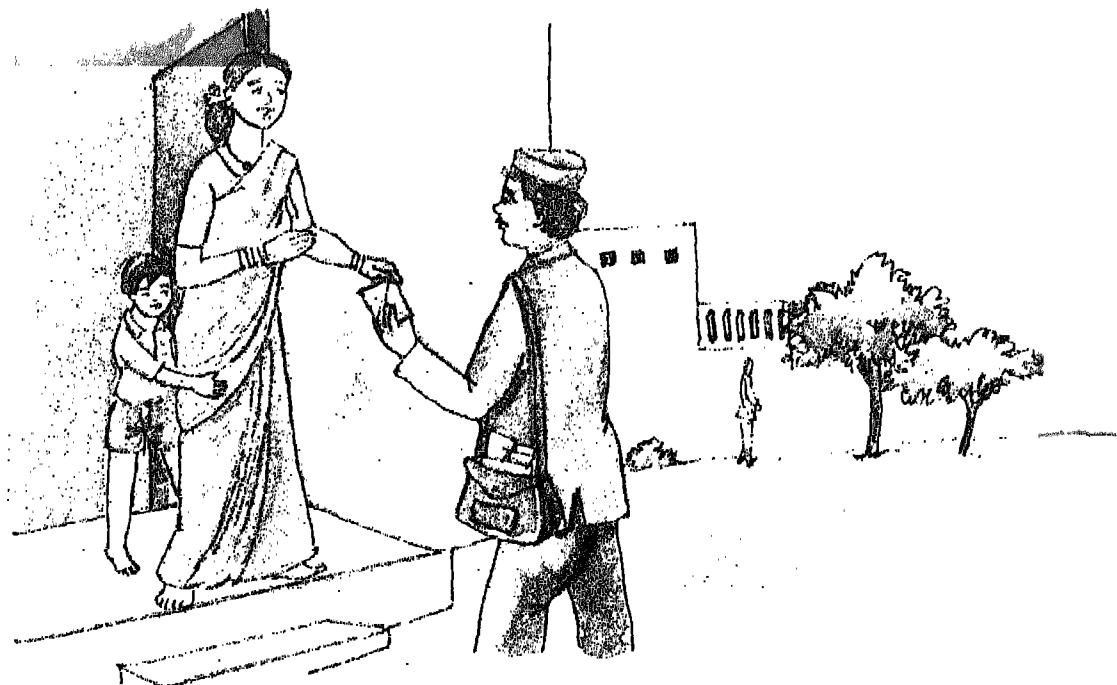
चाहे पोस्टकार्ड हो, चाहे अन्तरदेशीय-पत्र या लिफ़ाफ़ा, ये सभी हम डाकघर से खरीदते हैं। डाक-टिकट भी यहीं पर मिलते हैं। ये डाक-टिकट हम किसी भी लिफ़ाफ़े पर लगा कर पत्र भेज सकते हैं। विदेशों में भेजने के लिए ये पत्र अलग प्रकार के होते हैं। पत्र एक या दो दिन में देश के विभिन्न भागों में पहुँच जाता है।

यदि हमें संदेश बहुत जल्दी पहुँचाना हो तो हम क्या करते हैं ?

हम अपना संदेश तार द्वारा भेज सकते हैं। तार द्वारा संदेश भेजने के लिए डाकघर में एक प्रारूप (फार्म) मिलता है। इसमें संदेश कम शब्दों में लिखना होता है। इसमें भेजने वाले व प्राप्त करने वाले का नाम और पता भी लिखते हैं। तार के द्वारा संदेश कुछ ही घंटों में पहुँच जाता है।

यदि संदेश और भी जल्दी भेजना हो तो हम उसे दूरभाष (टेलीफोन) द्वारा दे सकते हैं। दूरभाष (टेलीफोन) की सहायता से हम घर बैठे ही अपने मित्रों और रिश्तेदारों से बात कर सकते हैं। इस तरह हम संदेश देने के साथ-साथ संदेश ले भी सकते हैं। दूरभाष के द्वारा देश में ही नहीं, विदेशों में भी तुरंत बात की ज़ा सकती है। दूरभाष की सुविधा आज हमारे देश में सभी जगह है।
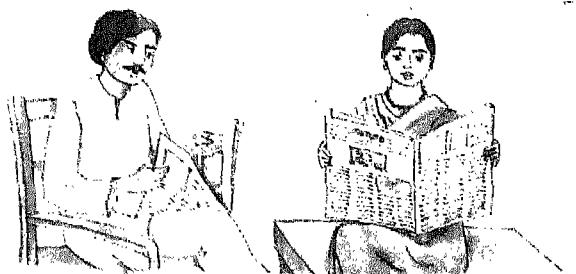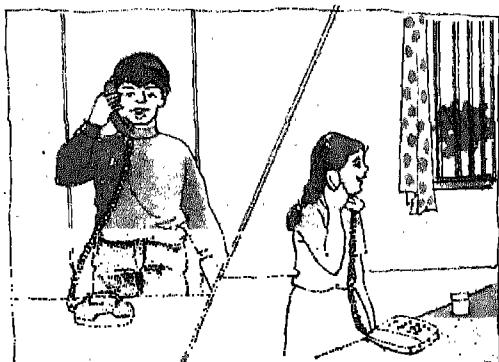
कभी-कभी कुछ समाचार एक ही समय पर बहुत से लोगों को देने जरूरी होते हैं।

ऐसे समाचार हम तक समाचार-पत्र, आकाशवाणी (रेडियो) तथा दूरदर्शन (टेलीविजन) द्वारा पहुँचते हैं।
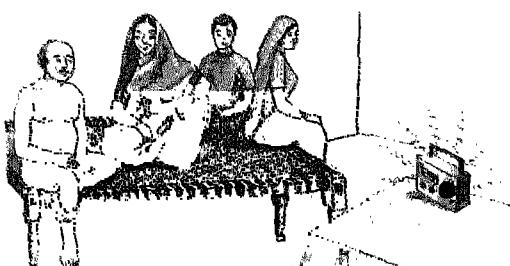
आकाशवाणी और दूरदर्शन द्‍वारा हमें घर बैठे देश-विदेश की खबरें भी मिल जाती हैं। इनके द्‍वारा बहुत से मनोरंजन के कार्यक्रम सुनने और देखने को भी मिलते हैं।
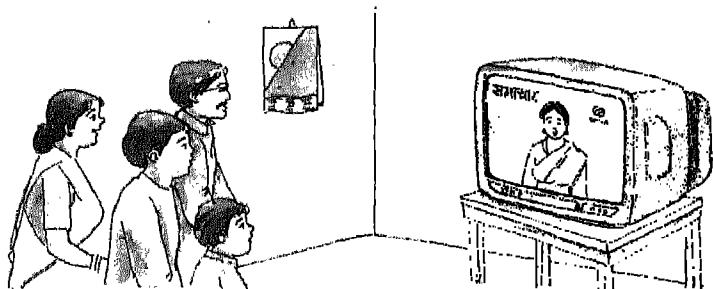
आकाशवाणी और दूरदर्शन द्‍वारा हमें और क्या-क्या जानकारी मिलती है ? सूची बनाइए :

1. ____________________ 3. ____________________

2. ____________________ 4. ____________________

अब तो हम कोई भी जानकारी अपनी इच्छा के अनुसार कभी भी प्राप्त कर सकते हैं। यह जानकारी हमें कंप्यूटर में इन्टरनेट की सहायता से प्राप्त हो सकती है।

संदेश भेजने और प्राप्त करने के इन सभी तरीकों को **संचार के साधन** कहा जाता है।

हमने क्या सीखा

I मौखिक
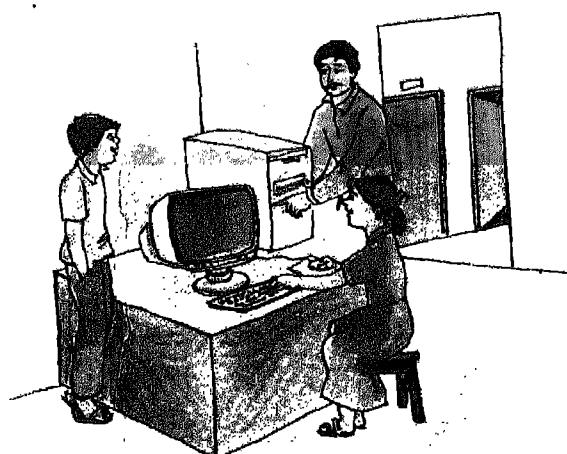
1. पत्र-पेटी हमारे किस काम आती है ?
2. आपके घर कहाँ-कहाँ से पत्र आते हैं ? नाम बताइए।
3. आप के मित्र किसी दूसरे शहर में रहते हैं। उनके पिताजी आपके गाँव में रहते हैं। वे बहुत बीमार हैं। आप अपने मित्र को कैसे शीघ्र संदेश पहुँचाएंगे ?
4. आपके घर अथवा आस-पड़ोस में कौन-सा समाचार-पत्र आता है ?
5. आकाशवाणी पर समाचारों के अतिरिक्त और क्या कार्यक्रम आते हैं ?
6. दूरदर्शन पर कौन-कौन से कार्यक्रम आते हैं ?
7. आकाशवाणी और दूरदर्शन में क्या अन्तर है ?

II लिखित

1. (पोस्टकार्ड, आकाशवाणी (रेडियो), दूरदर्शन (टी.वी.), समाचार-पत्र, तार, लिफ़ाफ़ा) उपरोक्त साधनों में से चुनकर नीचे लिखी सूची बनाइए :

व्यक्तिगत संदेश के साधन	**समूह को एक साथ दिए जाने वाले संदेश के साधन**
क.	क.
ख.	ख.
ग.	ग.

2. संदेश पहुँचाने के लिए लगे समय के आधार पर निम्न को बढ़ते क्रम में लिखिए :

तार पोस्टकार्ड दूरभाष

1. ....
2. ....
3. ....

3. रिक्त स्थानों में नीचे दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर भरिए :
   फार्म, दूरभाष, इन्टरनेट, टेलीविजन, समाचार-पत्र।

   क. तार भेजने के लिए हमें .... भरना पड़ता है।

   ख. हम घर बैठे-बैठे .... पर क्रिकेट-मैच देखते हैं।

   ग. दुनिया के किसी भी कोने में हम .... द्वारा बात कर सकते हैं।

   घ. खबरें जानने के लिए हम प्रतिदिन .... पढ़ते हैं।

   ड़. अपनी इच्छा का समाचार हम .... से प्राप्त कर सकते हैं।

4. पत्र हम तक कैसे पहुँचते हैं ?
5. हम तार कब भेजते हैं ?

III कुछ करने के लिए

1. नीचे दिए गए पत्र पर अपना पूरा पता लिखिए :
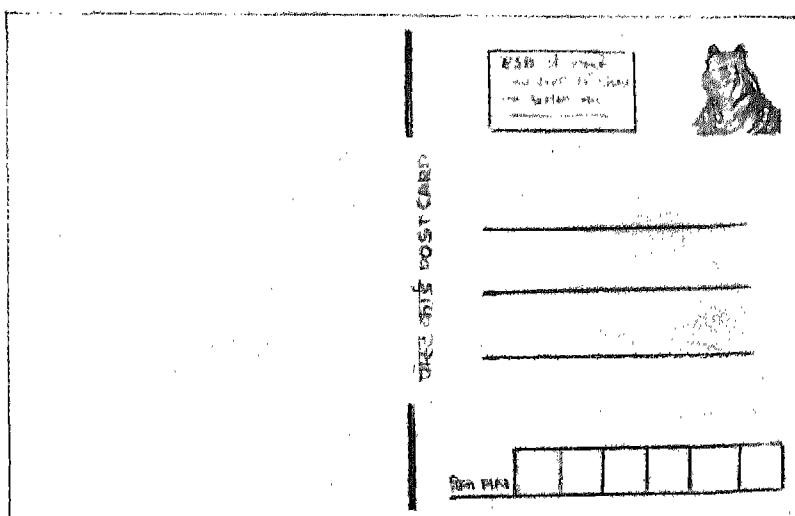
2. अपने घर में आने वाले पत्रों से डाकटिकट निकालकर अपनी पुस्तिका में चिपकाइए ।
3. डाकघर में निम्नलिखित का मूल्य पता कीजिए :

   1. पोस्टकार्ड 2. लिफ़ाफ़ा 3. अन्तरदेशीय-पत्र।

4. संचार के विभिन्न साधनों के चित्र इकट्ठे करिए। उन्हें कॉपी में चिपकाइए। उनके नीचे उनका नाम भी लिखिए।
5. अपने मित्र को एक पत्र लिखिए। पता लिख कर उसे पत्र-पेटी में डालिए।

पाठ 17

पृथ्वी, सूरज, चाँद, तारे कितने प्यारे

हम सब पृथ्वी पर रहते हैं। हमारी तरह और बहुत से लोग, जीव-जंतु तथा पेड़-पौधे भी पृथ्वी पर रहते हैं। इसलिए पृथ्वी को हम अपना घर कहते हैं। पृथ्वी लगभग गेंद की तरह गोल है।

कुछ लोगों ने चाँद से पृथ्वी की तस्वीरें (फोटो) भी ली हैं। उनमें से एक नीचे दी गई है। इस चित्र में पृथ्वी पूरी गोलाई में दिखाई दे रही है।

बहुत बड़ी होने के कारण इसकी गोलाई हमें दिखाई नहीं पड़ती। किसी भी जगह से हम इसके बहुत छोटे-से भाग को ही देख पाते हैं।

पृथ्वी की सतह के दो भाग हैं– जल और भूमि। जल का भाग भूमि के भाग से बहुत बड़ा है। भूमि का सारा भाग भी एक सा नहीं है। इस पर कहीं मैदान हैं तो कहीं पहाड़।

सारी पृथ्वी वायु से घिरी है। इसे वायुमंडल कहते हैं। भूमि, जल एवं वायु के बिना पृथ्वी पर कोई भी जीवित नहीं रह सकता।

आप दिन में और रात में आसमान की तरफ भी अवश्य देखते होंगे।

आसमान में दिन के समय और रात में क्या-क्या दिखाई देता है ?

दिन में	**रात में**
____________	____________
____________	____________
____________	____________

जरा सोचो, अगर सूरज दिखाई नहीं दे तो कैसा लगेगा ?

बरसात के दिनों में आपने देखा होगा कि कभी-कभी बादल छा जाने से सूरज दिखाई नहीं पड़ता। उन दिनों हमें सूरज का प्रकाश पूरी तरह नहीं मिलता।

सुबह-सुबह उगते सूरज को देखिए। कैसा दिखाई पड़ता है ?

क्या आपने सुबह, दोपहर और शाम के समय सूरज की गरमी महसूस की है ? ऐसा एक बार फिर महसूस करके देखिए। आप महसूस करेंगे कि दोपहर के समय सबसे अधिक गरमी होती है।

सूरज हमारे लिए बहुत जरूरी है। इससे हमें रोशनी और गरमी दोनों मिलती हैं। सरदी के दिनों में तो सूरज की गरमी सबको बहुत ही अच्छी लगती है।

हमारी तरह सूरज का प्रकाश पेड़-पौधों के लिए भी ज़रूरी है।

सूरज की गरमी के और क्या-क्या लाभ हैं ?

____

____

____

सूरज पृथ्वी से बहुत दूर है। इसलिए यह हमें छोटा दिखाई पड़ता है। वास्तव में सूरज पृथ्वी से बहुत बड़ा है।

रात को आसमान में हमें तारे और चंद्रमा दिखाई देते हैं। पृथ्वी की तरह चंद्रमा को भी सूरज से ही प्रकाश मिलता है।

क्या हम चंद्रमा रोज़ देख सकते हैं ? जिन दिनों हमें चंद्रमा दिखाई देता है वह एक-सा नहीं होता। इस का रूप बदलता रहता है। नीचे चित्र में इसके कुछ रूप दिए गए हैं।

इसके बदलते रूपों को आप आसमान में देखिए। अपनी अध्यापिका तथा बड़ों से इस पर चर्चा करें।

पूरा चंद्रमा कब दिखाई पड़ता है ?

जिस दिन पूरा चंद्रमा दिखाई पड़ता है उस दिन को हम पूर्णिमा कहते हैं। जिस दिन चंद्रमा बिलकुल नहीं दिखाई देता, उसे अमावस्या कहते हैं।

चंद्रमा के साथ-साथ रात में आसमान में बड़ी संख्या में तारे टिमटिमाते नज़र आते हैं। ये सब तारे पृथ्वी से बहुत दूर हैं। सूरज ही एक ऐसा तारा है जो पृथ्वी के सबसे पास है।

रात को ध्यान से आसमान को फिर से देखिए। आप पाएंगे कि कुछ तारे कम चमकते हैं और कुछ अधिक। कुछ तारे अलग-अलग दिखाई देते हैं और कुछ समूह में।
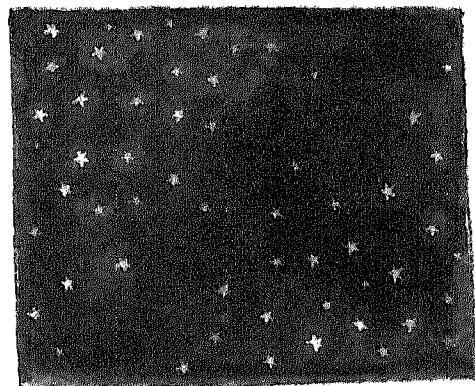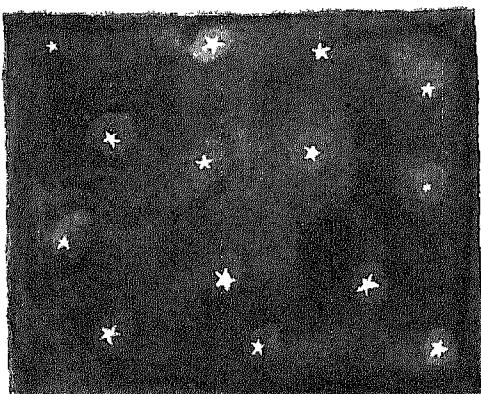
आसमान में आपने सात तारों का एक समूह भी देखा होगा। इसे सप्त-ऋषि तारामंडल कहते हैं। अगर उत्तर दिशा में देखोगे तो एक तारा हमेशा एक ही जगह चमकता हुआ दिखाई देगा। इस तारे को ध्रुव तारा कहते हैं।
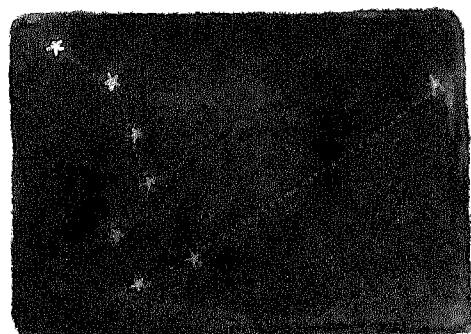
हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. अगर दिन में सूरज नहीं निकले तो कैसा लगेगा ?
2. पूरा चंद्रमा कब दिखाई पड़ता है ?
3. सात तारों के समूह को क्या कहते हैं ?
4. पृथ्वी का आकार कैसा है ?

II लिखित

1. सूरज से होनेवाले कोई दो लाभ लिखिए।
2. चंद्रमा को प्रकाश कहाँ से मिलता है ?
3. पूर्णिमा की रात को चंद्रमा कैसा दिखता है ?
4. पृथ्वी के दो भाग कौन-से हैं ?
5. सही उत्तर खाली स्थानों में भरिए :

क. सबसे बड़ा क्या है।

i. सूरज
ii. चंद्रमा
iii. पृथ्वी ( )

ख. पूर्णिमा की रात को चंद्रमा दिखता है

i. पूरा
ii. आधा
iii. एक चौथाई ( )

6. खाली स्थान भरिए :

क. पृथ्वी पर भूमि और जल के अलावा .... भी होती है।
ख. पृथ्वी .... से छोटी है।
ग. उत्तर दिशा में .... तारा दिखाई देता है।

III कुछ करने के लिए

1. चंद्रमा और तारों का चित्र अपनी कॉपी में बनाइए।
2. चंद्रमा के विभिन्न रूपों का चित्र बनाइए।
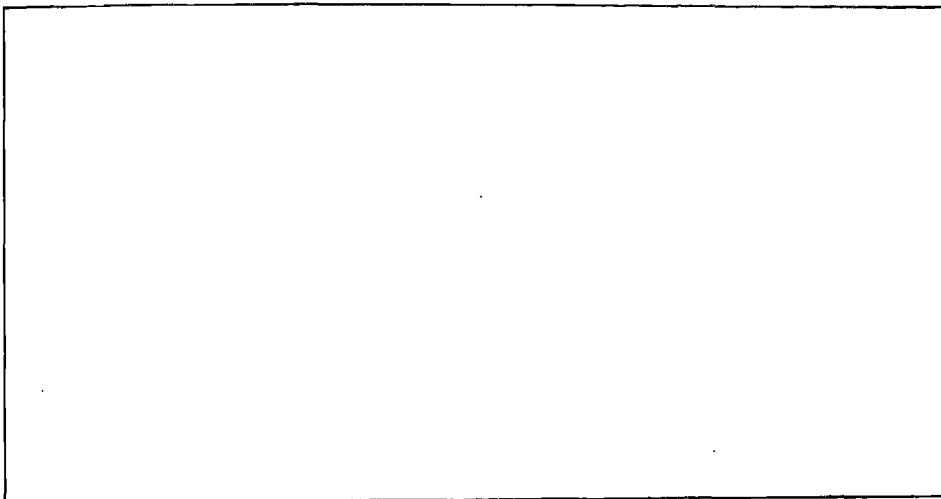
इकाई छह

अनेकता में एकता

अध्यापक के लिए संकेत

यह इकाई क्यों

'हम' का आभास अब अप्रत्यक्ष रूप से देश से जोड़ने की जरूरत है, ताकि बच्चे को देश में विस्तृत भिन्नताओं का अनुभव दिया जा सके। इसके लिए मौसम का परिचय और सांस्कृतिक भिन्नताओं की जानकारी देना और लोगों के जीवन से उनका संबंध बताना जरूरी है।

इस इकाई के शिक्षण-अधिगम के बाद बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह :

- देश में मनाए जाने वाले तीन राष्ट्रीय त्योहारों तथा विभिन्न त्योहारों के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- त्योहारों का जीवन में महत्त्व समझ सकेंगे।
- मौसम और लोगों के पहनावे का संबंध समझ सकेंगे।
- त्योहारों के माध्यम से राष्ट्रीय प्रेम भावना विकसित करेंगे और उसकी सराहना करेंगे।

इस इकाई में है क्या

इस इकाई में दो पाठ हैं – 'हमारे त्योहार' और 'मौसम और हम'। बच्चों को देश के राष्ट्रीय त्योहारों के साथ-साथ अन्य त्योहारों के बारे में भी जानना ज़रूरी है। इसके लिए कुछ त्योहारों को चित्रों एवं बच्चे के अनुभवों से जोड़ते हुए विषयवस्तु दी गई है। स्थानीय परिवेश, जैसे मौसम का हमारे पहनावे पर क्या प्रभाव पड़ता है – सामूहिक एवं व्यक्तिगत क्रियाकलापों के द्वारा दिया गया है। बाद में अध्यापक द्वारा विषयवस्तु का सामान्यीयकरण करवाया गया है।

आपकी भूमिका क्या है

- बच्चा जो भी त्योहार घर में मनाता है उससे जुड़े उसके अनुभव अवश्य सुनिए। इस पाठ के शिक्षण अधिगम में इस बात का प्रमुख ध्यान रखना है कि बच्चे को त्योहार मनाने की पूरी प्रक्रिया सुनाने का मौका दें जिससे बच्चे आपस में सभी त्योहारों के बारे में जान सकें।

- 'हमारे त्योहार' पाठ में दिए गए त्योहारों की चर्चा उन त्योहारों के आने पर अवश्य करें। इसके साथ-साथ बच्चों ने क्या खाया, क्या पहना आदि जैसी बातें अवश्य पूछिए।
- मौसम के अनुरूप बच्चे जो कपड़े पहनें उनसे पूछें कि वो कैसा महसूस करते हैं ?
- प्रत्येक बच्चे से पाठ में दी गई तालिका अवश्य भरवाइए। उसे प्रोत्साहित करें कि उसमें पूछे गए अपने अनुभव बताए। सब बच्चों द्वारा बताए गए अनुभवों की सहायता से आप एक तालिका और बना सकते हैं जिससे उनको स्थानीय मौसम की जानकारी मिलेगी।
- बच्चों को व्यवहारिक ज्ञान मौसम के अनुसार देते रहें।
- इस पाठ की विषयवस्तु एक उदाहरण है। एक ही दिन में बदलते मौसम पर भी बातचीत करें।

पाठ 18

हमारे त्योहार

आज 15 अगस्त का दिन है। आज सब जगह छुट्टी है पर हम सुबह सात बजे पाठशाला गए थे। हमारी पाठशाला के प्रधानाध्यापक ने राष्ट्रीय-झंडा फहराया और साथ ही हम सबने राष्ट्र-गान भी गाया। देश-भक्ति के गीत भी गाए।
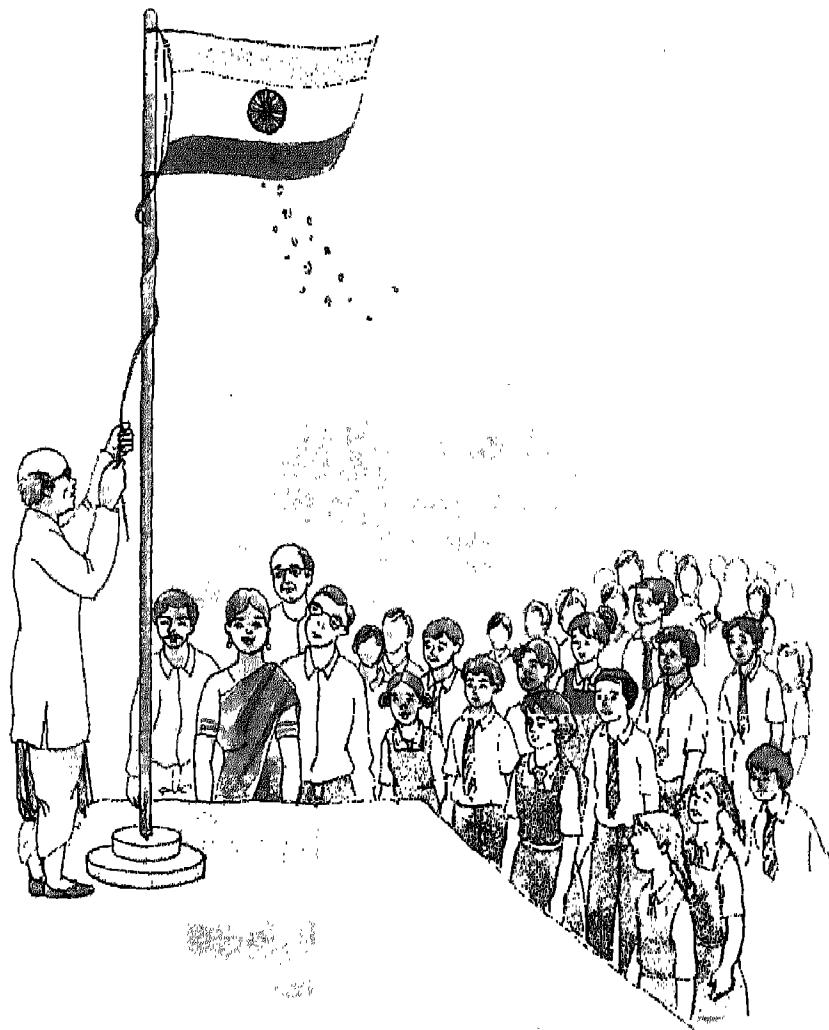
हर साल 15 अगस्त को दिल्ली के लाल किले पर प्रधान-मंत्री झंडा फहराते हैं। लाल किला लाल पत्थरों का बना है। 15 अगस्त 1947 के दिन हमारे देश को आज़ादी मिली थी। इसीलिए इस दिन को स्वतंत्रता दिवस कहते हैं।

इस दिन को हम राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाते हैं। हमारे दो और राष्ट्रीय त्योहार हैं – 'गणतंत्र दिवस' और 'गाँधी-जयंती'।

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन दिल्ली में परेड निकलती है। इस परेड में तीनों सेनाओं के हथियार-बंद सैनिकों की टुकड़ियाँ, देश के कोने-कोने से आए छात्र-छात्राओं के दल भाग लेते हैं। तरह-तरह के वायुयान, तोपें, टैंक भी परेड का भाग होते हैं।
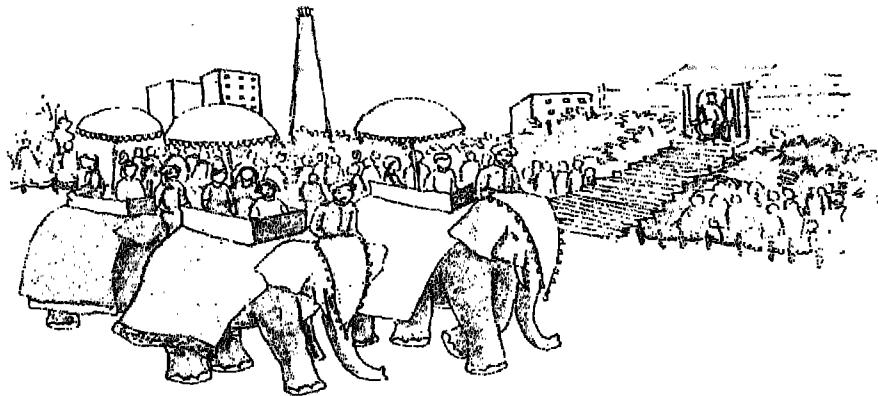
परेड के अंत में सभी राज्यों की झांकियाँ होती हैं। देश के बहादुर बच्चे भी हाथी पर सवार होकर परेड में भाग लेते हैं। हमारे राष्ट्रपति इस शानदार परेड की सलामी लेते हैं।

2 अक्तूबर को गाँधी जयंती मनाई जाती है। इस दिन पूरा देश राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को याद करता है। जगह-जगह सर्वधर्म प्रार्थनाएँ होती हैं। महात्मा गाँधी को सब प्यार से 'बापू' कहते हैं। बापू की समाधि का नाम राजघाट है।
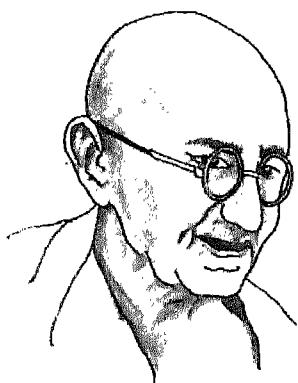
इन तीन राष्ट्रीय त्योहारों के अलावा हम बहुत-से त्योहार और भी मनाते है। आइए, इनमें से कुछ के बारे में जानें।

हमारा एक बड़ा त्योहार है 'होली'। इसे रंगों का त्योहार कहा जाता है।

इस दिन लोग एक दूसरे पर रंग डालते हैं, गुलाल लगाते हैं और गले मिलते हैं। होली के त्योहार पर फ़सल पकने की खुशी भी मनाई जाती है।

फ़सल पकने की खुशी में जगह-जगह और भी त्योहार मनाए जाते हैं।
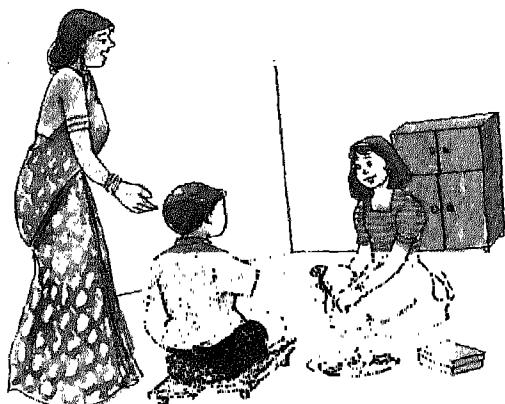
भाई-बहन के प्यार को बढ़ाने वाला भी एक त्योहार है। जानते हो कौन-सा? 'रक्षाबंधन'।

इस दिन बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती हैं।

'दशहरा' और 'दीपावली' ऐसे त्योहार हैं जो हमारे देश में सभी जगह मनाए जाते हैं। दशहरे का त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसीलिए इसे विजयादशमी भी कहते हैं। कई जगह इन दिनों दुर्गा-पूजा भी होती है।

दीपावली हमारा बहुत बड़ा त्योहार है। दीपावली से पहले घरों की सफ़ाई की जाती है। इस दिन रात को घरों में दीए जलाकर रौशनी की जाती है और लक्ष्मी पूजन होता है। लोग नए कपड़े पहनते हैं। एक-दूसरे के घर मिठाई देने जाते हैं। इस दिन को व्यापारी नए साल के रूप में भी मनाते हैं।
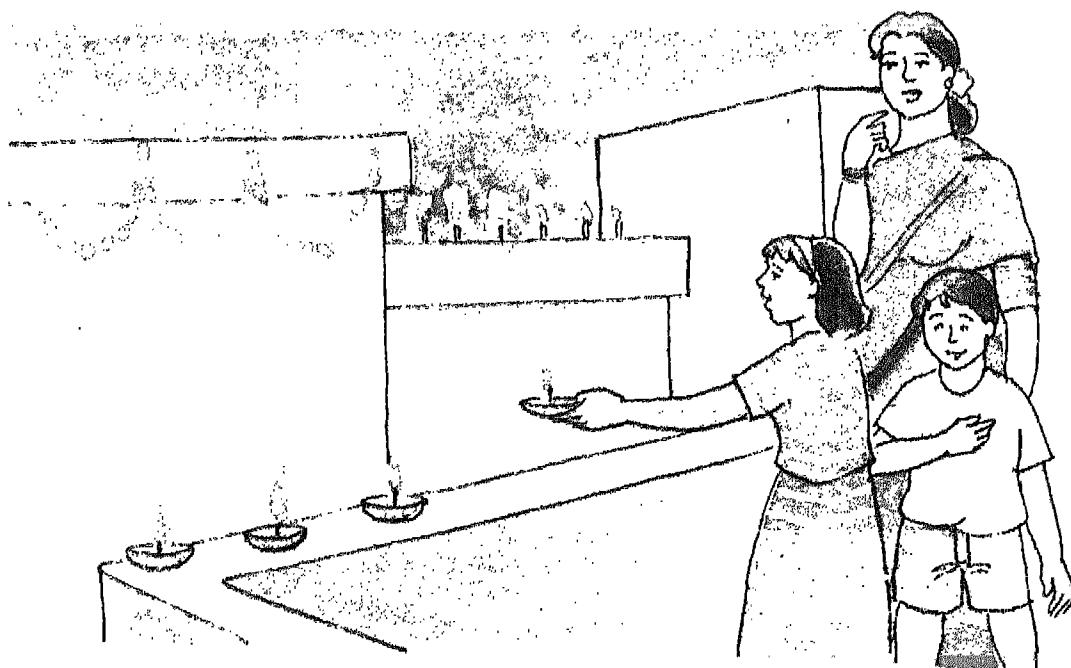
'ईद' का त्योहार भी हमारे देश में बड़े हर्ष और उल्लास से मनाया जाता है। इस दिन लोग नए-नए कपड़े पहनते हैं, ईदगाह जाते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। 'नमाज़' एक तरह की प्रार्थना है। नमाज़ पढ़ने के बाद लोग एक-दूसरे से गले मिलते हैं। 'ईद मुबारक' कहते हैं। ईद के दिन घर के बड़े लोग परिवार के अन्य लोगों को ईदी देते हैं। इस दिन मीठी सिवइयाँ भी खिलाते हैं।

हर साल 25 दिसंबर को हम 'क्रिसमस' का त्योहार मनाते हैं। यह त्योहार 'ईसा मसीह' के जन्म-दिन के रूप में मनाया जाता है। इसे 'बड़ा दिन' भी कहते हैं। इस दिन लोग अपने घरों को सजाते हैं और क्रिसमस ट्री लगाते हैं। एँक-दूसरे को उपहार भी देते हैं।

प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन 'गुरु नानक जी' का जन्म दिन मनाया जाता है। इसे गुरुपर्व कहा जाता है। इस दिन लोग गुरुद्वारे में जाते हैं। वहाँ पाठ और 'शबद' कीर्तन होता है। गुरुद्वारों में 'लंगर' भी चलता है जिसमें लोग मिलकर खाते हैं।

इन सब त्योहारों के साथ-साथ हमारे देश में और भी बहुत सारे त्योहार मनाए जाते हैं। इसीलिए हमारे देश को त्योहारों का देश कहा जाता है। हम इन सभी त्योहारों को मिल-जुलकर बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। नए-नए कपड़े पहनते हैं। एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, मिठाई बाँटते हैं और खूब खुशियाँ मनाते हैं।

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. आपके परिवार में कौन-कौन से त्योहार मनाए जाते हैं ?
2. राष्ट्रीय त्योहार कौन-कौन से हैं ?
3. स्वतंत्रता दिवस किस दिन मनाया जाता है ?
4. हम त्योहारों का इंतजार क्यों करते हैं ?

II लिखित

रिक्त स्थान भरिए :

1. उन त्योहारों के नाम लिखिए जब :

    क. बहन भाई की कलाई पर राखी बांधती है ....

    ख. दीए जलाकर रौशनी की जाती है ....

    ग. सेवइयाँ खिलाई जाती हैं ....

    घ. पेड़ को उपहारों से सजाया जाता है ....

    ड. लाल किले पर प्रधान-मंत्री झंडा फहराते हैं ....

2. त्योहारों को मनाने के लिए अधिकतर लोग नीचे लिखे काम करते हैं। इनमें से जो काम आपके घर में किए जाते हैं, उन पर (√) चिह्न लगाइए :

    क. घर की सफ़ाई करना ( )

    ख. घर की सजावट करना ( )

    ग. रात के समय रौशनी करना ( )

    घ. नए कपड़े पहनना ( )

    ड़. पकवान और मिठाइयाँ बनाना ( )

    च. मित्रों और रिश्तेदारों के साथ मिलना-जुलना ( )

    छ. नाचना, गाना-बजाना ( )

    ज. खेल-तमाशे देखना ( )

    झ. प्रार्थना करना ( )

3. नीचे दी गई तिथियों पर मनाए जाने वाले त्योहारों के नाम लिखिए :

   क. 26 जनवरी ____________________

   ख. 15 अगस्त ____________________

   ग. 2 अक्तूबर ____________________

   घ. 25 दिसंबर ____________________

4 सही जोड़े बनाइए :

क. गुरुनानक जयंती	राष्ट्रीय त्योहार
ख. स्वतंत्रता दिवस	रंगों का त्योहार
ग. होली	भाई बहन का त्योहार
घ. रक्षाबंधन	महापुरुष का जन्मदिन

5 आपके विद्यालय में गणतंत्र दिवस मनाया जाता होगा। इस बार उस दिवस को मनाने के लिए निम्नलिखित कार्यों में से क्या-क्या किया गया, उस पर (√) चिह्न लगाइए :

   क. राष्ट्रीय गान गाया गया। ( )

   ख. प्रभात फेरी निकाली गई। ( )

   ग. राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। ( )

   घ. मुख्य अतिथि को सलामी दी गई। ( )

   ङ. परेड की गई। ( )

   च. छात्रों द्वारा भाषण दिए गए। ( )

   छ. देशभक्ति के गीत गाए गए। ( )

   ज. भारत माता की जय के नारे लगाए गए। ( )

   झ. मिठाई बाँटी गई। ( )

III कुछ करने के लिए

1. स्वतंत्रता दिवस से संबंधित चित्रों को एकत्र करके कॉपी में चिपकाइए।
2. 26 जनवरी के दिन दूरदर्शन पर दिल्ली में होने वाले कार्यक्रम को दिखाया जाता है। यदि आपने यह कार्यक्रम देखा हो तो उसके पाँच दृश्यों के नाम बताइए।
3. त्योहारों से जुड़े हुए लोक-नृत्यों का पता करें और सीखें।

पाठ 19

मौसम और हम

हम सब जानते हैं कि एक वर्ष में बारह महीने होते हैं। इन बारह महीनों के नाम भी हम जानते हैं। ये हैं – जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रेल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर, अक्तूबर, नवंबर और दिसंबर।

आइए आज हम सब मिलकर एक क्रिया करें।

नीचे एक तालिका दी गई है।

महीने का नाम **जनवरी, फरवरी........**	**मौसम** **सरदी, गरमी, बरसात**	**वस्त्र** **ऊनी, सूती, जल्दी सूखने वाले**

(**निर्देशः** हर अध्यापक इस तालिका में स्थानीय मौसम ही भरवाएंगें)

सबसे पहले हम ऐसी ही तालिका श्यामपट्ट पर बनाएंगे।

आइए अब इसमें पूछी गई बातें लिखें।

सबसे पहले 'महीने के नाम' के नीचे महीने का नाम लिखेंगे। जैसे इस महीने का नाम है 'फरवरी' और फरवरी के बाद आता है 'मार्च'। फरवरी से पहले आता है जनवरी। इसी तरह पूरे साल के महीनों के नाम इसमें लिखेंगे।

अब है मौसम की बारी। आजकल कैसा मौसम है ? 'सरदी'। 'मार्च' में भी थोड़ी 'सरदी' ही होगी। 'अप्रेल' से शुरू हो जाती है 'गरमी'।

आइए अब प्रत्येक महीने में हम कैसे कपड़े पहनते हैं वो इस तालिका में भरेंगे।

अब हर बच्चा अपनी-अपनी तालिका में पूछी गई बातें भरेगा।

आइए अब तालिका को ध्यान से देखें। इससे हमें पता चलता है कि :

- सारा साल मौसम एक-सा नहीं रहता।
- साल में कभी सरदी होती है, कभी गरमी, तो कभी बरसात।

- कभी-कभी तो कुछ जगहों पर एक दिन में ही अलग-अलग मौसम हो जाता है, जैसे सुबह में गरमी, दिन में खूब बरसात और शाम के समय फिर गरमी।

- हमारे देश में कुछ ऐसे भाग भी हैं जहाँ मौसम पूरा वर्ष लगभग एक-सा ही रहता है जैसे समुद्र के किनारे वाला भाग।

- कुछ पहाड़ी भाग ऐसे भी हैं जहाँ वर्ष के अधिकतर महीनों में मौसम ठंडा होता है। यहाँ गरमी कम पड़ती है।

- कभी हम ऊनी वस्त्र पहनते हैं तो कभी सूती।

- हम वस्त्र मौसम के अनुसार पहनते हैं।

वस्त्र हमें सरदी, गरमी और बरसात से बचाते हैं।

हमारे वस्त्र भिन्न-भिन्न कपड़े के बने होते हैं। सरदी में पहने जाने वाले वस्त्र ऊन के बने होते हैं। इसी तरह गरमी में पहने जाने वाले वस्त्र सूती कपड़े के बने होते हैं। बरसात के दिनों में ऐसे वस्त्र पहनते हैं जो भीगने पर जल्दी से सूख जाते हैं।

हमारे देश में स्त्रियों और पुरुषों के वस्त्र अलग-अलग तरह के होते हैं।

स्त्रियाँ अधिकतर साड़ी-ब्लाऊज़, सलवार-कमीज़, घाघरा-चोली और ओढ़नी पहनती हैं। लड़कियाँ ज़्यादातर फ्राक, सलवार-कमीज़, स्कर्ट-ब्लाउज़ पहनती हैं।

पुरुषों के वस्त्रों में भी बहुत भिन्नता है।

पुरुष पैंट-कमीज, धोती या लुंगी-कुरता, कुरता-पाजामा आदि पहनते हैं। कहीं-कहीं पुरुष टोपी या पगड़ी भी पहनते हैं। लड़के पैन्ट-कमीज़, निक्कर-कमीज़ पहनते हैं।

हमने क्या सीखा

I मौखिक

1. जनवरी के महीने में आपके यहाँ मौसम कैसा होता है ?
2. वस्त्र हमारे लिए क्यों जरूरी हैं ?
3. आपके और आपके पड़ोस के परिवारों की स्त्रियों का पहनावा क्या है ?
4. आपके पड़ोस में पुरुषों का पहनावा क्या है ?
5. मौसम का हमारे पहनावे पर क्या प्रभाव होता है ?

II लिखित

1. सर्दी से बचने के लिए हम कैसे वस्त्र पहनते हैं ?
2. स्त्रियों के पहनावों के नाम लिखिए।
3. मई और जून के महीनों में आप कैसे वस्त्र पहनते हैं ?
4. आपके पिताजी किस तरह के वस्त्र पहनते हैं ?
5. आपके और आपकी माताजी के पहनावे में क्या अन्तर है ?
6. अगस्त के महीने में आपके यहाँ कैसा मौसम होता है ?
7. जून और दिसंबर के महीनों में भिन्नता लिखिए।

III कुछ करने के लिए

1. दोनों चित्रों में क्या-क्या भिन्न है, बताइए :

2. अपने पड़ोस में रहने वाले पुरुष और स्त्रियों के पहनावे का चित्र बनाएं।